Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षयादर्श

अर्थात्

क्षयरोग और उसकी चिकित्सा

लेखक

पं॰ हरिशंकर शर्म्मा वैद्यराज

सम्पादक

[illegible]धावल्लभ वैद्यराज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ONLY COVER PRINTED AT THE NARSINGH PRESS CALCUTTA.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात्

क्षयरोग और उस की चिकित्सा

जिस में क्षय सम्बन्धी नवीन और प्राचीन
विचारों का सविस्तार वर्णन है ।

लेखक
पंडित हरिशंकर जी शर्म्मा वैद्यराज
हरदुआगंज ।

सम्पादक और प्रकाशक :-
वैद्यराज राधावल्लभ
सम्पादक आरोग्यसिन्धु ।

मास्टर रघुनन्दनलाल गुप्त के प्रबन्ध से
यू० पी० आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स कासगंज में
छपकर प्रकाशित हुआ ।

प्रथमवार १००० प्र० } जनवरी सन् १९१७ { मूल्य प्रति पु० ॥=)

पुस्तक का सर्वाधिकार प्रकाशक ने स्वाधीन रक्खा है ।

CHECKED 1973
R55,SHA-C
14117
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली, अभिमानियों के मान को मर्दन करने वाली कैसी घोर यातना है। इस रोग से प्रति वर्ष३० लाख मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होते हैं। बहुसंख्यक युवा बिना खिले पुष्पों के समान इस विश्व वाटिका में अपने यशरूपी सौरभ के फैलाये बिना ही चल बसते हैं। तब ही तो इसे रोगराट् कहते हैं। राज यक्ष्मा कह कर पुकारते हैं॥

इस रोग का आधिपत्य भारत वर्ष में ही नहीं किन्तु संसार में चमकते हुए अमेरिका, जापान, जर्मनी, और इंगलैंड आदि देशों में भी है। परन्तु वहां के पुरुष भारत वासियों के समान बज्रहृदय नहीं हैं जो अपने देश वासियों की अकाल मृत्युओं की ओर किञ्चिन्मात्र ध्यान न देकर घोर निद्रा में पड़े सोते रहते हों। शोक है कि महर्षियों के दिव्य ज्ञान से निकले हुए सदुपायों के विद्यमान रहते हुए भी हम कुछ भी उद्योग नहीं करते। पश्चिमीय देशों में इस रोग पर विचार करने वाली अनेक सभायें स्थापित हैं। वहां के विद्वान अपने मस्तिष्क बल से इस विषय की खोज में पूर्ण उद्योग करते हैं। प्रति वर्ष बड़े २ डाक्टर एक स्थान पर सम्मिलित हो इस महारोग के सम्बन्ध में अपना २ मत और अनुसन्धान प्रकाशित करते हैं। इस रोग पर विचार कर ने के लिये कई समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। इस रोग पर उत्तम निबन्ध लिखने वालों को हज़ारों रुपयों का इनाम दिया जाता हैं। थोड़ा ही समय व्यतीत हुआ कि अमेरिका के वाशिंगटन् शहर में क्षयरोग पर विचार करने के लिये एक महासभा हुई थी। जिस में समस्त देशों से ४५० नामी २ डाक्टर डेलीगेट बनकर पधारे थे। और इस रोग के विषय में यथा सम्भव विचार कर अपने कर्तव्य का पालन किया था। हम को अपने प्रिय वैद्य भाइयों की दशा देखकर बड़ा शोक होता है। हम लोग संसार में मान चाहते है। विदेशी चिकित्सकों को अपनी चिकित्सा के सद्गुणों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से परास्त करना चाहते हैं, संसार भरके चिकित्सकों में उच्चासन चाहते हैं, राजाश्रय चाहते हैं चाहते सब कुछ हैं परन्तु करते कुछ भी नहीं केवल अपने पूर्वज विद्यादिग्गजों की कीर्त्ति पर ही अभिमान करते हुए अकड़े जाते हैं। हे अश्विनी कुमार, आत्रेय, धन्वन्तरि आदि देवर्षि, महर्षियों के पथानुगामियो! यदि तुम संसार में कीर्त्ति चाहते हो तो संसार के सामने अपना प्रभाव दिखाइये। देशभक्ति का अञ्जन लगाकर ज्ञान रूपी नेत्रों को निर्मल बनाइये। तुम्हारा कर्तव्य है कि विदेशी डाक्टरों का अनुकरण कर इस रोग के विषय में पूर्ण विचार करो। प्राचीन ऋषियों का क्या मत है? वर्तमान संसार के डाक्टर लोगों की क्या २ सम्मतियां हैं? क्षयरोग की चिकित्सा प्रणाली क्या है? इत्यादि बातों का विचार करो। क्षय रोग के कारणों से सर्वसाधारण को परिचित करो। जिस से वे अपनी आत्मरक्षा कर सकें। रोग उत्पन्न होते ही सावधान होकर योग्य वैद्य से चिकित्सा करा सकें।

॥ क्षय रोग का नाम करण ॥

वैद्यो व्याधिमता यस्माद् व्याधेर्यत्नेन यक्ष्यते
स यक्ष्मा प्रोच्यते, लोके शब्दशास्त्र विशारदैः॥१॥
राज्ञश्चन्द्रमसो यस्मादभूदेष किलामयः
तस्मात्तं राजयक्ष्मेति प्रवदन्ति मनीषिणः॥२॥
क्रियाक्षयकरत्वाच्च क्षय इत्युच्यते बुधैः
संशोषणाद्रसादीनां शोष इत्यभिधीयते॥३॥ पु०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षयरोग के यक्ष्मा, राजयक्ष्मा, क्षय, शोष, आदि कई नाम हैं।इन नामों से ही जाना जाता हैं कि यह रोग बड़ा कठिन है।और इस का प्रादुर्भाव अति प्राचीन काल से है । तथा इस रोग में धातुओं का क्षय होता है । जिस रोग के कारण वैद्य रोगी द्वारा अधिक सत्कार पावे (यजन किया जावे) उसे शब्द शास्त्रज्ञ यक्ष्मा कहते हैं । पहले यह रोग चन्द्रमा को हुआ था इस से इस का नाम राजयक्ष्मा पड़ा । शारीरिक क्रियाओं का क्षय करता है इस से क्षय, और रसादिक धातुओं के सुखाने से शोष कहा जाता है।अंग्रेज़ी में इसे कॉन्ज़म्पशन (Consumption) अथवा (Phthisis) थाइसिस कहते हैं जिन का अर्थ भी निरन्तर क्षय करने वाला ही है । फ़ारसी में इसे दिक़ या सिल कहते हैं ।

क्षय रोग का सामान्य विवरण

जिस रोग में शारीरिक धातुओं की कमी होने से शरीर प्रति दिन निर्बल होता जावे उसे क्षय कहते हैं । यह रोग मलमूत्रादिकों के वेगों को रोकने, मैथुनादि विषयों से शारीरिक धातुओं के क्षय होने, शक्ति से विपरीत साहस करने, और विषमाशन से उत्पन्न होता है । इस रोग के पञ्जे में युवा अवस्था वाले तथा सुकुमार स्त्री पुरुष प्रायः अधिकता से फँसते हैं । जिन मनुष्यों को दिमाग़ से अधिक काम पड़ता है, अथवा जो धनिक मादक पदार्थों को सेवन करते हुए विषयासक्त रहते हैं उनको प्रायः इस रोग का शिकार बनना पड़ता है। यह रोग शनैः२ इस रीति से बढ़ता है कि रोगी को तथा उस के घर वालों को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट रूप से रोग बढ़ा हुआ मालूम नहीं पड़ता। जब रोगी चलने फिरने में अशक्त होजाता है और रोग असाध्य होकर उसे मृत्युशय्या पर सुलाना चाहता है तब कहीं इस की खबर पड़ती है। डाक्टर जी. डबल्यू, विलसन ने ठीक कहा है कि-

"Like a serpent in the grass or among stones lying in ambush for its prey; Consumption often begins to do its destroying work before it manifests itself openly."

अर्थात् अपनी शिकार की टोह में घास या पत्थर के नीचे छिपे हुए सर्प के समान क्षयरोग भी प्रगट होने से पूर्व ही (शरीर में छिपा हुआ भीतर ही भीतर) शरीर को नाश करने का काम आरम्भ कर देता है। जो मनुष्य रोग की प्रथमावस्था में ही सावधान होकर अपनी पूरी चिकित्सा कराते हैं वेही प्रायः बच जाते हैं। रक्तमांसादिकों के क्षीण होने पर कोई रोगी नहीं बचता।

क्षयरोग के सामान्य लक्षण ये हैं-रोगी को जल्दी २ जुकाम हो खांसी का ठसका बना रहे, फैफड़े निर्बल होते जावें, तथा उन में शूल या घाव हो, कन्धों या पसवाड़ों में खिचाव हो, हाथ पावों में जलन हो, बहुत खांसने पर थोड़ा कफ निकले किसी २ को कफ की अधिकता हो। कफ के साथ रुधिर की लालिमा अथवा पीव आवे, ज्वर की मन्द गर्मी तो सर्वदा बनी रहे, कभी २ ज्वर वेग से चढ़आवे, रक्तमांसादि धातु बल प्रति दिन क्षीण होते जावें। थोड़े दिन रोगी को आरामसा प्रतीत होकर फिर दौरा होने से पूर्ववत् स्थिति हो जावे। चहरे पर तो रौनक मालूम देवे किन्तु शरीर दुर्बल होता जावे। विचार शक्ति कम हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षय सम्बन्धी कुछ डाक्टरी सिद्धान्त

(१) क्षयी अथवा राजयक्ष्मा एक पुरानी बीमारी है जोकि फेफड़ों में सूक्ष्म दानों व परमाणु की स्थिति से उत्पन्न होती है। ये परमाणु गोलाकार होते हैं और कभी कभी नंगी आंख से भी देख पड़ते हैं तथा असंख्य होते हैं। यहां तक कि किसी २ रोगपीडित अंग में तौ करोडों पाये जाते हैं और इनहीं की वज़ह से इस रोग को (Tuberculosis) "ट्यूबर्क्यूलोसिस्" कहते हैं। वे कीटाणु ट्यूबर्किलस कहाते हैं। यह छोटासा पर घन जीवी कीटाणु राजक्ष्मा का प्रधान कारण समझा जाता है। यह दुष्ट घाव डाल २ कर न केवल फैंफड़े ही को शनैः शनैः नष्ठ करता है बल्कि साथ ही में "टोक्सिन्" नामी एक विषैले पदार्थ कोभी उत्पन्न करता है जो अति बिकराल चिन्हों का जन्म दायक है॥

(२) सूक्ष्म दर्शक यन्त्रों से क्षय के कीटाणु अधिकतर थूक में पाये जाते हैं वे गोल डंडियों के से स्वरूप वाले होते हैं॥

(३) क्षयी के परमाणु श्वास के साथ फैफड़ों में या भोजन के साथ आमाशय में पहुंच कर रोग उत्पन्न करते हैं।

(४) किसी व्रण द्वारा कीटाणु रुधिर में पहुंच कर क्षयरोग पैदा करते हैं।

(५) मादक पदार्थों के इस्तैमाल से या अन्य किसी दुर्गुण से निर्बल हुआ शरीर शोष कीटाणुओं की उपयुक्त भूमि है।

(६) क्षयरोगी का थूक बेपरवाही से पड़ा न रहना चाहिये। क्योंकि थूक में असंख्य कीटाणु रहते हैं जो दूसरे मनुष्यों पर आक्रमण करते हैं। थूक या कफ को सूख ने से पहले ही नष्ट कर देना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) कल कारखानो तथा अन्य बड़े २ स्थानों में थूक दान रखदैने चाहिये जिस में ही सब लोग थूकें और वह थूक जला दिया जावे। क्षयरोगी एक २ जेबी थूक दान रक्खें। और जरूरत के समय उस में थूक कर जेब में रखलें और पीछे साफ़ करडालें।

(८) पशुओं को भी क्षयरोग होजाता है वे भी प्रायः क्षय-रोगियों के थूक चाटने से बीमार हो जाते हैं। इस से थूकदानों को हिफाजत से रक्खो।

(९) क्षयपीडित गाय भैंसों के दूधपीने से क्षयरोग होजाता है। इसलिये दुग्ध को परीक्षा करके काम में लाना चाहिये।

(१०) क्षयरोग संक्रामक है तथा पुश्तैनी है।

(११) कच्चे दुग्ध में क्षय के असंख्य कीटाणु रहते हैं दुग्ध को औटा कर पीना चाहिये।

(१२) बहुत से ऐसे रोग हैं जिन से शरीर दुर्बल हो जाता है और पीछे उस में कीटाणु प्रवेश कर जाते हैं, जैसे न्यूमोनिया, चेचक, खसरा, खांसी, आतशक।

(१३) कुछ ऐसे पेशे हैं जिन से क्षय पैदा होता है जैसे छपाई सिलाई, पत्थर, लोहे उठाने का काम, पिसाई, हलवाईगीरी, कल कारखानों में धूल का काम।

(१४) राजयक्ष्मा के प्रधान लक्षण, खांसी कफ, मन्दज्वर, श्वास लेने में तकलीफ़, हृदय में दर्द, रात्रिमें पसीना, भूख की कमी, रुधिर, वमन, और क्षीणता है।

(१५) क्षयरोग की कई क़िस्में हैं जैसे कंठ की क्षयी, हड्डियों की क्षयी, बच्चों की क्षयी, आंतों की क्षयी, कण्ठमाला क्षयी आदि।

(१६) क्षयरोग यदि नवीन हो तौ बड़े प्रयत्न करने से आराम भी हो सकता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षय रोग कैसे उत्पन्न होता है ?।

(डाक्टरी सिद्धान्तों का खंडन मंडन)

क्षय रोग के कारण आयुर्वेदीय ग्रन्थों में बड़े विस्तार से लिखे गये हैं। डाक्टर लोगों ने भी इस रोग के कारण ढूंढने में बड़ा परिश्रम किया है। उनके विचारों से अनेक मनुष्य सहमत हों या न हों परन्तु उन के उद्योग की प्रशंसा सब ही विचारवान करते हैं। उन्हों ने जो कारण ढूंढे हैं वे पर्याप्त नहीं हैं। और आयुर्वेदीय शास्त्रों में जितना निश्चित हो चुका है उन का अनुसन्धान अभी वहां तक भी नहीं पहुंचा है। डाक्टर लोग एक दूसरे के विचार से परस्पर सहमत भी नहीं हैं। एक के निश्चय को दूसरा प्रबल युक्तियों से खण्डन करता है। क्षयरोग के सम्बन्ध में जो नई शोध हुई है उसे हमारे विचार शील वैद्यों को जानना एक आवश्कीय बात है। तथा अपने महर्षियों के पुराने सिद्धान्तों को संसार के सामने उपस्थित करना भी उचित कर्म है। हम इस लेख द्वारा पहले पश्चिमीय डाक्टरों के मत तथा उन का खण्डन मंडन दिखलाकर पीछे आयुर्वेदीय सिद्धान्तों को दिखावेंगे। जिस से पाठक जान सकेंगे कि दोनों मतों में कौन उत्तम है। और प्राचीन ऋषियों का दिव्य ज्ञान कितना ऊंचे दर्जे का है।

डाक्टर लोगों की नई शोध यह है कि यह रोग "ट्यूबर्किलस" नामक कीटाणुओं से उत्पन्न होता है। ये कीटाणु गोलाकार होते हैं। श्वास के साथ फैफड़ों में, अथवा आहार के साथ आमाशय में या किसी घाव के साथ रुधिर में प्रविष्ट होकर क्षय को उत्पन्न करते हैं। क्षय रोग वाले मनुष्य के थूक और कफ में असंख्य कीटाणु रहते हैं। थूक और कफ के सूखने पर वे कीटाणु हवा और धूल में मिल रोगी के समीप में रहने वाले पुरुषों के शरीरों में प्रवेश कर जाते हैं। इस से यह रोग संक्रामक भी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह रोग पुश्तैनी भी मालूम पड़ता है। क्योंकि अनेक स्थानों में ऐसा देखा गया है कि पिता के बीमार होने पर कालान्तर में उस के पुत्र को भी यह रोग हुआ है। गायों के कच्चे दूध में भी इस रोग के कीटाणु होते हैं। पशुओं को भी क्षय रोग होता है। क्षय वाली गौ के दूध पीने से वे कीटाणु मनुष्य के आमाशय में पहुंच क्षय रोग उत्पन्न करते हैं।

कीटाणुओं से क्षय रोग होता है इस बात की नवीन शोध करने वाले जर्मनी के प्रसिद्ध विज्ञान वेत्ता डाक्टर रॉबर्ट कॉक (D. Roboert Koch) हुए, किन्तु इस शोध से वहां के सब डाक्टर सहमत नहीं हैं वहां के अनेक विद्वान् डाक्टर कीटाणुज्ञान (थियॉरी) से प्रबल विरोध रखते हैं। इन विरोध पक्ष वाले डाक्टरों का कथन भी युक्ति सिद्ध प्रतीत होता है।

इस प्रश्न की मीमांसा में क्षयरोग के " स्पेशलिस्ट " विद्वान् डाक्टर डेविड वार्क एम. डी ने कहा है कि—

" When Koch discovered the bacillus the medical profession concluded that these germs were the sole and original cause of tuberculosis."......But this idea has been found to be practically a complete failure."

जब से प्रोफेसर काक ने क्षय के कीटाणुओं को ढूंढ़ा तब से डाक्टरों ने इस पर ऐसा निश्चय किया कि ये जन्तु ही क्षय के मूल और मुख्य कारण हैं परन्तु उन का ऐसा मानना केवल निष्फलता रूप ही है,,

इस ही प्रकार डाक्टर जे. टी. रॉबिन्सन, एम. डी., ने कहा है "These so called deadly germs that the political doctors prate so much about are our

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

friends, they are nature's scavengers, it is a natural method of elimintion the throwing out of decayed putrid matter from the system. These germs are a product of disease and not the cause. They produce metamorphosis of tissue a form of dead matter, which can be eliminated. Of all the wild absurd theories that have ever been emposed upon an intelligent public, the germ theory is most infamous and false.

खटपटी और बदमाश डाक्टर जो कीटाणुओं की भयंकरता के सम्बन्ध में बकते फिरते हैं वे "जर्म" अथवा जन्तु तो हमारे मित्र हैं, प्रकृति ने उन्हें गन्दगी कों साफ करने के लिये बनाया है। क्योंकि मलोत्सर्ग करना एक स्वाभाविक है अर्थात् दुर्गन्धि युक्त मल निकलना एक प्राकृत नियम है। ये जन्तु रोग के कारण नहीं हैं किन्तु रोग से उत्पन्न होते हैं (जन्तु रोग को उत्पन्न नहीं करते किन्तु रोग से जन्तु पैदा होते हैं) शरीर के स्नायु और शिराओं को रूपान्तर कर के उन में से निर्जीव जन्तुओं को जुदा करते हैं, जिस से वे कीटाणु सरलता से शरीर के बाहर निकाले जाते हैं। बुद्धिमान प्रजा को भयभीत करने के लिये जो जंगली, मिथ्या और मूर्खता से भरे हुए सिद्धान्त निकाले गये हैं उन सब में जन्तु सम्बन्धी विचार अर्थात् थियोरी सब से अधिक धिक्कारे जाने योग्य है।

अमेरिका के डाक्टर चार्ल्स टाईटेल, एम, डी, का मत है The world appears to have gone microbe mad. And yet upto the present time in spite of the vaste amount of research that has been going

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

on it has never been satisfactorily demonstrated that the germ is the cause of disease. It is true that there are certain diseases in which a specific germ is invariably present but in view of the fact that the said germs are present in countless millions of people who never develope the disease.

जन्तुओं के पीछे संसार मूर्ख होगया है ऐसा ज्ञात होता है। अब तक इस के सम्बन्ध में बड़ा बिचार होने पर भी सन्तोष जनक रीति से यह सिद्ध नहीं किया गया कि रोग के कारण जन्तु ही होते हैं। यह बात ठीक है कि किसी रोग में एक विशेष प्रकार के जन्तु शरीर में रहते हैं, परन्तु स्वस्थ मनुष्यों के शरीरों में भी वैसे ही असंख्यजन्तु शरीर देखने में आते हैं, उन को वह व्याधि क्यों नहीं सताती। इस सत्य बात को विचारने से यह बात जानी जाती है कि रोग से जन्तु उत्पन्न होते हैं जन्तु से रोग नहीं—उपर्युक्त डाक्टरों के अतिरिक्त और भी अनेक विद्वान् डाक्टर इस के विरुद्ध हैं।

दुग्ध के साथ या अन्य किसी प्रकार के आहार के साथ वे परमाणु शरीर में प्रवेश कर क्षय को उत्पन्न करते हैं इस की प्रित कूलता भी कम नहीं है। उस के सबन्ध में जो डाक्टरों का मत है उस का सारांश यह है:—संसार में प्रायः सब वस्तुएं जो कि खाने पीने में आती हैं (जैसे पानी दूध, आहार) उनके साथ क्षय के जन्तु या विष मनुष्यों में प्रवेश करता है, यह कहना भी ठीक नहीं है। न इसके सम्बन्ध में कोई अकाट्य युक्ति है। यह सम्पूर्ण विश्व जन्तुमय है ऐसा सब धर्म्मवाले मानते हैं। जैन-शास्त्रों में तो आजकल कहे जानेवाले जन्तुओं से भी असंख्य सूक्ष्म जन्तुओं का वर्णन है। शुद्ध से शुद्ध जल और वायु में भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से रहते हैं। दुग्ध और माखन में भी इनकी स्थिति है। एक छोटे चमचे भर दूध में कम से कम तीसलाख और अधिक से अधिक एक करोड़ जन्तु रहते हैं। गाय के बिना औटाये दुग्ध में जो जन्तु रहते हैं उनसे क्षय उत्पन्न नहीं होता। यदि उस दूध में क्षयरोगोत्पादक तथा प्राणनाशक जन्तु रहते हैं, तो कहिये असंख्य कीटाणुओं वाले दुग्ध को पैदा करनेवाली गाय ही कैसे जीवित रहसकती है। और दूध के औटाने से क्या सब कीटाणु नष्ट नहींहो जाते हैं। यदि थोड़े बहुत शेष रहजाते हैं तो क्या वे पुनः नहीं बढ़ सकते। क्योंकि इन कीटाणुओं में बहुत शीघ्र बढ़ने की शक्ति होती है। जन्तुओं को प्रसिद्ध करनेवाले डाक्टर राबर्ट काक का भी इस विषय में मत बदल गया और वे अन्त में कह गये कि कैसी ही क्षय वाली गाय का दूध पीने से क्षय रोग उत्पन्न नहीं होता। अतः जो डाक्टर इस मिथ्या भय को दिखाते हैं वे प्रजा को निर्बल बनाते हैं। और बेचारी गायों को निरर्थक हानि पहुंचाते हैं। आहार के साथ गये हुए भी वे कीटाणु क्षय उत्पन्न नहीं कर सकते। क्योंकि आमाशय के "गस्ट्रीकजुस,,में हाईड्रोक्लोरिक एसिड रहता है जिस से अथवा आहार को पचानेवाले अन्य रस से वे नाश हो जाते हैं। यदि आमाशय या अन्तड़ियों में कोई व्रण न हो तो वे जन्तु कोई हानि नहीं पहुंचासकते।

क्षय रोग पुश्तैनी भी नहीं है, जैसा कि फिरंग या उपदंश का विष कई पीढ़ी तक रहता है वैसा क्षयरोग का नहीं। किसी कुटुम्ब में जो यह देखा जाता है कि पिता को क्षय होने पर कालान्तर में उस के पुत्र को भी क्षयरोग हुआ है, इसका कारण अन्य ही है। जिस प्रकार प्रायः लम्बे मनुष्य का पुत्र लम्बा, ठिगने का ठिगना, स्वरूपवान का स्वरूपवान होता है, उस ही प्रकार प्रायःनिर्बल फेफड़ेवाले पिता का पुत्र भी निर्बल फेफड़ोंवाला होता है। और प्रायःकुटुम्ब भरके आहार विहार भी समान ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। इस से जिन कारणों से पिता को क्षय रोग पैदा हुआ था उनही कारणों से पुत्र को भी क्षयरोग होजाता है। यदि वह पुत्र सावधान होकर पथ्य से रहे दुराचार और व्यसनों से बचे तो यह रोग कदापि उत्पन्न न हो।

कीटाणु कारण वाद
और आयुर्वेदीय शास्त्र

आज कल जिस विज्ञान की पाश्चत्य देशों में धूम मच रही है, जिस जन्तु विज्ञान के आविष्कर्ता बनके इस बीसवीं शताब्दि में पश्चिमीय डाक्टर अपनी शोध और उन्नति पर अभिमान करते हैं, जिस जन्तु विज्ञान को आधुनिक विद्वान बड़ी आश्चर्य्य भरी दृष्टि से देखते हैं, जिस जन्तुविज्ञान को देख पुरानी चालके रोगों की जांच ढकोसला बताई जाती है, उस जन्तु विज्ञान से क्या हमारे आयुर्वेदीय शास्त्र शून्य हैं? क्या सचमुच इस ज्ञान के आविष्कर्ता पश्चिमीय डाक्टर ही हैं? क्या हमारे पूज्यपाद ऋषियों का ज्ञान हमारी अज्ञानता और अवहेलना से विदेशी विद्वानों के गृहों को, हृदय कमलों को, प्रकाशित नहीं करता? हम अभिमान पूर्वक कह सकते हैं कि वर्तवान समय का "जन्तुविज्ञान" भारतीय वैद्यकज्ञान का अणु मात्र ही है। आज नहीं कितनी ही शताब्दियों पहले हमारे महर्षि इसे उत्तम रीतिसे जानते थे। वे केवल जानते ही न थे प्रत्युत इस विषय को उन्हों ने अच्छी प्रकार ऊहा पोह कर के अपने ग्रन्थों में बड़ी उत्तम रीति से प्रदर्शित भी किया है। जिस के प्रमाण अनेक संहिताओं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आज कल भी पाये जाते हैं। जब वेदों में भी "जन्तु विज्ञान,, का विस्तृत वर्णन पाया जाता है तब न मालूम विदेशी लोग किस मुंह से अपने लिये इस ज्ञान के उत्पन्न करने वाले ब्रह्मा बतलाते हैं। अब भारतीय वैद्यों ने अपने आयुर्वेदीय मंदिर की सँभाल करनी प्रारम्भ करदी है। उस टूटे फूटे जीर्ण मंदिर में भी बहुतसी सामिग्री बची है। इस से इस निरपेक्ष समय में हम अपनी सम्पत्ति को दूसरों को न बताने देंगे। यह हम मानते हैं कि प्रचीन विज्ञान विना संस्कार किया हीरा था और बर्तमान समय में उसे छीलकर विदेशी विद्वानों ने प्रकाश युक्त बनाया है। परन्तु उसे खान से निकालने वाले हमारे पूर्वज ऋषि ही थे।

आयुर्वेद के आचार्य्य अनेक स्थानों पर जीवाणु कारणवाद विषयक ऐसे सुन्दर हेतु सूत्र और लिंग सूत्र लिख गये हैं जिन्हें देख कर कोई भी यह नहीं कह सकता कि आयुर्वेदीय चिकित्सा में इस विषय के प्रमाण नहीं हैं। नीचे लिखेहुए शास्त्रीय विचार से विद्वान लोग जान सकेंगे कि आयुर्वेदज्ञ कीटाणु कारण वाद से कैसे परिचित थे।

वेदों में क्रिमिवर्णन

हमारा आयुर्वेद, अथर्व वेद का उपांग है। उस अथर्व वेद में कीट विज्ञान विस्तार पूर्वक वर्णित है उस में लिखा है कि अनेक प्रकार की क्रमियां होती हैं जिन से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, बहुतसी क्रमियां दीखती हैं और बहुतसी सूक्ष्म होने से नहीं दीखतीं, वे क्रमियां मनुष्यों के अन्तड़ियां शिर, पीठ आदि स्थानों में रहती हैं। "दृष्टमदृष्टमतृहम्,, "अन्वान्ड्यं शीर्षण्यमथो पार्ष्टेयंक्रमीन्,, इत्यादि अनेक मन्त्रों में कीट विज्ञान भरा पड़ा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिमियों के भेद और स्वरूप | क्रिमि वाह्य और आभ्यन्तर भेद से दो प्रकार के होते हैं।

वाह्यों में तिल के बराबर, बाल, और बस्त्रों में रहने वाले जूआं लीख आदि हैं। आभ्यन्तरों में, कफज रक्तज और पुरीषज हैं। जिन के स्वरूपादि के विषय में आचार्य्यों ने लिखा है।

कफादामाशये जाता वृद्धाः सर्पन्ति सर्वतः
पृथुब्रघ्न निभाः केचित् केचिद्गण्डूपदोपमाः
रूढ़ धान्यांकुराकारास्तनु दीर्घास्तथाणवः
श्वेतास्ताम्रावभासाश्च नामतः सप्तधातु ते
अन्त्रादा उदरावेष्ट हृदयादा महागुहाः
चुरवो दर्भकुसुमाः सुगन्धास्ते च कुर्वते
रक्तबाहि शिरास्थान रक्तजा जन्तवोऽणवः
अपादावृत्त ताम्राश्च सौक्ष्म्यात् केचिददर्शनाः
केशादा लोमविध्वंसा रोमद्वीपा उदम्बराः
षट् ते कुष्ठैककर्माणः सहसौरस मातरः ॥

इन श्लोकों का संक्षेप से यह अर्थ है कि कफ से आमाशय में उत्पन्न हुए क्रिमि कोई मोटे चर्म्मलता के समान, कोई गेंडुए के समान, कोई धान्यांकुर के सदृश कोई लम्बे और कोई सूक्ष्म होते हैं। ये क्रिमि श्वेत और लालरंगवाले हैं। अंत्राद, हृदयावेष्ट, महागुद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरव, दर्भकुसुम, और सुगन्ध इन के नाम हैं। इस ही प्रकार रक्तज क्रिमि रक्तवाहिनी शिराओं में रहते हैं, यह बहुत बारीक, कई पैरवाले गोल तथा लाल होते हैं। कोई २ इतने बारीक होते हैं जो दीख नहीं पड़ते। केशाद, लोमविध्वंसक, रोमद्वीप, उदुम्बर सौरस, और मातर इन नामों से छः प्रकार के हैं। इन क्रिमियों से कुष्ठ उत्पन्न होता है। इस ही प्रकार पुरीषज क्रिमियां हैं।

अब विचारिये कि क्रिमियों का वर्णन कैसा स्पष्ट है। दृश्य अदृश्य, सूक्ष्म, स्थूलादि सब प्रकार के कीटों की गणना कर दी है। नाम कल्पना भी किस ढंग से की है अदृश्य और सूक्ष्म क्रिमियों को ऋषियों ने किस प्रकार दृष्टि गत किया है। देखा ही नहीं किन्तु तज्जन्य रोगों का वर्णन तथा उन के रंग आदि का वर्णन कैसा विशद रूप से किया है। रंग के सम्बन्ध में प्रयादा वृस ताम्रा आदि ऊपर लिखा गया है। क्रिमिजन्य रोगों को यहां वर्णन करते हैं।

ज्वरो विवर्णता शूलं हृद्रोगः सदनं भ्रमः
भक्त द्वेषोतिसारश्च संजात क्रिमि लक्षणम्
हल्ला समास्य स्रवणम विपाकमरोचकम्
मूर्च्छा छर्दिज्वरानाह कास क्षवथु पीनसान्
कुष्ठो ज्वरश्च शोषश्च नेत्राभिष्यन्दि एवच
औपसर्गिक रोगाश्चं संक्रामन्तिनरान्नरम् ॥

भावार्थ—ज्वर वर्ण का बदलना, शूल, हृद्रोग, ग्लानि, भ्रम, भोजन में अरुचि, अतिसार इतने लक्षण क्रिमि उत्पन्न होने पर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं ॥ जी मिचलाना, मुख से लार गिरना, अन्न का न पचना, अरुचि,मूर्च्छा, छर्दि, ये रोग क्रिमियों से होजाते हैं । कुष्ठ ज्वर शोष, नेत्राभिष्यन्दि और शीतला आदि संक्रामक रोग इन क्रिमयों के कारण ही एक से दूसरे मनुष्य के लग जाते हैं ॥ आयुर्वेदीय शास्त्रों में रोगों के कारण प्रधानता से दोष माने हैं। कीटाणुओं को कहीं२ साधारण कारण माना है । रक्तवाही स्रोत आमाशय, हृदय, फुप्फुसादि के बिगड़ने से कीटाणु अवश्य उत्पन्न होते हैं। और शरीर के भीतर बाहर अनेक रोग उत्पन्न करते हैं । किन्तु हमारे यहां एलोपैथी वालों के समान रोग के कारण एक मात्र कीटाणु ही नहीं माने गये । दोषों का ज्ञान दुर्ज्ञेय और अतीन्द्रिय होने के कारण वे लोग वहां तक नहीं पहुंचे। आप सोच सकते हैं कि संसार की कोई वस्तु बिना वायु के उत्पन्न नहीं होती । तब ये जीवाणु बिना वायु के कैसे उत्पन्न हो सकते हैं । इसी प्रकार जीवाणुओं में घनिष्ठता आदि बिना श्लेष्मा और पित के नहीं हो सकते । अतएव यह अवश्य मानना पड़ेगा कि रोगोत्पादक दूषित जीवाणु दुष्ट हुए वातादिकों से पैदा होते हैं । आप अच्छी तरह समझ लेंगे कि जब वायु द्वारा सोमगुण विशिष्ठ शुक्र और आग्नेय गुण विशिष्ठ शोणित के संयोग से ही मांस पिण्ड उत्पन्न होता है तब जीवाणुओं की उत्पत्ति में वायु तथा सोमगुण युक्त कफ, और अग्निगुण युक्त पित्त को मानना क्या ठीक नहीं है । इसलिये हमारे शास्त्र इन जीवाणुओं को रोगोत्पादक मानते हुए भी प्रधानता से दोषों को ही कारण मानते हैं । हां इतना अवश्य कहना पड़ेगा कि कहीं दुष्ट दोषों से और कहीं दुष्टोद्भव कीटों से, कहीं दोनों के संयोग से, रोग की अत्यन्त वृद्धि होती है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद मतानुसार क्षय रोग में जीवाणुओं की सत्ता ।

उपर्युक्त जीवाणु वाद से यह जाना जाता है कि शोष, ज्वर, हृदय रोग में क्रिमियों का होना आयुर्वेद शास्त्र भी मानते हैं। क्षय रोग में ये क्रिमियां इस प्रकार उत्पन्न होती हैं।

(१) कफ की वृद्धि, और आमाशय का बिगड़ना ये क्षय रोग के प्रारम्भिक चिन्ह हैं। इससे आमाशय में कफज क्रमियां हो जाती हैं और वे आहार के सारभाग को बिगाड़ देती हैं।

(२) क्षय रोग में रस बिगड़ता है। रस से रक्त दूषित होता है अतः "रक्तवाहि शिरा स्थान" इस प्रमाणानुसार रक्त वाही नलियों में भी सूक्ष्म रक्तज क्रिमियां होती हैं। इस से अनेक यत्न करने पर भी रक्त क्षीण हो निकलता है।

(३) हृदय में त्रिदोषों के बिगड़ने से यक्ष्मा होता है और हृदय में भी कीटाणुओं का होना लिखा है इस से क्षय रोग में हृदय के बिगड़ने पर कीटाणु उत्पन्न होते हैं।

(४) प्रतिष्याय के बिगड़ने और बढ़ने से यक्ष्मा शीघ्र उत्पन्न होजाता है। और प्रतिष्याय के अधिक बिगड़ने पर क्रिमियां उत्पन्न होती हैं जैसा कि लिखा है "मूर्च्छन्ति क्रमयश्चात्र श्वेतास्निऽधास्तथाणवः" इस से क्षयरोग में मस्तिष्क की ओर कीटाणुओं का होना सम्भव है।

(५) "कुष्ठो, ज्वरश्च शोषश्च" के अनुसार जब शोषरोग संक्रामक है तो इस में क्रिमियों का होना शास्त्र सम्मत है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षयरोग के प्राचीन मतानुसार
कारण

क्षयरोग के इन पश्चिमीय नवीन कारणों की तरफ़ से ध्यान हटाकर अब आयुर्वेदीय प्राचीन कारणों की ओर अपने पाठकों का ध्यान खींचते हैं। प्राचीन महर्षियों और अर्वाचीन विद्वानों के विचारों में पृथ्वी आकाश का सा अन्तर है। प्राचीन महर्षि आध्यात्मिक ज्ञान सम्पादन करते थे और आज के विद्वान् सांसारिक कार्य्य में दक्ष हैं। उन की दृष्टि प्रत्येक विचार में भीतरी जाती थी और आजकल के विद्वानों की बाहरी ही रह जाती है। उन का ज्ञान निर्मल था और आज का बनावटी उन का एक २ वाक्य सारमय था और आजकल के बड़े २ पोथे निरर्थक। उपर्य्युक्त क्षय सम्बन्धी नई विवेचना भी इस ही ढंग की है। हम कीटाणु ज्ञान को मानते हुए भी यह कहते हैं कि ये कारण मुख्य या पर्य्याप्त नहीं हैं। इस बात का विचार करना चाहिये कि ये कीटाणु सब प्रकार के शरीरों में प्रवेश कर सक्ते हैं या किसी विशेष प्रकार के शरीरों में, जिस प्रकार किसी खेत में बोया हुआ बीज तब ही उगता है जब उस के अनुकूल भूमि हो। विपरीत या ऊसर भूमि में बिना उगे ही पड़ा रहता है। उस प्रकार ये कीटाणु भी बढ़ने तथा रोगोत्पन्न करने के लिये अपने अनुकूल शरीरों को ही चाहते हैं ऐसा कीटाणु-मत-वाले भी मानते हैं।

उपर्य्युक्त बातें ही ता० २४-४-१४ को डाक्टर पी० एन० शर्म्मा ने "रिफाहेआम" मन्दिर में व्याख्यान देते समय कहीं थी "यक्ष्मा रोग की उत्पत्ति के दो प्रधान कारण हैं एक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमि, दूसरा बीज। भूमि-मनुष्य का शरीर, और बीज-रोग के कीटाणु। यदि भूमि अनुकूल नहीं हैं तो बीज नहीं उगेगा। अर्थात् यदि मनुष्य शरीर में अवरोध कारक शक्ति है तो कीटाणुओं से व्याधि नहीं होगी। साधारण रीति से सामान्य अवस्था में यदि शरीर अच्छी तरह स्वस्थ हो तो कीटाणु चाहें हमारे श्वास के साथ भीतर ही क्यों न चले जावें तो भी मरजाते हैं। हमें निश्चय है कि जितने लोग आज इस समय यहां उपस्थित हैं उन में से कोई एक भी ऐसा नहीं है जिन पर उन कीटाणुओं ने आक्रमण न किया होगा। ये विश्वव्यापक हैं। ये मकानों, बस्ती की सड़कों और रेल की गाड़ियों की हवा में रहते हैं। और ऐसी कोई भी जगह नहीं है जहां वे न होते हों। हम सब श्वास द्वारा शरीर में इन्हें ग्रहण कर लेते हैं और तौ भी सब प्रकार स्वस्थ रहते हैं॥

यहां पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि कीटाणुरूपी शत्रु का क्या हुआ? वह बेमौत मारागया। बीज एक ऐसी भूमि में पड़ा जहां उस का पौधा लग न सका, केवल वे प्रारब्धहीन लोग जिन का स्वास्थ्य बहुत निर्बल है या जिन की छाती बहुत कमज़ोर है। जो मैली गर्द से भरी हुई और स्वच्छ हवा से रहित कोठरियों में काम करते हैं या दुःसाध्य रोगों से ग्रसित हैं या शक्ति से अधिक काम करते हैं उन के शरीर इन कीटाणुओं के लिये उर्बरा भूमि का काम देते हैं"॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदीय तत्वविद् विद्वानों ने ऐसे निरर्थक बाह्य कारणों की तरफ ध्यान न दिया, उन का लक्ष्य इस बात की ओर रहा कि किन कारणों से शरीर ऐसा बनता है जिस में क्षय रोग उत्पन्न होसके, अथवा यों कहिये कि उस में कीटाणु प्रवेश कर के बढ़ सकें तथा रोग उत्पन्न कर सकें। उन्हों ने ऐसे कारणों को मुख्य समझ कर बाह्य परतन्त्र कारणों की तरफ ध्यान नहीं दिया॥

आयुर्वेदीय प्रसिद्ध ग्रन्थ चरकसंहिता में इस रोग का बड़ा भावपूर्ण विवेचन किया गया है। इस रोग के सम्पूर्ण ४ कारणों को एक छोटे से वाक्य में लिख कर मानों सागर को गागर में भर दिया है। उस में लिखा है- "इह खलु चत्वारि शोषस्यायतनानि" तद्यथाः—साहसं, सन्धारणं, क्षयो, विषमाशनमिति, शोषरोग के निश्चय चार कारण हैं—साहस, वेगोंको रोकना, क्षय और विषमाशन॥

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहस का व्याख्यान

साहस एक ऐसी शक्ति है जिस के द्वारा साधन शून्य पुरुष भी कठिन से कठिन कार्य करने को कटिबद्ध हो जाता है और उन कार्यों को पूर्ण भी कर लेता है पर ऐसा साहस जिस से हृदय और फुप्फुसों को बाधा पहुंचे वह क्षय, उरः क्षत जैसे भयंकर रोगों का उत्पन्न करने वाला है।जो पुरुष बलहीन हैं वह साहस का समाश्रय लेकर दुरूह मल्लयुद्ध में प्रवृत्त हो जावें अथवा अत्यन्त भारी बोझ को उठाने लगें अथवा अति वेग से धनुष द्वारा बाण फेंकने लगें अथवा अति उच्च स्वर से वेदादि का पाठ करने लगें अवथा उछलने कूदने आदि व्यायाम को अत्यन्त करने लगें अथवा श्री गंगादि महा नदियों में अत्यन्त तैरने लगें अथवा गिरपड़ने से अकस्मात् जिन के वक्षःस्थल में चोट लग जावे, ऐसे अपनी शक्ति से अधिक परिश्रम करने वाले क्रूर कर्मा पुरुषों के वक्षःस्थल में क्षत हो जाता है उस क्षत पर वायु आक्रमण करता है और वहां के कफ को सुखा इधर उधर नीचे तिरछा जाता हुआ फुप्फुस आदि स्थानों में पहुंच अनेक रोगों को उत्पन्न कर देता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्ट वायु के कर्म (हंकड़ी)

इस वायु का जो अंश शरीर की संधियों में पहुंचता है उसी से जृम्भा, अंग शैथिल्य और ज्वर उत्पन्न हो जाते हैं। इस वायु का दूषितांश जब आमाशय में पहुंचता है तब ज्वर, हृदय रोग अरुचि और अनास्वादन हो जाते हैं। जब फुप्फुस और प्राण-वाही स्रोतों में पहुंचता है तब प्रतिश्याय, कास, श्वास उत्पन्न हो जाते हैं। जब शिरोभूमि में पहुंचता है तब शिरो रोग, उत्पन्न हो जाते हैं। जब कण्ठ में पहुंचता है तब स्वरभंग आदि उत्पन्न हो जाते हैं। इस प्रकार वक्षःस्थल, कण्ठ, फुप्फुसों में पहुंच जाने से कास उत्पन्न हो जाता है। और कास में वक्षःस्थल के क्षत के कारण कफ के साथ रुधिर भी थूकने लगता है। तब क्षतादि दोष और रुधिर के दूषित हो जाने से फुप्फुस दुर्गन्ध युक्त हो जाते हैं। ऐसे अवसर में वायु आदि के संघात से परमाणु समान अनेक कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं। और शनैः २ मनुष्यों के धात्वादि को चरने लगते हैं जिस से मनुष्य सूखता जाता है इस प्रकार शक्ति से अधिक कार्य लेने वाले साहसी पुरुषों को शोष उरःक्षत उत्पन्न हो जाते हैं। और पुनः उस में क्षय के अन्य ज्वरादिक रूप असावधानी से हो जाते हैं। जिस से शीघ्र ही यह मनुष्य मृत्यु का ग्रास बनजाता है। कोई २ विद्वान एक मात्र कीटाणुओं को ही क्षय रोग का कारण मानते हैं पर यह उन की दार्शनिकता की अदूर दर्शिता है। इस विषय का स्पष्टतया वर्णन आगे किया जायगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ सन्धारण का व्याख्यान ॥

सन्धारण का अर्थ है धारण करना, प्रश्न होता है किसे धारण करना? कहना पड़ेगा, अधारणीय प्राकृतिक मल मूत्र वायु के आगत वेग को धारण कर लेना अर्थात् जो पुरुष राजा गुरु स्वामी पिता पितामहादि वृद्धों की सेवा में बैठा हो वा लिखने पढ़ने में संलग्न हो वा स्त्रियों में बैठा हो वा ऊंची नीची सवारी में चल रहा हो, ऐसे समय भय लज्जा आलस्यादि किसी कारण से वा प्रसंग की अपूर्णावस्था के कारण जो पुरुष अधोवायु, मूत्र, पुरीष, के वेगों को रोकता है, उन वेगों के रोकने से वायु कुपित हो जाता है और यह प्रकुपित वायु कफ और पित्त को भी प्रकुपित कर शरीर में ऊपर नीचे तिरछा गमन करता है। और शरीर की संधियों में पहुंच मार्गों को अवरुद्ध कर पीडा उत्पन्न कर देता है, यह वायु अंत्रमण्डल और मलाशय में पहुंच पित्तानुबन्धी हो अतिसारादिक उत्पन्न कर देता है अथवा जब इन ही स्थानों में स्वतंत्र रूप से पहुंचता है तब मलावरोध, आनाह, उदावर्त पैदा कर देता है। दोनों पसलियों और कन्धों में पहुंच शूल उत्पन्न कर देता है। इसी प्रकार आमाशय हृदय, कण्ठ, शिर फुप्फुस में पहुंच ज्वर, कास, श्वास, रक्तपित्त हृदय रोग, प्रतिश्याय, स्वरभंग और शिरोरोगों को पैदा कर देता है। और दुष्ट रस को अनेक रूपों में मुख से निकालता है। इस प्रकार नवीन रसादि के न बनने और बने हुओं के बिगड़ने से मनुष्य सूखता जाता है और क्षय रोग युक्त पुकारा जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान रखना चाहिये जब वातादि दोष दुष्ट हो आमाशय के आश्रय से ज्वरादिक उत्पन्न कर देते हैं तो मनुष्यों को यही ज्वर बहुत दिन सताये रहता है और पुनः यही ज्वर चिकित्सा के वैपरीत्य से विषम वा जीर्ण हो जाता है। इसी ज्वर में फिर कास उत्पन्न हो जाता है और पुनः यही कास यक्ष्मा तक पहुंचाता है। इसी प्रकार जब वातादि दोष पक्वाशय ग्रहणी आदि का आश्रय लेते हैं तो प्रथम संग्रहणी अतिसारादि उत्पन्न हो जाते हैं तब इन ही रोगों में असावधानी रखने से कासादि भी उत्पन्न हो यक्ष्मा होजाता है। इसी कास में रक्त का भी दर्शन हो जाता है। पर यह सार्व कालिक और सार्वत्रिक नियम नहीं, दोषों के मार्ग पर इस प्रकार की गति विगति निर्भर होती है। इस प्रकार दोष दुष्टि होने से अन्य रोग होकर भी यक्ष्मा उत्पन्न हो जाता है। यक्ष्मा का इस प्रकार उत्पन्न होना क्षय के क्षय विषमाशनादि हेतुओं में भी अन्तर्भाव रूप से परिगणन कर लेना योग्य है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ क्षय का व्याख्यान ॥

जो पुरुष शोक और चिन्ताओं से दुखितहृदय रहते हैं अथवा जिन के मन को ईर्षा, उत्कण्ठा, भय, क्रोध, आदि सताते रहते हैं अथवा स्निग्ध पदार्थों की तो क्या कहें जिन को भर पेट रोटी भी नहीं मिलतीं और तिस पर भी अनेक खोटी चिन्तायें खुट खुटाती रहती हैं ऐसे पुरुषों का रस दुष्ट दोषों से क्षीण हो जाता है और पुनः रक्त न बनने के कारण ऐसे पुरुष सूखते जाते हैं। इस प्रकार मनो मालिन्य पुरुषों को क्षय हो जाता है, इस के अतिरिक्त स्निग्ध भोजी वा साधारण स्थिति वाले पुरुष जब शक्ति से अधिक मैथुन करते हैं, रमणियों में जो इस प्रकार मदान्ध हो रमण करते हैं जिन को न दिन का ध्यान न रात्रि का ध्यान, मैथुन में न एक वार की गिनती न अनेक वार की गिनती, ऐसे पुरुषों के वीर्य और ओज क्षीण हो जाते हैं। वीर्य के क्षीण हो जाने से मैथुन में वीर्य के स्थान पर रक्त निकलने लगता है, तब वीर्य हीन वीर्य वाहिनी नाड़ियों में दुष्ट वायु घुस मज्जा को सुखाता, अस्थि आदि रस पर्यन्त धातुओं को विलोम क्षय प्रक्रिया से सुखा देता है ऐसे समय यह वायु, पित्त और कफ को भी उदीर्ण कर दोनों पसीलयों और कन्धों में वेदना और कंठ को विकृत कर देता है। कफ को उत्क्लेशित कर सिर में भर प्रतिश्यायादि उत्पन्न कर देता है, संधियों को पीड़ित कर अंग शैथिल्य, अरुचि उत्पन्न करता है। इस प्रकार दोष त्रय की दुष्टि से ज्वर, प्रतिश्याय, कास, श्वास, स्वरभंगादिक उत्पन्न हो जाते हैं, तब यह पुरुष इन शोषण-कारक उपद्रवों उपद्रुत हो शुष्क होता चला जाता है, इसी का नाम पुनः क्षय युक्त कहा जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ विषमाशन का व्याख्यान ॥

ऐसे भक्ष्य, भोज्य, लेह्यादि पदार्थों का सेवन, जो १ प्रकृति, २ करण, ३ संयोग, ४ राशि, ५ देश, ६ काल और ७ उपयोग संस्था के विरुद्ध हो, विषमाशन कहाता है।

(१) प्रकृति का अर्थ है–स्वभाव, भोजन के समय खाने योग्य द्रव्य प्रकृति का विचार करना, यथा उर्द स्वाभाविक गुरु और मुद्ग स्वाभाविक लघु हैं, इन में से यथा प्रकृति सेवन करना।

(२) करण–कहते हैं स्वाभाविक द्रव्यों के संस्कार को, यथा शीतल जल ज्वर में सेवन किया हुआ त्रिदोष कुपित करता है। और यही शीतलजल अग्नि द्वारा षोड़शांश अष्टमांश आदि पकाकर सेवन किया हुआ, त्रिदोषघ्न है और ज्वरपाचक है।

(३) संयोग–दो द्रव्यों के मिलने को संयोग कहते हैं, यथा–समान भाग में मधु और घृत खाये हुए विष समान हैं और वेही विषम भाग से खाये हुए अनेक रोगों के नाशक है।

(४) राशि–इस का अर्थ है सर्वग्रह और परिग्रह। सर्वग्रह का अर्थ है सब वस्तुओं को इकट्ठा कर समझ लेना, परिग्रह का अर्थ है पृथक २ वस्तुओं का प्रमाण निश्चय कर लेना। यथा–भोजन आधसेर खा लेना इस का नाम सर्वग्रह और इसी में निश्चय करना इतना चून और इतनी दाल खाने में आई है इस का नाम है परिग्रह। राशि के विचार से अनेक लाभ हैं, प्रत्येक विषय में राशि सम्बन्धी विचार करना योग्य है

(५) देश—अर्थ स्पष्ट है, विचार करना- यहां किन २ द्रव्यों की उत्पत्ति होती है, किन २ वस्तुओं का प्रचार यहां अधिकता से है, यथा–गोधूम खानेवाले देशवासी को निरन्तर तंडुल सेवन और तंडुल भक्षी देशवासी को प्रतिदिन गोधूम चूर्ण खाना अहितकारी है।

(६) काल–अर्थ स्पष्ट है, यह दो प्रकार का होता है (१) नित्यग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) आवस्थिक। नित्यग ऋतु सात्म्यापेक्षी, और आवस्थिक विकारापेक्षी होता है। अर्थात् आहारादि में ऋतु और विकार के अवसर को देखना योग्य है, यथा- ग्रीष्म ऋतु में द्राक्षा सेवन ऋतु सात्म्य होने के कारण नित्यग है और ग्रीष्म ऋतु के ज्वर में ऋतु वैषम्य उष्णोदकपान आवस्थिक है॥

(७) उपयोगसंस्था-इस का अर्थ है आहारादि के उपयोग का नियम पूर्वक होना। यथा-आहार की अधिकता अजीर्णप्रद है, वैसा न करना, अथवा अजीर्ण में खाया हुआ, रोग प्रद है, ऐसा न करना इत्यादि।

(८) उपयोक्ता-उपयोग करनेवाले को कहते हैं, किया हुआ भोजन अच्छी तरह पच गया है इसे जाननेवाला होना योग्य है।

विषमाशन से अन्न ठीक २ नहीं पचता। वात पित्त कफ विषम हो शरीर में फैलते २ स्रोतों के मुख को रोक स्थित हो जाते हैं और पाचकाग्नि को विकृत करदेते हैं। तब पाचन न होने के कारण रसरक्तादि नहीं बनते। मनुष्य जो कुछ खाता है उस का अधिकतया मलभाग होजाता है, तत्पश्चात् कुपित वायु यत्र तत्र पहुंच अंगमर्द, कण्ठनाश, पार्श्व वेदना, स्वरभेद, प्रतिश्यायादि को उत्पन्न करदेता है। इसी प्रकार प्रकुपित पित्त दोषानुबन्धी हो ज्वर, दाह, अतिसारादि को पैदा कर देता है। और कुपित हुआ श्लेष्मा दोषानुबन्धी हो प्रतिश्याय, सिर में भारापन, कास, श्वास, अरुचि, अग्निमांद्यादि को उत्पन्न कर देता है। इस प्रकार दोषत्रय की दुष्टि से फुफ्फुस और हृदय विकृत हो जाते हैं और कास के साथ रुधिर का भी दर्शन होने लगता है। इस प्रकार रसादि के नवीन न बनने और बने हुओं के क्षीण होने से क्षय होजाता है। यहां यह भी कहदेना योग्य समझते हैं कि अपने २ स्रोतों के योग से धातु धातु द्वारा पुष्ट होते हैं और अपने स्रोतों के रुकजाने से रसादि धातु क्षीण हो जाते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में क्षयरोग क्यों बढ़रहा है

(देशव्यापी कारण)
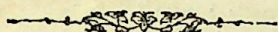
आज भारत में जो क्षय का दौर दौरा है इस के देशव्यापी प्रधान कारण, वीर्य्यनाश, दुर्व्यसन, दरिद्रता, नई सभ्यता अपवित्रता और नित्य कर्मों का त्याग आदि हैं।

क्षय रोग और वीर्य्य नाश

वीर्य्यरक्षा की ओर भारत वासियों का बहुत कम ध्यान है। छोटे २ बच्चों का विवाह कर बचपन में ही पावों में बेड़ियां डाल देते हैं। कुसंग में पड़ सैकड़ों बच्चे वीर्य्यनाश करते हैं। आज लाखों युवा नपुंसक बन अपने जीवन को भार रूप समझते हैं। ऐसे थोड़े ही पुरुष होंगे जिन्हें वीर्य्य विकार न हो, दुर्वल वीर्य्य वाले पुरुषों को क्षय के उत्पन्न होने में देरी नहीं लगती। यदि पुष्ट वीर्य्य हो, मनुष्य बलवान हो बचपन से ब्रह्मचारी हो तो कभी क्षयरोग नहीं हो सक्ता।

यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि जब से भारतवासी दुर्वल, क्षीणवीर्य होने लगे तब ही से भारत में क्षयरोग मानवों का निर्दयता से क्षय कर रहा है।

महर्षि आत्रिय ने क्षयरोग से बचने के लिये चार बातें सिद्धांत रूप से बतलाई हैं उन के वाक्य बड़े मजबूत हैं और बार २ मनन करने योग्य हैं। उन चार उपदेशों में एक उपदेश यह है।

आहारस्य परं धाम शुक्रं तद्रक्ष्यमात्मनः।
क्षयेह्यस्य बहूनरोगान्मरणं वा नियच्छति॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहारका अन्तिम परिणामरूपी तेज वीर्य्य है उस वीर्य्य की सब को रक्षा करनी चाहिये। वीर्य्य के क्षय होने पर बहुत से रोग उत्पन्न होते हैं और मृत्यु तक प्राप्त होती है। आज कल के नवयुवकों को चाहिये कि अपने २ कमरों में इस उपदेश पूर्ण वाक्य को मोटे मोटे अक्षरों में लिखकर टांग लेवें और श्रद्धा से इसे पढ़ें और अपने सहयोगियों को सुनावें। पढ़ें और सुनावें ही नहीं किन्तु ऋषियों द्वारा बनाई इस देवी क़ानून के ऊपर चलें इतना भी ध्यान रक्खें कि वीर्य्य संरक्षण आरोग्य दीर्घायुष्य की कुंजी है। जीवनरूपी महल का आधारभूत दृढ़स्तम्भ है। अथवा सुख पूर्वक जीवन वल्लरी को ऊंचा लेजानेवाला सुशोभित वृक्ष है। अनेक रोग रूपी पवन के झपाटे से डगमगाती हुई शरीर रूपी नौका को कालरूपी समुद्र में डूबने से बचाने और स्थिर रखनेवाला मज़बूत लंगर (Sheet Anchor) है, वीर्य्य का एक विन्दु रुधिर के ४० विन्दुओं के बरावर है।

जो मनुष्य किसी वस्तु का मूल्य नहीं जानता वह उसे व्यर्थ खर्च कर डालता है। मणि को अज्ञता से कांच समझ फैंक देता है। भारत वासी नवयुवकों को वीर्य्य संरक्षण के लाभ नहीं समझाये जाते। उनको वीर्य्य रक्षा करने और ब्रह्मचारी बनने का उपदेश नहीं दिया जाता। इस से अधिकांश भारतवासी युवा वीर्य्य नाश करते हैं, मैथुन में फंसे रहकर दुर्बल बनते हैं किसी अंग्रेज़ी विद्वान् ने यह ठीक कहा है।

The greatest enemy to the health of man, is woman the worst enemy to the health of woman, is man.

अर्थात् पुरुष की आरोग्यता का बड़े से बड़ा शत्रु स्त्री, और स्त्री के स्वास्थ्य को नाश करने वाला कट्टर वैरी पुरुष है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी विद्वान ने कहा है कि मनुष्य शरीर में दिमाग़, ज्ञान का भण्डार होने से राजा है। और वीर्य्य राजकोष, इन्द्रियां उस को सलाह देनेवाली पार्लीमेंट की मेम्बर हैं। जिस पुरुष की इन्द्रियां असावधान होती हैं। दुष्ट कार्य्य में फंसने की सलाह देती हैं। वे अपने स्वामी को धोका दे राजकोष को व्यर्थ लुटवा देती हैं। राजकोष में कमी होने से दिमाग भी कमज़ोर होता है। तथा शरीर के अंग प्रत्यंग भी निर्बल रहते हैं। रक्त का कोष हृदय और फैफड़े भी दुर्बल हो निकलते हैं, जठराग्नि मन्द पड़ जाती है ज्ञान तन्तु निर्बल हो जाते हैं। इस से मनुष्य में इतना बल नहीं रहता जो बाहरी रोगोत्पादक शत्रुओं को रोक सके।

आजकल आधे से अधिक क्षयरोगी ऐसे देखने में आते हैं जिन्हें पहले वीर्य्य विकार था। किन्तु उस की चिन्ता न कर मैथुन कर्म में फंसे रहते थे। जिस से शरीर और फैंफड़े दुर्बल होने लगे। पीछे सहसा प्रतिष्याय होगया, प्रतिष्याय (ज़ुकाम) में भी मैथुन करना न छोड़ा। इस से खांसी भी आगई। साथ में ज्वर की मन्द गरमी भी रहने लगी इस अवस्था में भी वीर्य्य का अपव्यय बन्द न किया गया जिस से अन्त में उन्हें क्षय का शिकार बनना पड़ा। आयुर्वेदीय ग्रन्थों में लिखा है :—

"प्रतिष्यायादथो कासः कासात्संजायते क्षयः" अर्थात् ज़ुकाम से खांसी और खांसी से क्षयरोग उत्पन्न हो जाता है। यह बात आजकल के नवयुवकों में प्रत्यक्ष देखी जारही है।

यदि भारत में क्षयरोग से होनेवाली शोचनीय मृत्यु संख्या को कम करना चाहते हो। तो नवयुवकों की वीर्य्य रक्षा की ओर ध्यान दो, उन को ब्रह्मचारी बनाओ यदि आज के समान वीर्य्य नाश रहैगा तो क्षय का इसी प्रकार डंका बजता रहैगा और उस के संग्राम को रोकने में किसी की चींचपड़ न चलैगी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मादक पदार्थों का सेवन भी आज बड़ी अधिकता से हो रहा है, बड़े २ धनिक छिप छिप कर या प्रगटरूप से शराब के प्याले गट गटाते हुए भारत का गला घोटते हैं। कोकेन को खाकर अनेक युवा अपना काला मुंहकर शरीरों का सत्यानाश करते हैं। तमाखू का पीना तो आजकल इन्द्रभवन का सुख समझा जाता है, जैन्टिलमैन बनने के लिये तो इस की परमावश्यकता है, घड़ी घड़ी पर चुरट के बिना काम नहीं चलता, अपने बराबर वाले इष्ट मित्रों का आदर नहीं होता, पण्डितों को भी इस की आवश्यकता होती है। क्योंकि कम से कम ६ माशे हुलास को नाक में ठूंसे बिना कोई काशी का पण्डित नहीं हो सकता।

यदि रईस, उमराव, ताल्लुकेदार पान में तमाखू न खावें तो इन पीकदान बनानेवालों की फिर जरूरत ही न रहे। स्वदेशी कारीगरी को महती हानि पहुंचे। भंग, चरस गांजा ये चीजें तो योगियों के भूषण हैं, शिवजी की प्यारी हैं, इन्हें छोड़ना तो एक प्रकार का पाप है, चंडू, मदक, अफीम ये राजा नवाबों को खुशकरने वाले हैं। जिस देश में ऐसे विचार वाले पुरुष हों, सब श्रेणी के पुरुष दुर्व्यसन में फंस रहते हों, वहां क्षय का डंका बजे तो आश्चर्य ही क्या है। इन मादिक पदार्थों के सेवन से भारत वासियों के फैंफड़े निर्बल होगये हैं, जिस से तत्काल यह बीमारी असर करजाती है। इन कारणों के बिना मिटाये क्षय रोग का आधिपत्य कम नहीं हो सका।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरिद्रता दरिद्रता भी क्षय का प्रधान देशव्यापी कारण है। आज बड़े २ धनिकों का पेट खाली है। ऊपर से टीम टिमाक बन रहा है, मोटरें दौड़ रही हैं, परन्तु भीतर ही भीतर चिन्ता, शोक की अग्नि धधक रही है, ऐसे पुरुषों को अवश्य क्षय होगा चाहे वे कैसी ही हिफ़ाज़त करें, इन कीटाणुओं से बचने के लिये कितने ही थूकदान रक्खें परन्तु वे बच न सकेंगे। जिन पुरुषों को पेट भर अन्न खाने को नहीं मिलता ऐसे पुरुषों की भी यहां कमी नहीं है, प्रतिवर्ष किसी न किसी प्रदेश में अकाल की कृपा हो जाती है, ऐसे पुरुषों के निराहार रहने से रक्तादि धातु नहीं बनते जिस से क्षयरोग उन पर आक्रमण कर और भी दुःख देता है।

क्षयरोग और नई सभ्यता नई सभ्यता भी भारतवर्ष में क्षय का बाज़ार गर्म कर रही है। जिस सभ्यता के रंग में प्रति शत नव्वे भारतवासी रंगते चले जा रहे हैं, वह ही इस दुष्ट रोग का पालन पोषण कर तिल का पहाड़ बना कर दिखा रही है वह नई सभ्यता क्या है ? बनावटी सुधार, पश्चिमीय गुणों को छोड़ दुर्गुण दुर्भेष का प्रचार। हा ! प्राचीन काल के मेधावी, तेजस्वी, ब्रह्मचारियों की छटा तीस कोटि भारतवासियों में से तीन सौ नवयुवकों में भी दिखाई नहीं देती। आजकल कौन सभ्य शिरोमणि है? जो अपने शरीर को परिश्रम नहीं देता, एक फर्लांग भी पावों चलना पसन्द नहीं करता, चार बातें करते ही मुखमण्डल पर मुक्ता समान स्वेद विन्दुओं को चमका कर अपनी कोमलता दिखाता है, चार सीढ़ी चढ़कर ही साठ वर्ष के बूढ़े के समान हांपने लगता है, घंटों साबुन के फैन से अपने शरीर को रिगड़ता है और फेन समान मुलायम शय्या पर सोना पसन्द करता है। जिसे बालों के काढ़ने और जूतों की सफ़ाई कराने में अपने बहु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य समय का अधिक भाग देना पड़ता है। तात्पर्य्य यह कि नये नवयुवकों के मस्तिष्कों में यह बात समाई हुई है कि शरीर को बहुत नाजुक, सुकुमार बनाना और इस ढंग से रहना कि जिस से सहयोगी मित्र मण्डली को कहीं अपने में पुराना गवांर-पन न मालूम देवे, नई सभ्यता है। इस नई सभ्यता में नई शिक्षा से भूषित कोई विरलाही माई का लाल होगा जो न फँसे।

ऐसे नई रोशनी वाले ही क्षयरोग की क्षुधाको शान्त करने के लिये आहार बनजाते हैं। जो मनुष्य कुछ परिश्रम करते हैं, व्यायाम करते हैं, शरीर को कुछ परिश्रमशील और दुःख सहने योग्य बनाते हैं, ऐसे पुरुषों क इस रोग के झपाटे में आने में चार घड़ी लगती हैं। नवयुवकों को धार्म्मिक और स्वास्थ शिक्षा न मिलने से वे वीर्य्य रक्षा की तरफ़ भी किञ्चिन्मात्र ध्यान नहीं देते, जिस से दूषित वीर्य्यवालों को क्षयरोग होने में देरी नहीं लगती।

स्त्रियों में भी यह नई सभ्यता घुस पड़ी है। पानी लाने के लिये बर्तन मांजने के लिये कहार; रसोई पकाने के लिये रसोई-दार जिस के घर न हो वह ही बस घटिया, निर्धन और भद्दा पुरुष है। नई सभ्यता स्त्रियों को इस बात के लिये मजबूर कर रही है कि वे हाथपर हाथ रख के बैठी रहें या टूटी फूटी हिन्दी पढ़ उपन्यासों की उपासना करें और कमल को भी लज्जित करनेवाला अपना कोमल शरीर बनाकर अपने अबला नामको चरितार्थ करें। कौन ऐसा नया सभ्य होगा जो अपनी स्त्रियों को भद्दी पुरानी चाल में पड़ी रखना पसन्द करता हो, गांवों के देखे शहरों में नई सभ्यता का अधिक प्रभाव है। वहां पर अधिकतर युवा इस के भक्त हैं। थोड़ा ही समय हुआ हमको एक शहर में नये सभ्य मिले, और उन्होंने कहा कि वैद्य-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी ! चार महीने से मेरे शिर में बड़े ज़ोर से दर्द हुआ करता था और इस दर्द का कारण बहुत खोजने पर यह निकला कि पहले मैं अपने शिर के नीचे "सुरखाव के परों का तकिया" लगाया करता था उसे न लगाकर रुई का तकिया लगाने लगा, ऐसे २ सुकुमार युवकों की शहरों में कमी नहीं है । शहरों के देखे गावों में क्षयरोग से कम रोगी होते हैं, इस के कई कारणों में एक कारण यह भी है कि वहां नई सभ्यता का रंग कम जमा है । इस विषय में डाक्टर विलसन ने कहा है ।

In towns three times as many people die from consumption than is the case in the country. The explanation of this fact is to be found in the difference in the habits of town and country dwellers.

अर्थात् गावों के देखे शहरों में क्षय से जो तिगुने आदमी मरते हैं इस विषय का मुख्य कारण यह है कि गांव और शहरों के रहनेवाले पुरुषों के रहन सहन में बहुत बड़ा अन्तर होता है ॥

गांव वाले सम्पूर्ण दिन खुली हुई पवित्र हवा में श्वास ले सकते हैं, वहां मकान इतने ऊंचे और घने नहीं होते जिन में शुद्ध हवा और रोशनी न जासके । किसी दूसरे गांव या किसी मित्रसे मिलने को जाने के लिये रेलवे, ट्राम, मोटर की सवारी नहीं मिलती जिससे उन्हें कुछ परिश्रम कर के जाना पड़ता है, खुली हवा और सूर्य्य का प्रकाश भी साथ ही साथ मिलता है । वे अपने जीवन को सादगी के साथ व्यतीत करते हैं, रोकड़ा पैसा पास न होने से गांजा, भांग, दारू, ताड़ी आदि पीने की लालसा भी कम होती है । कपड़ा मोटा पहनते हैं ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और खाना सादा खाते हैं जिस से उनका शरीर बलिष्ट रहता है फैफड़े मज़बूत होते हैं।

शहर वाले ऐसी गलियों में, जहां घने ऊंचे मकान, तंग रास्ता और दर्वाज़े पर ही पाख़ाने होते हैं, रहते हैं। मकान का किराया मंहगा होने से थोड़ी जगह में बहुत से आदमियों को रहना पड़ता है रात्रि में मकान को बन्द कर के सोते हैं। मिल, जीन, प्रेस, आदि कारख़ानों में काम करने वाले मजदूरों को खुली हवा नहीं मिलती प्रत्युत तेल, ग्यास का धूंआ कोयला के रजकण, रूई का रूंआं उन के श्वास के साथ जाता रहता है। इस से फैफड़ों और श्वास नलिका में गर्द जम जाती है। मज़दूर लोग अपनी पाई हुई मज़दूरी को दुराचारों में ख़र्च करते हैं। बड़े आदमी अपना वैभव और रईसीपन दिखाने के लिये बड़े २ ठाठ से रहते हैं। सैकड़ों रईस तो ऐसी नवाबी सभ्यता दिखाते हैं कि पाख़ाने से आने पर अपने हाथों से पैरों को भी नहीं धोते, जुर्राब तक नौकर ही पहनाते हैं। अपना जीवन वेश्या सहवास से सार्थक समझते हैं। मादक पदार्थों को सेवन कर दिन में आंखें मीचे हुए योगियों का स्वांग दिखाते हैं। इन कारणों से शहर वालों के शरीर" बताशे के महल" कहाने वाले होते हैं। और फैफड़े निर्बल होते हैं अतएव क्षय रोग इन लोगों को इन के किये का फल चखाता है।

पहले समय में स्त्रियों को अपने २ घर में अनेक काम करने पड़ते थे। पानी खींचना, चून पीसना, रोटी पकाना आदि, जिस से उन का शरीर पुष्ट और फैफड़े मज़बूत रहते थे। जिन देशों में आज भी इन कामों के करने का रिवाज है उन देशों की स्त्रियां बहुत मज़बूत हैं तथा उन की सन्तति भी अच्छी होती है, डाक्टर ऐल्फ़स्टोन, एम० डी० लिखता है कि "There is a great

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

advantage of carrying burdens on the head to prevent consumption" अर्थात् शिर के ऊपर उच-काकर बोझा रखना क्षय रोग के न होने देने के लिये बहुत लाभ दायक है। किन्तु आज कल शहरों की तथा ऊंची जाति की स्त्रियां शारीरिक परिश्रम करने में अपना अनादर समझ त्यागती जाती हैं। इस से अब स्त्रियां भी क्षयरोग से अधिक पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त होती हैं।

सारांश यह है कि क्षयरोग फैफड़े की बीमारी है, और इस से बचने के लिये फैफड़ों का बलिष्ट रखना परमावश्यक है। फैफड़े बिना परिश्रम तथा उचित व्यायाम किये ठीक नहीं रह सकते आज कल की सभ्यता हमको दीर्घ सूत्री आलसी बनाती है इस से भारत के नवयुवकों को अपनी पुरानी सभ्यता न छोड़ कर परिश्रमशील बनना चाहिये।

भारत के सुपूतो! भारत को पूर्ण सुखी, सर्वोच्च सिंहासन पर बिराजमान करने की कामना करनेवाले कमनीय कान्ति नव-युवको! यदि आपलोगों में सच्चे सुधारों की, और भारत को पूर्ण निरोगी रखने की कांक्षा है तो अपनी इस नई सभ्यता की जांच करो अपने मुखों को दर्पण में देखकर प्राचीन समय के एक छात्र के मुख से मिलान करो, प्रोफेसर वीकमैन के शिक्षाप्रद इस लेख को ध्यान से याद रखना :—

" My advice is do not to make the foolish नि. mistake of taking it for granted that your lungs are in perfect condition, and that it is not necessary to give them any special care. In reality you are walking on the edge of

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

precipice. Bear this in mind. It is utterly impossible that your lungs should be in good condition unless you give them abundent exercise. Remember it is the one organ in the body that demands contiuual exercise in order that it may remain healthy. Remember thatitis the organ that would show the result of the lack of exercise first, even in the best sdecimen of manhood that ever lived. Therefore if you do not practise breathing regularly, you may be positive that your breathing power is deficient even though your chest may be as large as that of a Somson and your health every-thing that you might desire. If more people realized the truth of the foregoing statement the death rate from pneumonia and consumption would be reduced one half in less than a year.

अर्थात् मेरी सम्मति ऐसी है " कि हमारा फेंफड़ा ठीक हालत में है और उनके विषय में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है " ऐसी मूर्खता भरी भूल तुम को नहीं करनी चाहिये। सच पूछो तो एक ऊंचे स्थान के किनारे पर (जिसपर से थोड़ी सी भूल से मनुष्य गिरजाता है) तुम चलते हो ऐसा ध्यान रक्खो। फेंफड़ों को पूरी कसरत दिये विना उन को स्वास्थ दशा में रखना बिल्कुल असम्भव है। याद रक्खो कि सम्पूर्ण शरीर में फेंफड़ा मुख्य कर एक ऐसा भाग है कि जिसे निरोग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखने के लिये कसरत देने की विशेष आवश्यकता है। ध्यान रक्खो कि अबतक अच्छी से अच्छी स्थितिवाले पुरुष के शरीर में भी कसरत न करने के दुष्ट परिणाम को सब से पहले बतानेवाला यह फैंफड़ा ही है। इस से जो तुम्हारी छाती सैम-सन पहलवान के समान भी विशाल हो और तुम्हें अपनी आरो-ग्यता में कोई त्रुटि न मालूम पड़ती हो तो भी जो तुम नियमानु-कूल प्रतिदिन दीर्घ स्वास लेने की क्रिया नहीं करते तो यह ठीक मानना कि तुम्हारे फेंफड़ों की क्रिया दोष भरी हुई है। ऊपर कहा हुआ उपदेश प्रजावर्ग का बड़ा समूह कर निकले तो निमो-निया और क्षयरोग से होने वाली मृत्यु एक ही वर्ष में आधी रहजावे।

क्षयरोग और अपवित्रता पश्चिमीय विद्या के प्रभाव से भारत वासियों की छूतछात, और नित्य कर्म्म एक ढकोसला समझे जाने लगे हैं। खाने पीने में चौका चूल्हे का विचार बहुत भद्दा गिना जाता है। होटलों, और तन्दूरखानों का रिवाज बढ़ रहा है तन्दूरखानों में सामान उत्तम नहीं बनता। चून के साथ सुरैरी, मच्छर, कंकड़ी और रेती आदि मिले रहते हैं। पानी साफ़ नहीं होता। चून माड़ना रोटी सेकना आदि सब ही विधि हीन कार्य्य होते हैं। चौके का स्थान अति संकीर्ण दुर्गन्धित होता है। चौके की मोरी अति गन्दी होती है। इस प्रकार सब प्रकार से दुर्गन्धित वायु होजाता है। अनेक मनुष्यों का समा-गम से भोजन होता है। और उन में कभी २ ऐसे मनुष्य भी आ मिलते हैं, जिन्हें दाद, खाज, कुष्ठ, कफ विकार आदि संक्रा-मक रोग होते हैं। जिन के संसर्ग से एक से दूसरे को रोग लग जाता है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्य है उन महर्षियों को जो भोजन विधि इस प्रकार से बतला गये हैं कि मनुष्य को स्वयं पाकी होना चाहिये, अथवा गृह की स्त्री के हाथ से ही बनाहुआ भोजन खाना चाहिये। इस नियम में कैसी दूरदर्शिता है। शरीर ही लोक का साधन है उस शरीर का पोषण भोजन से होता है। अतएव भोजन जहांतक हो सके उत्तम और पवित्र होना चाहिये। उत्तम भोजन से शरीर और मन दोनों स्वस्थ और सतोगुणी होंगे। विकार युक्त अस्वच्छ भोजन शरीर को रोगी और मन को मैला बना देगा। इस ही सिद्धान्त को लेकर पहले ऋषियों ने चौका की रीति निकाली है। यदि भोजन घर में बनेगा तो चौका की शुद्धि, अन्न की शुद्धि, और अपने शरीर की शुद्धि आदि सब अनुकूल होगा। साथ में भोजन करने वाले भी प्रायः समान स्वभाव वाले मिलेंगे। चौका होने से एक दूसरे में संक्रामता न होगी। शुद्ध जल वायु की प्राप्ति होगी॥

क्षयरोग और नित्य कर्म्म का नाश

ऋषियों ने नित्य कर्मों की सृष्टि भी बड़े विचार से की थी, जिसका पालन करने से अन्य रोगों के समान क्षय रोग भी अधिक नहीं होता था। सदाचार का पालन करते हुए पूर्वज मनुष्य बलवान् और सुखी रहते थे। किन्तु इस समय भारत वासियों का नैत्यक कर्म्म प्रायः नष्ट हो चुका। ऊषः काल उठना, गो सेवा करना, प्रातः सायं हवन करना, वलिवैश्व देव, ईश्वर का स्मरण, वस्त्र शुद्धि, स्नान, अछूत जातियों का अस्पर्श, दूषित पुरुषों की छाया से भी बचना प्रत्येक व्यवहार में स्पर्शास्पर्श का विचार, स्वच्छजलपान, सत्य भाषण, ब्रह्मचर्य्यव्रत, व्यायाम आदि कर्म्म भारत से बिदा होकर न मालूम किस कन्दरा में पड़े हुए हैं। ये ढकोसला भरी बातें नहीं हैं किन्तु इन बातों में परमतत्व भरा हुआ है। ऊषः काल उठने से निद्रा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथा प्रमाण होगी, आलस्य न होगा, प्रातः काल की सर्वांग पुष्टिकारी वायु मिलैगी, गो सेवा से शारीरिक दुष्ट वायु का ह्रास होगा। गौके गोबर और मूत्र से मकान शुद्ध रहैगा, शुद्ध दुग्धघृत दधि खाने को मिलेंगे, जिस से शरीर पुष्ट होगा। बाज़ारू विकार युक्त चीज़ों से छुटकारा मिलैगा। ईश्वर भक्ति से, मन पवित्र, और आध्यात्मिक शक्ति की वृद्धि होगी, लोभ ईर्षा आदि दुर्गुण दूर होंगे, वस्त्रों की शुद्धि और स्नानादिकों से शारीरिक स्वच्छता रहैगी। शरीर के भीतर स्रोतों द्वारा शुद्ध वायु प्रविष्ट होगा। छूत अछूत के विचार से संक्रामक रोग एक से दूसरे पर आक्रमण न करेंगे। हवन बलिवैश्वदेव आदि से श्रौत स्मार्त कर्म्मों के साथ २ गृहशुद्धि भी होगी। प्राणायाम संध्या से भीतरी दुष्ट वायु बाहर निकल जायगी। अधिक क्या कहें महर्षियों के प्राचीन नियम पूर्ण विज्ञान से भरे हैं, उन के नाश होने से ही आज क्षय के समान संक्रामक रोगों की अधिकता होरही है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षय को उत्पन्न करने वाले रोग

निदानार्थं करो रोगो रोगस्याप्युपजायते ।

क्षयरोग कभी अपने कारणों से उत्पन्न होता है और कभी किसी रोग से । आजकल क्षय रोगियों में प्रतिशत ८० ऐसे रोगी देखे जाते हैं जिन्हें किसी दूसरे रोग से क्षय उत्पन्न हुआ। हमने अपने अनुभव से जाना है कि प्रतिशत पचास से भी अधिक रोगी प्रतिष्याय के बिगड़ने से होते हैं । जब हम क्षयवाले रोगी से प्रश्न करते हैं कि क्या तुम को रोग होने से पहले जुकाम हुआ था ? तो वह हां कहता हुआ ही मिलता है ? शीत ज्वर की गरमी शेष रहजाने से स्त्रियों के गर्भावस्था के या प्रसूत ज्वर से, मोतीझरा या चेचक की गरमी से, प्रमेह, उपदंश या किसी दुष्ट व्रण से, वह मूत्र से, खांसी से, प्रायः क्षयरोग की उत्पत्ति अधिकतर देखी जाती है । जब इन रोगों में ज्वर की गरमी रक्तादि धातुओं में अनुलोम या प्रतिलोम गति से प्रवेशकर उनका क्षयकर निकलती है और रक्त की कमी होने से फैफड़े निर्बल होने प्रारम्भ होजाते हैं, अग्निमांद्य होता है, तब ही यह समझ लेना चाहिये कि अब क्षय के पधारने में देरी नहीं है, किसी रोग की दुर्बल अवस्था में स्त्री संग करने से क्षयरोग के पञ्जे में फंस कर अपने जीवन को नष्ट करना पड़ता है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षयरोगियों की कुछ आख्यायिकायें

(१) मुझे प्रथम प्रतिश्याय हुआ था उस में असावधानी करने से कुछ दिन पीछे कास हो गया वह कास कासघ्न औषधियों से कभी न्यून भी होजाया करता था परन्तु थोड़ा २ अब तक विद्यमान है, अब कास के साथ रुधिर की लालिमा भी आने लगी है। कुछ दिन से सायंकाल की ओर शरीर शिथिल भी होजाता है। भूख कम लगने लगी है। भोजन पर रुचि नहीं है॥

(२) प्रथम मुझे ज्वर आया था, और वह कभी साधारण गोलियों से चलाजाता और फिर आजाता, परन्तु भूख पहले से ही कम रहने लगी। कुछ दिनों से खांसी भी उठने लगी है रात को जब सोते से उठना चाहता हूं खांसी ज़ोर पकड़ जाती है। ज्वर की उष्मा अब थोड़ी बहुत हर समय रहने लगी है।

(३) मैं रुई के पेच में नौकर था वहां रुई उठाने का काम करता था, रुई के रूआं से मुझे कास होगया, गला दुखने लगा, मैंने एक अत्तार से खांसी की गोलियां लेकर खांई जिस से खांसी और भी खुश्क होगई। गले में खराश ज्यादा होगई, खांसते २ मुझे कफ के साथ खून का डोरा आने लगा।

(४) पहले मुझे मलावरोध रहता था, इस के लिये एक अनाड़ी हकीम ने दस्त करा दिये; वह दस्त मेरे न मिटे, भूख कम होगई, परन्तु मैं खाता पीता रहा, एक दफे मुझे सर्दी लग गई जिस से प्रतिश्याय हो गया और ज्वर की गरमी रहने लगी—अब मैं चल फिर नहीं सक्ता और खांसी पीछा नहीं छोड़ती।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) मैं पहले फ़ौज में नौकर था-परिश्रम खूब करता घोड़े पर मीलों दौड़ता-घोड़े के पीछे भागता। एक समय मुझे सर्दी होगई और मैंने उसकी परवा न की, और घोड़े से फिर भी काम करता रहा, अब मेरी छाती दुखती है, और गले में धूआंसा उठकर खांसी आती है, जिस के साथ खून आता है, शरीर दिन पर दिन सूखता है छाती का दर्द चैन नहीं लेने देता।

(६) मुझे प्रमेह होगया था-जो बरसों रहा-बीच २ में जुकाम होने लगे। पेशाब के साथ सुफेदी जाने लगी-चहरा मेरा सुफेद पड़गया—पीछे खांसी होगई। खांसी कभी २ उठती है परन्तु ज्वर की गरमी हो आती है, इस से हाथ पांव और आंखों में जलन रहती है। भूख दिन प्रति दिन गिरती जाती है।

(७) मैं बहुत भोजन करता हूं परन्तु तौ भी रहता हूं दुबला ही-हां मुझे स्वप्नदोष तौ है। चहरा पीला पड़गया है। रात्रिको दो एक दस्त भी होजाते हैं-खांसी भी रहने लगी है॥

(८) मुझे प्रदर हो गया था-इस की चर्चा मैंने गुप्त रक्खी शरीर मेरा गिरा पड़ा रहता परन्तु काम करना मैंने नहीं छोड़ा, पीछे ज्वर आगया। अब खांसी भी है मुझे ६ महीने होगये।

(९) मेरे एक बच्चा हुआ-उस समय न्हाने धोने से सर्दी होगई, जिस से ज्वर आगया-मैंने कुछ ध्यान न दिया, बीच बीच में ज्वर छूटता भी रहा, अब मैं उठ बैठ नहीं सकती; ज्वर, खांसी, श्वास सताते हैं, खाना नहीं पचता—

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ क्षय के पूर्वरूप ❀

क्षय के पूर्वरूप– छींक आना, जुकाम ज्यादा होना, बार २ कफ निकलना, मुख मीठा २ रहना, अरुचि, निर्दोष पदार्थों में दोष दर्शन, भोजन के पश्चात् हल्लास अथवा बमन, मुख का सूखना, हाथों का बार २ देखना, नेत्रों का श्वेत होना, भुजाओं मुटाई जानने की इच्छा करना, स्त्रियों से रमण करने की, निर्बल की होने पर भी, अधिक इच्छा होना, घृणा होना, शरीर का भयंकर दीखना, स्वप्न में सूखे जलाशय, शून्य नगर और शुष्क बन दीखना तथा टूटे वृक्ष, और मयूर बन्दर, सर्प, कौआ, घुग्घू आदि दीखना; बाल, हड्डी और अंगारों के ढेर, दीखना; ये सब राज यक्ष्मा के पूर्व रूप शास्त्रों में वर्णित हैं।

❀ पूर्व रूप में ऐसे लक्षण क्यों होते हैं ❀

(१) प्रतिष्यायादि– मस्तिष्क शक्ति के बिगड़ने से तथा वीर्य्य बिकार जनित निर्बलता से ॥

(२) अन्न में अरुचि आदि– आमाशय के बिगड़ जाने से ॥

(३) हाथों का बार २ निरीक्षण –मनोवृत्ति के बिगड़ने से, तथा शारीरिक दुर्बलता का मन के ऊपर सहसा प्रभाव पड़ने से ॥

(४) दुःस्वप्नों का दीखना — धातुओं की कमी के कारण तथा भावी भयंकरता प्रतीत होने से ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ क्षय रोग की तीन अवस्थाएँ ❀

यह रोग अपना अंकुर इस रीति से जमाता है कि उसका ज्ञान न रोगी को होता है और न दूसरे देखनेवालों को। कभी २ अच्छे २ वैद्य भी चक्कर में पड़जाते हैं। जब रोगी की दशा अधिक बिगड़ जाती है और इस रोग के लक्षण प्रत्यक्ष दीख निकलते हैं तब मालूम पड़ता है कि इसे प्राण घातक क्षयरोग है। क्षयरोग की प्रथमावस्था में जो जो हालतें होती हैं उन की जानकारी प्रत्येक गृहस्थ और वैद्य को होनी चाहिये। क्योंकि इस रोग की प्रथमावस्था में ही सावधान होकर किसी योग्य वैद्य से रोग की पूरी चिकित्सा कराने पर ही रोग दूर होता है। रोग बढ़ने पर प्रतिशत एक भी मनुष्य का बचना कठिन हो जाता है।

आयुर्वेदीय ग्रन्थों में लिखा है कि क्षयरोग की प्रथमावस्था में तीन लक्षण अवश्य होते हैं। कन्धों और पसवाड़ों में खिचाव, हाथ पावों में जलन, ज्वर की मन्द गरमी—ये तीनों लक्षण रोगी को मामूली से मालूम देते हैं, वह जानता है कि किसी ताक़त वर दवाखाने से यह रोग दूर हो जावेगा। इन लक्षणों से रोगी को विशेष कष्ट तो होता नहीं अपना काम काज करता रहता है किन्तु रोगी का शरीर थोड़े ही दिनों में घटने लगता है। और कभी २ खांसी का एक दो ठसका आ निकलता है। ज्वर की मन्द गरमी दस पाँच दिन को कम हो जाती है और रोगी को अपनी दशा सुधरी हुई मालूम देती है, वह समझता है कि अब मुझे कोई रोग नहीं है खाते पीते रहने से ताक़त आजावेगी। किन्तु थोड़े ही दिन पीछे फिर गरमी बढ़ने लगती है। रोगी के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेत्रों में कुछ २ नीलाई लिये सुफेदी आजाती है। शरीर में रक्त की कमी होने से सुरखी के स्थान में सुफेदी मालूम देती है। किसी २ को मूत्र के साथ में वीर्य्य भी निकलता है। अनेक रोगियों को जुक़ाम का दौरा होने लगता है। थोड़े दिन पश्चात् खांसी कुछ बढ़जाती है। रोगी बार २ खांसता है किन्तु कफ नहीं निकलता—यह खांसी ऐसी होती है जिसे रोगी यह जानता है कि यह मामूली दवा से दूर होजावेगी। ऐसी अवस्था में रोगी कभी तो प्रमेह समझ बलकारक औषधियां खाता है। कभी ज्वर समझ सूखी रोटी और दाल खाकर ही उसे मिटाना चाहता है, कभी खांसी समझ गरम दवाइयों की गोलियां ही निगलता है, परन्तु इन उपचारों से कुछ भी यथार्थ लाभ नहीं होता। दो चार दिन को तसल्ली होकर फिर पूर्ववत् स्थिति पर ही पहुंच जाता है। कभी २ रोगी को मलावरोध भी रहने लगता है। ऐसी ही अवस्था (यदि कोई बीच में अधिक दुर्बल करनेवाला कारण उपस्थित न होजावे तो) साल २ भर तक रही आती है और रोगी गिरता पड़ता अपनी शरीर रूपी गाड़ी को ढकेलता चला जाता है। केवल शरीर का वज़न थोड़ा २ शनैः घटता रहता है। छाती के ऊपर का मांस कम होता जाता है जिस से पसलियां चमकने लगती हैं। सीढ़ी चढ़ने में दम फूलने लगता है, माथे में थोड़ा भारापन और श्वास लेने में कुछ २ रुकावट सी मालूम देती है। उपर्युक्त दशा ही रोग की प्रथम कक्षा है। और क्रमशः ये ही लक्षण देखने में आते हैं। किसी २ रोगी को ऐसा भी देखा गया है कि कभी २ ज्यादा खांसने पर कफ के साथ रुधिर का डोरासा या विन्दु आजाता है। इस प्रथमावस्था में जो वैद्य रोगी के बल का ध्यान न कर केवल मलावरोध मिटाने को तीक्ष्ण विरेचन करा देते हैं या ज्वर को दूर करने के लिये काथों की भर मार या गरम औष-धियों का उपयोग करते हैं वे रोगी को बलात् काल के गाल में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढकेल देते हैं। ऐसा करने पर जो अवस्था सालभर पीछे होने-वाली थी वह विरेचन के पश्चात् तत्काल होजाती है। कभी २ ऐसे रोगी को ऋतुओं का दुष्ट प्रभाव भी एक दम दूसरी कक्षा में पहुंचा देता है। रोगी की प्रथमावस्था में शीत ज्वर का (मैलेरिया) प्रकोप होने से या किसी दोषी ज्वर के आजाने से रोगी दुर्बल होकर बहुत जल्दी खाट पर पड़ जाता है।

दूसरी अवस्था में प्रधानता से छः लक्षण होते हैं—खाने में अरुचि, श्वास का अधिक चलना खांसी, कफ के साथ खून आना, स्वर भेद, और ज्वर—इस अवस्था में फैफड़ों के अधिक कमज़ोर होजाने से उस में रक्त का कफ या पीब बनने लगता है। अब रोगी का कफ भारी-सुफेद या नीला कभी कुछ पिलाई लिये हुए आता है। कभी २ अधिक खांसने से कफ के साथ रक्त भी आ निकलता है। फैफड़ों के भीतर छोटी २ फुन्सियां या छाले हो जाते हैं, रोगी को दिन निकलने से पहले खांसी बड़े ज़ोर से उठती है, जिस से रोगी बेचैन होजाता है। ज्वर जो पहले मन्द रहता था अब ऊपर आने लगता है धातुएं जल्दी २ क्षीण हो निकलती हैं, रात्रि में पसीना भी बहुत आता है, ओढ़ने बिछाने के कपड़े भीग जाते हैं, चहरे पर तो रौनक मालूम देती है, परन्तु शरीर अस्थि मात्र निकल आता है, आवाज साफ नहीं निकलती। फूटे हुए कांसे के समान आवाज होजाती है। अग्नि मन्द होजाती है, जिससे न रोगी को खाने में रुचि होती है और न खाया हुआ आहार पचा ही सक्ता है। इस अवस्था में रोगी अपने आप उठ बैठ सकता है, तथा मकान में लकड़ी के सहारे कुछ डोल फिर सकता है।

तीसरी अवस्था में रोगी खाटसे उठबैठ नहीं सकता फैफड़े बहुत निर्बल होजाते हैं फैफड़ों में व्रण होने से उन में गढ़े पड़

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते हैं जिन में कफ और पीब भर जाता है जब खांसी उठती है तब एक दम–दुर्गन्धित भारी कफ बाहर निकल पड़ता है। रोगी के शिर पर पसीना आता है। हांफनी चलती रहती है। जिस तरफ का फेंफड़ा ज्यादा निर्बल या बिगड़ा होता है उस ही फफड़े के दबने से खांसी बड़े ज़ोर से उठती है जिस से रोगी उस पसवाड़े से सो नहीं सकता। मूत्र के साथ धातु अधिक आती है दस्त पतले हो निकलते हैं भूख जाती रहती है कभी २ खून का दौरा भी होता है ऐसी दुरवस्था रोगी को जतलाती है कि तुम्हारा आयु रूपी दीपक जल्दी बुझने वाला है मृत्यु के कुछ दिन पहले रोगी के पावों पर सूजन आजाती है और सुस्ती अधिक रहने लगती है।

क्षय रोग को पहचानने के लिये तथा रोग की कमी वेशी जानने के लिये सदैव अपने बलकी जांच करो– यदि शरीर की तोल दिन प्रति दिन कम होती जाती है तो जान लो कि मुझे क्षय रोग में फंसना पड़ा और रोग शनैः२ बढ़ रहा है। यदि शरीर का वजन बढ़ता है तो समझो कि मैं स्वास्थ्य लाभ कर रहा हूं।

रोग की साध्यता असाध्यता जानने के लिये रोगी के कफ को किसी पानी भरे पात्र में डालो यदि कफ पानी में तैरता रहे तो यह जाने कि रोगी अभी चिकित्सा के योग्य है अभी कफ के साथ पीब या धातु का आना शुरू नहीं हुआ यदि बलग़म पानी में डूब जावे तो रोग को आराम होना कठिन समझो।

फेंफड़ों की ख़राबी जानने के लिये यह उपाय है कि रोगी से कहो कि एक श्वास को खींचकर उसे धीरे २ से निकालो और (श्वास छोड़ते समय) धीरे२ एक दो गिनती गिनो यदि उसका श्वास २५-३० गिनती तक छूटता है तो समझो कि इसका फेंफड़ा ठीक है और अभी इसका उपाय किया जा सकैगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षय रोग का शास्त्रीय विचार

राजयक्ष्मा के दो मार्ग

क्षय रोग, अनुलोम और प्रतिलोम इन दो मार्गों द्वारा होता है। अनुलोम सीधा और प्रतिलोम उलटा होता है। अनुलोम क्षय में प्रथम रस से लेकर यथाक्रम शुक्र पर्य्यन्त धातुओं का क्षय होता है। सब से प्रथम रस बिगड़ता है यथा--

रसः स्रोतःसु रुद्धेषु स्वस्थानस्थो विदह्यते
स ऊर्ध्वं कास वेगेन बहुरूपः प्रवर्त्तते

रसवाही स्रोतों के रुकजाने से आहार का रस सम्पूर्ण शरीर में फैलने नहीं पाता–किन्तु आमाशय में ही रह विदग्ध होजाता है। यह विदग्ध रस कास के वेग से ऊपर जाकर अनेक रूपों द्वारा बाहर को निकलता है। इस प्रकार कारण भूत रस के क्षय होनेपर कार्य्य रूप रक्त मांसादि भी क्षीण होते जाते हैं।

प्रति लोमक्षय में पहले वीर्य्य बिगड़ता और क्षय होता है तदनन्तर उलटे मज्जा, अस्थि मांस, रक्त, और रस क्षीण होते जाते हैं यथा—

अति व्यवायिनोवापि क्षीणे रेतस्यनन्तरः
क्षीयन्ते धातवः सर्वे ततः शुष्यतिमानवः

जो पुरुष अत्यन्त मैथुन करता है उस का वीर्य्य क्षीण हो जाता है। वीर्य्य क्षीण होने से वायु दुष्ट हो समीपवर्ती मज्जादि उलटी धातुयों को शोषण करता है यही प्रतिलोम क्षय है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यक्ष्मा के सामान्य लक्षण

अंस पार्श्वाभिघातश्च, संतापः करपादयोः ।
ज्वरः सर्वाङ्गगश्चेति लक्षणं राजयक्ष्मणः ॥

कन्धे और पसवाड़ों में खिंचाव । और दर्द होना-हाथ,पावों में जलन, और सम्पूर्ण अंग में ज्वर ये तीन लक्षण राजयक्ष्माके सामान्य हैं । राजयक्ष्मा वाले को जो ज्वर आता है उसे प्रलेपक कहते हैं और उस के लक्षण इस प्रकार हैं ।

प्रलिम्पन्निव गात्राणि घर्मेण गौरवेण च ।
मन्दज्वर विलेपीच सशीतः स्यात्प्रलेपकः ॥

जिस ज्वर में पसीना और गौरवता से लिपी देह के समान गात्र लिप्त हों मन्द ज्वर, अरुचि, और ठण्ड लगे वह प्रलेपक कहाता है । राजयक्ष्मी को ज्वर प्रायः दोपहर के पश्चात् बढ़ा करता ॥

राजयक्ष्मा का दोषों से सम्बन्ध

राजयक्ष्मा तीनों दोषों के बिगड़ने से होता है । जो दोष इस में अन्य दोषों से अधिक बिगड़ा होता उसही दोष का यक्ष्मा कहाता है शास्त्रों में भी यही लिखा है ।

एक एव मतः शोषः सन्निपातात्मको ह्यतः ।
उद्रेकात्तत्र लिंगानि दोषाणां निपतन्तिहि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिदोषवाद आयुर्वेदीय शास्त्रों में प्रत्येक रोग के प्रधान कारण दोष माने हैं। दोषों की दुष्टि से रोग और यथा प्रकृति होने से स्वाथ्य होता है। त्रिदोष विज्ञान बड़ा महत्व पूर्ण विषय है और हमारी चिकित्सा का गौरव स्वरूप है।

डाक्टर लोगों के समान हमारे यहां अप्रधान कीटादि अनेक कारणों को न मानकर सब रोगों के कारणों को तीन दोषों में ही लीन कर दिया है। इस विज्ञान तक अभी डाक्टर लोग नहीं पहुंचे हैं। निरपेक्ष पश्चिमीय विद्वान अब इस दोष विज्ञान की बड़ी प्रशंसा करते हैं। दोष विज्ञान सम्बन्धी एक अध्याय इस के पीछे ही पाठक पढ़ेंगे इस से आयुर्वेदीय दोष विज्ञान की गौरवता और विद्वता जान सकेंगे।

दोष भेद से लक्षण स्वर भेदो निलात् शूलं
संकोचश्चांस पार्श्वयोः ॥
ज्वरो दाहो तिसारश्च पित्तात् रक्तस्यचागमः।
शिरसः परिपूर्णत्वमभक्तश्छन्दरेवच ॥
कासः कण्ठस्य चोद्धंसो विज्ञेयः कफ कोपतः।

यक्ष्मारोग के ग्यारह लक्षण हैं उन में बात की अधिकता से स्वर भेद, कंधे और पसवाड़ों में खिंचाव, शूल, पित्तकी अधिकता से ज्वर, दाह, अतिसार और खून आना, कफ की अधिकता से शिर भारी रहना, अरुचि, खांसी और कण्ठ में फांसे सी पड़ना ये लक्षण होते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण भेद से शोष भेद और उन के लक्षण.

कारण और लक्षणों के भेद से शोष के व्यवाय शोष, शोक शोष आदि कई भेद शास्त्रों में कहेगये हैं। इन में त्रिदोष के समस्त लक्षण नहीं होते तो भी वे धातुओं को क्षय करने वाले होने से क्षय ही कहे जाते हैं पृथक २ लक्षण ये हैं।

(१) व्यवाय शोष के लक्षण

व्यवाय शोषी शुक्रस्य क्षयलिंगैरुपद्रुतः।
पाण्डु देहो यथापूर्वं क्षीयन्ते चास्य धातवः।

व्यवाय (मैथुन) करने से जो शोष होता है उस में शुक्र क्षय के लक्षण अर्थात् लिंग और अण्ड कोषों में पीड़ा, मैथुन में अशक्ति, मैथुन में अलप तथा अनेक वार वीर्य्य निकलना, आदि होते हैं शरीर पीला पड़जाता है पीछे वायु द्वारा मज्जादि यथा पूर्व धातुओं का क्षय होता है।

(२) शोक शोष

प्रध्यान शीलः स्रस्तांग-शोकशोष्यपि तादृशः

शोक शोषी पुरुष जिस वस्तु का रंज होता है उस के ही ध्यान में रहता है, इस से अंग शिथल हो जाते हैं तथा शरीर में पीलापन आदि व्यवाय शोषी के समान लक्षण भी होते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ वार्धिक्य शोष ❀

जरा शोषी कृशो मन्दवीर्य्य बुद्धि वलेन्द्रियः ।
कम्पनो रुचिमान् भिन्नकांस्य पात्र हतस्वरः ॥
ष्ठीवति श्लेष्मणा हीनं गौरवारतिपीडितः ।
संप्रस्रुतास्यनासाक्षः शुष्करूक्षमलच्छविः ॥
प्रसुप्तगात्रावयवः शुष्कक्लोमगलाननः ॥

जो मनुष्य बुढ़ापे के कारण सूखता है उसके ये लक्षण होते हैं-- शरीर कृश और वीर्य्य, बुद्धि, बल, इन्द्रिय ये मन्द हो जाते हैं, कम्प, और अरुचि होते हैं कांसे के फूटे पात्र के समान आवाज़ होजाती है, बिना कफ के थूकता है । भारापन और शरीर में हड़कल होती है, मुख, नासिका, और आंख से पानी गिरता है दस्त सूखा, और शरीर रूखा होता है-- गात्र व अवयव सो जाते हैं, मुख क्लोम, गला ये सूखा करते हैं ॥

॥ अध्व शोष ॥

अध्व प्रशोषीस्रस्ताङ्गः संभृष्ट परुषच्छविः ।

अधिक मार्ग के चलने से जो क्षय होता है उस में अंग शिथल हो जाते हैं तथा शरीर की कान्ति अग्नि में भुने पदार्थ के समान अर्थात् श्यामता लिये हो जाती है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ व्यायाम शोष ॥

व्यायाम शोषी भूयिष्ठ मेभिस्वे समन्वितः ।
लिंगै रुरःक्षतकृतैः संयुक्तश्च क्षतं बिना ॥

व्यायाम शोष में प्रायः अध्व शोष के समान लक्षण होते हैं तथा बिना क्षत के भी उरःक्षत के लक्षण हो जाते हैं ॥

॥ व्रण शोष ॥

रक्तक्षयाद्वेदनाभिस्तथैवाहारयन्त्रणाद् ।
व्रणितस्य भवेच्छोषः सचासाध्य तमोमतः ॥

व्रण वाले का शोष-- रक्त के क्षय होने से, व्रण की पीड़ा से, तथा आहार घट जाने से उत्पन्न होता है और वह असाध्य है ।

॥ उरः क्षत ॥

उरो विरुज्यते ऽ त्यर्थं भिद्यतेथ विभज्यते ।
प्रपीड्यते च तथा पार्श्वे शुष्यत्यंगं प्रवेपते ॥
क्रमात् बीर्य्यबलं वर्णो रुचिरग्निश्चहीयते ।
ज्वरो व्यथा मनो दैन्यं बिड् भेदो ऽ ग्निवधस्तथा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्टः श्यावः सदुर्गन्धः पीतो विग्रथितो बहु ।
कास मानस्य चाभीक्ष्णं कफः सास्टक प्रवर्तते
स क्षीयते ततोऽत्यर्थं तथा शुक्रौजसो क्षयम् ॥

अत्यन्त साहसजन्य कार्यों से उरुक्षत होता है जिस में रोगी की छाती बड़ी दूखती है, ऐसा मालूम होता है कि छाती को कोई विदीर्ण करता है अथवा दो टुकड़े किये डालता है । पस-लियों में दर्द, सम्पूर्ण अंगों का सूखना, तथा कंप होता है। क्रम से वीर्य्य, बल, वर्ण, रुचि, और जठराग्नि कम होते जाते हैं । ज्वर की व्यथा, मनकी दीनता, दस्त का पतलापन, अग्नि का नाश ये होते हैं, खांसी के साथ, दूषित, कालापन लिये, दुर्ग-न्धित, पीला, गांठदार बहुतसा रुधिर युक्त कफ आता है । रोगी वीर्य्य और ओज के क्षय हो जाने से निरन्तर क्षीण होता जाता है ॥-

क्षय के साध्यासाध्य लक्षण

सर्वैं रर्द्धैं स्त्रिभिर्वापि ।
लिंगैर्मांसबल क्षये ॥
युक्तो वर्ज्यश्चिकित्स्यस्तु सर्व रूपोप्यतोन्यथा ॥
महाशनं क्षीयमाणं मतीसार निपीडितम् ।
शूनमुष्कोदरं चैव यक्ष्मिणं परिवर्जयेत ॥
शुक्ला क्षमन्न द्वेष्टारमूर्ध्वश्वास निपीडितम् ।
कृच्छ्रेण बहुमेहन्तं यक्ष्मा हन्तीह मानवम् ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस रोगी के मांस और बल क्षीण होगये हों उस के सम्पूर्ण आधे या तीन ही लक्षण क्यों न हों परन्तु वह असाध्य है। और मांस और बल मौजूद होने पर चाहें सम्पूर्ण लक्षण हों परन्तु चिकित्सा के योग्य है। (१) जो क्षय रोगी अधिक भोजन करने पर भी क्षीण होता जावे जो अतिसार से पीड़ित हो, जिस के अण्ड कोष और उदर पर सूजन हो उस की चिकित्सा न करो। जिस क्षय रोगी के नेत्र सुफेद हों, अन्न में अरुचि, श्वास, मूत्रकृच्छ्र हों वह असाध्य है॥

ज्वरानुबन्ध रहितं बलवन्तं क्रियासहम्।
उपक्रमेदात्मवन्तं दीप्ताग्निमकृशं नरम्॥

जो रोगी ज्वर रहित, बलवान, क्रियाओं को सहने वाला, दीप्ताग्नि और लटा हुआ न हो उसे साध्य जान चिकित्सा करौ॥

अवधि

परं दिनं सहस्रंतु यदि जीवतिमानवः।
सुभिषग्भिरुपक्रान्त स्तरुणः शोषपीडितः॥

जो क्षय रोगी हजार दिन तक भी जीता रहे तौ जानो कि रोगी तरुण है और इस की अच्छे वैद्यों से चिकित्सा की गई है। भावार्थ यह है कि अधिक से अधिक हजार दिन क्षयरोगी यदि बीच में आराम न हुआ हो तौ जीवित रह सकता है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ दोष विज्ञान ❋

आयुर्वेद का दोष विज्ञान बड़ा महत्व पूर्ण विषय है इसे समझ लेना वैद्यों का आवश्यकीय कर्त्तव्य है। सम्पूर्ण संसार पञ्च तत्वमय है। और पञ्चतत्वों के गुण शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध भी सर्वत्र दीख पड़ते हैं। पञ्चतत्व शब्दादितन्मात्राओं से और तन्मात्रा अहंकार से अहंकार प्रकृति से उत्पन्न होते हैं। वास्तव में ये सब प्रकृति के कार्य रूप हैं। प्रकृति सत्व, रज, तम, इन तीन गुणों वाली है। ये तीन गुण ही रूपान्तर से तीन दोष कहाते हैं। इन का विवेचन बड़ा कठिन है हम यहां पर तृतीय वैद्य सम्मेलन के सभा पति श्रीमान् गणनाथ सेन जी के भाषण से त्रिदोष विज्ञान सम्बन्धी तात्विक विवेचन उद्धृत करते हैं।

शारीर क्रिया विज्ञान में त्रिदोषतत्व आयुर्वेदका एक अमूल्य रत्न है मानसिक क्रिया विज्ञान के लिये सत्व रज तम ये त्रिगुण हैं वैसे ही शारीर क्रिया विज्ञान के लिये वातादि तीन दोष हैं। इस विषय के तत्वों को न समझ ना समझ लोग आयुर्वेद पर मिथ्या आक्षेप किया करते हैं। परन्तु हमको आशा है कि कभी वह दिन आवैगा जब कि आयुर्वेद के इन तत्वों के विषय में सूक्ष्म दृष्टि जगत के सब ही विद्वानों के चित्त में सत्य कल्पना प्रस्फुरित होगी।

इस समय वायु का अर्थ (Wind) विंड (हवा) पित का अर्थ वाइल अर्थात पीले रंग का का तरल पदार्थ विशेष,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कफ का अर्थ बलगम समझ कर ही लोग आयुर्वेद की अप व्याख्या करते हैं। वास्तव में त्रिदोष तत्वों से शरीर की स्वाभाविक क्रियाओं के तथा शरीर की विकृत अवस्था की क्रियाओं के एवं चिकित्सा में भेषज प्रयोग करने के जो अपूर्व नियम बांधे हैं उन नियमों के एक वार समझने से महर्षियों का दिव्य ज्ञान देख कर सभी को विस्मित एवं मुग्ध होना पड़ता है।

प्रथमतः स्मरण रखना चाहिये वातादि दोष शरीर में दो रूप से अवस्थित हैं। धातुरूप, और मलरूप। धातुरूप तीनों दोष, सूक्ष्म और इन्द्रियों के अगोचर हैं केवल क्रियाओं को देख कर इनका अनुमान हो सकता है। इनकी स्वाभाविक और विकृत क्रियाओं के लक्षण ऐसे स्पष्ट हैं कि जिन्हें देखकर सूक्ष्म दर्शी मनुष्य को धातुरूप दोषों की सत्ता अवश्य माननी पड़ैगी। और मलरूप वातादि स्थूल एवं इन्द्रिय गोचर हैं जिनकी सत्ता सभी स्थूलदर्शियों को भी स्पष्ट प्रतीत होती है।

संक्षेप से कहा जासक्ता है कि "वा" गति गन्धनयोः इस धातु से वायु शब्द बना है गति रूपी जितनी क्रियाये हैं वह वायु की हैं गति रूपी क्रिया शरीर में क्या हैं प्रधानतः शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध को मन के पास पहुंचाना और पेशियों में वेग उत्पन्न करके चेष्टाओं का करना ही गतिरूप क्रिया है जो कि पाश्चात्य मत में "सेन्सेशन" Sensation "मस्क्युलर एक्शन Muscular Action कहे जाते हैं। चित में जो कुछ संकल्प विकल्पादि वृतियां होती हैं वे भी मनकी गतिरूप क्रिया है अतः वे भी वायु के कार्य्य हैं। पाश्चात्य मत में इसे 'इनट्रलेकशन' Intrellection कहा गया है। महर्षि चरक कहते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायुस्तन्त्र यन्त्रधरः प्राणोदान समान व्यानापान् प्रवर्तक श्चेष्टाना मुच्चावच्चानां, नियन्ता प्रणेता च मनसः सर्वेन्द्रियाणामु द्योतकः सर्वेन्द्रियाणामभिवोढा । च. सू. अ. १२

अर्थात् वायु शरीर के सब आशय, और यन्त्रों को धारण करता है, इन की क्रियाओं को चलाता है, इस वायु के प्राण, उदान आदि पांच स्वरूप हैं, हृदय, कण्ठ, उदर, त्वक् और गुह्य आदि स्थानों में इन के कार्य्य पृथक २ स्पष्ट रूप से देखे जाते हैं। वायु ही बड़ी और छोटी सब क्रियाओं का प्रवर्तक है, एवं मनकी वृत्तियों का निर्माणकर्त्ता तथा चालक है, वायु सब इन्द्रियों में चैतन्य देने वाला है और शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध इन क्रियाओं का बहन करता है इत्यादि। चरक के इस बचन को देख किस को न प्रतीत होगा कि पाश्चात्य पण्डित लोग जिसे "नर्वफोर्स" "Nerve force" कहते हैं। हमारे आचार्य्य, इस दुर्ज्ञेय वस्तु को "वायु" कहते हैं। षट् चक्र और नाडी मण्डल अंग्रेजी शास्त्र का प्रसिद्ध नर्वस सिस्टम् ही है Nervous System ही है। बिजली का पंखा और बिजली की गाड़ी आदि जबतक लोगों ने नहीं देखी थी जब तक कहने से विश्वास नहीं हो सकता था कि बिजली के द्वारा ऐसे २ अपूर्व कार्य्य हो सकते हैं। अब प्रत्यक्ष कार्य्य को देखकर मुटिया मजूर लोग भी बिजली की अपूर्व शक्ति को मान रहे हैं। ऐसे ही आचार्य्यों का कहा हुआ वायु का प्रमाण भी अब प्रत्यक्ष है। शवच्छेद कर के मस्तिष्क सुषुम्नादि को देखने से और जीवित प्राणी पर नाना विधि परीक्षा करने से प्रत्यक्ष देखने में आता है कि बिजली के समान कोई एक अपूर्व सर्वव्यापिनी शक्ति शरीर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हैं जिस के प्रभाव से शरीर के सब काम काटे चल रहे हैं। परन्तु अंग्रेज़ी मत से महर्षियों के मत का प्रभेद इतना ही है कि अंग्रेज़ी मतवालों ने नर्वफोर्स Nerve force को स्वीकार कर के उस को अज्ञेय कहकर छोड़ दिया है, और हमारे महर्षि लोगों ने अतीन्द्रिय ज्ञान से इस का स्वरूप वर्णन कर दिया है।

रूक्षः शीतोलघुः सूक्ष्मश्चलोथ विशदः खरः विपरीत गुणैर्द्रव्यैर्मारुतः सम्प्रशाम्यति ॥

अर्थात् "वायु" रूक्ष, शीत, लघु, सूक्ष्म, चल, विशद, और खर गुणों वाला है, इन के विपरीत गुण सम्पन्न द्रव्यों से वायु की शान्ति होती है। मूर्ख लोग समझते हैं कि वायु के गुण वर्णन स्व कपोल कल्पना है, किन्तु वे तनक विचार कर नहीं देखते हैं कि बिपरीत गुण द्रव्यों से जो वायु की शान्ति हो रही है, केवल इस बात से ही महर्षियों के दिव्य ज्ञान की सत्यता प्रमाणित हो रही है।

प्रकृतिस्थ वायु के विषय पर स्पष्ट कह के विकृत वायु के विषय में चरक पुनः लिखते हैं॥

"कुपितस्तुखलु शरीरं नानाविधैर्विकारै रुपत पति, वलवर्ण सुखायुषामुपघातम्य भवति, मनो व्यावर्त्तयति, सर्वेन्द्रियाण्युपहति" इत्यादि

अर्थात् कुपित वायु शरीर में आध्मान, स्तम्भ, रौक्ष्य आदि नाना विध विकारों को उत्पन्न करता है, मनुष्य का वल, वर्ण सुख और आयु को नष्ट करता है। मन की विकृति उपजाता है इन्द्रियों की शक्ति को नष्ट करता है। इत्यादि॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी कारण अंग्रेजी में जिन रोगों को Nervous Debility, Neuros thenia, आदि नाम से निर्देश करते हैं। वैद्य लोग उन सब रोगों को वायु ही समझते हैं। और अंग्रेज़ी में जिस मनुष्य को Nervons eurotic या Hysterical कहते ही हम लोग उन को बात प्रकृति कहते हैं। जिस बात प्रकृति का स्वरूप आचार्य्य लोग स्पष्ट लिख गये हैं "अधृतिरदृढ सौहृदः कृतघ्नः कृश पुरुषो धमनी ततः प्रलापी द्रुतगति रटनो नवस्थितात्मा" इत्यादि (सु० शा० ४ अ०) इन सब बातों को देख कर कौन स्वीकार न करेगा कि ऋषि लोग समग्र नाड़ी मण्डल की क्रिया को करामलक समान समझते थे और वायु इन दो अक्षरों में सब का अवरोध कर चुके थे। अत एव सुश्रुत स्पष्ट कहता है कि "प्रस्पन्द नोद्वहन पूरण विवेक धारण लक्षणो वायुः पंचधा प्रविभक्तः शरीरं धार यति" (सु० सू० अ० १५) अतः स्पष्ट प्रतीत होता है कि वायु का अर्थ हवा नहीं है, शरीर में उद्गार, अधो वायु आदि धातुभूत नहीं हैं यह मल भूत वायु रूप हैं इन के विषय में वायु का प्रसंग नहीं चला है ॥--

पित्त– "तप सन्तापे" इस धातु से पित शब्द बना है। शरीर में सन्ताप का मूल भूत जो कुछ सूक्ष्म अतीन्द्रिय वस्तु है "पित्त" उसी का नाम है। शरीर में जो कुछ तेजो गुण के कार्य्य होते हैं पित ही उन का परिचालक है। तेजो गुण के कार्य्य शरीर में कौन हैं ? शरीर के स्वाभाविक सन्ताप रक्षा (जिस से शरीर का सन्ताप ६८से ६८॥ डिगरी तक बना रहता है) और त्वक् की शोषण शक्ति, अन्न का विपाक, मन की तेजस्विता, दृष्टि की उज्वलता और रक्त का उज्वल लालवर्ण, ये ही तेजो गुण के प्रधान कार्य्य शरीर में है। इन कार्य्यों के मूल भूत तत्वों को आचार्य्य लोगों ने अतीन्द्रिय ज्ञान से प्रत्यक्ष कर लिया था

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब अंग्रेज लोग इस को कोई एक अज्ञेय (Heat prodncing mechanism) संताप देने वाला अतीन्द्रिय वस्तु कह के पुकारते हैं। पाश्चात्य विद्वान् कहते हैं कि निरन्तर शरीर में जो धातु क्षय हो रहा है। इसी धातु क्षय व धातु दाह से (Combstion) अग्नि गुण उत्पन्न हो कर शरीर का सन्ताप रक्षित होता है। चरक भी कहते हैं " अग्नि रेवहि पित्तान्तर्गतः कुपिता कुपितः शुभाशुभानि करोति स यदा नेन्धनं युक्तं लभते तदा देहजं रसं हिनस्ति" इस बचन का अभिप्राय यह है कि अग्नि के प्रभाव से शरीर के सब धातुओं का निरन्तर क्षय होता जाता है। उस क्षय की पूर्ति के लिये आहार रूप इन्धन पहुंचना चाहिये। अंग्रेज़ी मत के साथ ऋषियों के मत का इतना सादृश्य रहने पर भी स्मरण रखना चाहिये कि अग्नि केवल आहार रूप इन्धन से ही शरीर में अग्नि गुण सम्पन्न सर्व व्यापी पित्त की सत्ता का सूक्ष्मदर्शी महर्षि लोग स्वीकार करते हैं और कहते हैं "वात पित्त श्लेष्माण एव देह सम्भव हेतवः परन्तु अंग्रेज़ी मत वाले अभी तक उतनी सूक्ष्मता को नहीं पहुंचे हैं। इस धातु भूत पित्त का गुण क्या है ? जिस पर आचार्य्य लोग अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष करके कहते हैं॥

सस्नेह मुष्णं तीक्ष्णं च द्रवमम्लं सरं कटु।
विपरीत गुणैः पित्तं द्रव्यैराशु विशाम्यति॥

अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष कहने का अभिप्राय यह है कि यकृत से निस्तृत पीत वर्ण तरल पदार्थ पित्त के विषय में यह लेख नहीं है। क्योंकि उस में यह सब गुण वर्तमान नहीं दीख पड़ते ऋषियों के अतीन्द्रिय ज्ञान की सत्यता का अनुमान अब भी इस प्रमाण से हो सकता है। उपरि लिखित गुणों के विपरीत गुण सम्पन्न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रव्यों के उपयोग से नियत ही पित्त की शान्ति है। कुपित पित्त के लक्षण आयुर्वेद में जिस प्रकार कहे गये हैं यथा विस्फोटक, अम्लोद्गार, ऊष्मा आदि अब भी पित्त की शान्ति से शान्त होते हैं। अंग्रेज़ी में जिसे बाइल कहते हैं वह मल रूप वा किट्ट रूप पित है। धातु रूप पित के साथ इस का अर्थ मिलाना बहुत भूल है इस मल भूत पित का लक्षण आयुर्वेद में इस प्रकार है॥-

पित्तं तीक्ष्णं द्रवं पूति नील पीतं तथैव च।
उष्णं कटुरसश्चैव विदग्धं चाम्ल मेवच॥
(सु० सू० अ० २१)

श्लेष्मा—"श्लिष आलिंगन" इस धातु से श्लेष्मा शब्द बना है श्लेष्मा सोमगुणात्मक वस्तु है, पित के समान धातुभूत श्लेष्मा भी अतीन्द्रिय पदार्थ है। शरीर में तर्पण (तरावट रखना) श्लेषण (संयोजित रखना) पोषण आदि सोमधातु के सब कार्य्य श्लेष्मा का ही है। पित यदि अग्नि रूप है तो श्लेष्मा जल रूप है। केवल अग्नि से दाह मात्र होता है। जल से उस अग्नि की तीक्ष्णता दूर होती है। सब स्थानों पर तरावट पहुंचती है अतएव सुश्रुताचार्य्य कहते हैं।

सन्धि संश्लेषण स्नेहन रोपण पूरण बृंहण तर्पण बलस्थैर्यकृत् श्लेष्मा पंचधा पुनि भक्त उदक कर्मणानुग्रहं करोति॥

अर्थात्—सन्धियों का संश्लेषण (तैल के सदृश पदार्थ से चिकना रखना) स्नेहन (कण्ठ जिह्वादि स्थानों को तर रखना)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्न का क्लेदन, धातुओं का पूरण और पोषणादि जल के कार्य्य से कफ शरीर को तर रखता है। यदि शरीर में इस श्लेष्मा की तरावट न रहे तो शरीर थोड़े ही दिनों में दग्ध हो जावे। अतीन्द्रिय श्लेष्मा यद्यपि एक ही है, तथापि कार्य्य के अनुसार पित्त के सदृश इस के भी पांच विभिन्न रूप हैं जिन के नाम श्लेषक (Synovia) क्लेदक (Saliva) आदि रक्खे गये हैं धातु रूप श्लेष्मा के अतीन्द्रिय रूप का प्रत्यक्ष कर के आचार्य्य कहते हैं कि :-

गुरुशीत मृदुः स्निग्ध मधुर स्थिर पिच्छिता।
श्लेष्मणाः प्रशमं यान्ति विपरीत गुणैर्गणाः ॥

महर्षियों के इस उपदेश की सत्यता चिकित्सा के समय सभी को प्रत्यक्ष प्रतीत होती है, परन्तु स्मरण रखना चाहिये कि नासिका और मुख से जो श्लेष्मा गिरती है वह किट्ट या मल रूप है और उसके विषय में श्लेष्मा का शरीर धारकत्व नहीं कहा गया है, सुतरां धातुभूत कफ पित्त वायु के ही विषय में कहा गया है :—

विसर्गादान विक्षेपैः सोम सूर्या निला यथा।
धारयन्ति जगद्देहं कफ पित्तानिलस्तथा ॥

अर्थात् विसर्ग, आदान और विक्षेप से (तर्पण, शोषण, संधारण) चन्द्र, सूर्य्य और वायु जिस प्रकार जगत को धारण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं उसी प्रकार कफ पित्त और वायु भी शरीर को धारण करते हैं मल, मूत्र वायु, पित, कफ के विषय में स्पष्ट ही निर्देश है कि :-

पक्काशयन्तु प्राप्तस्य शोषमानस्य विह्निना।
परि पिण्डित पक्कस्य वायुः स्यात्कटुभावतः॥
किट्टमन्यस्य विरामूत्र रसस्य चकफोऽसृजः।
पितं मांसस्यच मलो मलः स्वेदस्तु मेदसः॥

(चरक)

वायु पित्त, कफ के विषय में शेष का वक्तव्य कहते हैं कि वायु पित्त कफ केवल शरीर के ही तीन स्तम्भ रूप हैं यही नहीं किन्तु समग्र आयुर्वेद में हेतु लक्षण, औषध के तीन स्कन्ध स्वरूप हैं। मनुष्य का वयः क्रम अहोरात्र, षड़ ऋतु, अन्न विपाक आदि सभी में वात पित्त कफ का प्रभाव महर्षियों ने स्पष्ट प्रतिपन्न किया है। जिस से कार्य्य में पूरी २ सहायता मिलती है ”।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षयरोग की चिकित्सा

❁ स्वास्थभवनों की आवश्यकता ❁

१

क्षयरोग जैसा कठिन है वसी ही इस की चिकित्सा भी कठिन है। क्षयरोग की चिकित्सा ऐसी नहीं है, जिसे साधारण वैद्य कर सके। क्षयरोग की चिकित्सा करने में ही वैद्यों की कार्य्य कुशलता और मस्तिष्क शक्ति देखी जाती है। क्षयरोग की आदि अवस्था में अच्छे वैद्य द्वारा चिकित्सा हो और उपचारक आदि शेष चिकित्सा के तीन पाद भी उत्तम हों तो रोगी कदाचित् बच सकता है। रोगी के दुर्बल होने पर रोग से मुक्त पाना कठिन नहीं किंतु असम्भव है, लोक में यह बात प्रसिद्ध है, कि तपेदिक और राज यक्ष्मा से रोगी बच जावे तो यह समझो कि रोगी को यह रोग ही न थे। आयुर्वेदीय ग्रन्थों में लिखा है:-

परिदिंनसहस्रंतु यदि जीवति मानवः ।
सुभिषाभिरुप क्रान्तः तरुणः शोषपीडितः ॥

अर्थात्—यदि शोष वाला रोगी सहस्र दिन तक जीता रहे तो यह जानो कि रोगी तरुण है और उसकी चिकित्सा अच्छे वैद्य द्वारा की गई है।

इस से भावार्थ यह निकलेता है कि वलवान रोगी क्षय रोग की आदि अवस्था में अच्छी चिकित्सा होने पर सुधर सकता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। भारत वासी शारीरिक ज्ञानहीन और प्रायः दरिद्री होते हैं। उन को बहुत दिनों तक यह मालूम ही नहीं पड़ता कि हम को क्षयरोग है और साधन हीन होने से क्षय की आदि अवस्था में ठीक चिकित्सा भी नहीं कराते।

इस ही से अधिकांश भारत वासी क्षय रोग से मृत्यु पाते हैं। क्षयरोग में बहुत सी औषधियां खाने से ही लाभ नहीं होता जब तक रोगी को उत्तम वायु साफ पानी, बलिष्ट आहार और मानसिक सुख न हों तब तक हजार अच्छी २ औषधियां खाने पर भी क्षयरोगी नहीं बच सकता।

वर्तमान समय में साधारण अवस्था वाले मनुष्यों को उपरोक्त बातें बहुधा नहीं मिलतीं। उन के रहने सहने के मकान अपवित्र होते हैं तथा उत्तम आहार बिहार के लिये धन न होने से वे अपनी चिकित्सा का प्रबन्ध ठीक २ नहीं कर सकते। इस ही से बहुधा क्षयरोग से अधिक अकाल मृत्युएं होती हैं। अमेरिका, जर्मनी, इंगलेंड आदि देशों में क्षयरोगियों के लिये राजा और प्रजा की तरफ से अच्छे २ चिकित्सालय स्थापित हैं। जिन में क्षयरोगियों के लिये उत्तम वायु, साफ पानी और भोजन मिलता है चिकित्सा भी बड़ी सावधानी से की जाती है इस से बहुत से क्षयरोगी बच जाते हैं। भारतवर्ष में भी स्वर्ग वासी भारत सम्राट श्रीमान् सप्तम एडवर्ड महाराज के स्मारक में धर्मपुर (शिमला) में क्षयरोगियों के लिये ऐसा ही शफाखाना स्थापित्त हुआ किन्तु इतने बड़े देश में एक शफाखाने से काम नहीं चल सकता प्रायः सम्मति शाली धनी लोग ही चिकित्सा के लिये जाते हैं साधारण मनुष्य वहां पहुंच भी नहीं सकते ऐसे शफाखानों की देश में बड़ी आवश्यकता है भारत वर्ष के राजा महाराजा और दानी लोग यदि ऐसे कार्यों में अपने धन का उपयोग किया करें तो भारत वासियों को बड़ा लाभ पहुंचे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि भारत वर्ष में क्षयरोग से नौ जवानों और निर्धनों की रक्षा करनी है तो प्रत्येक प्रान्त में अथवा पहाड़ी स्थानों या समुद्र के समीप ऐसे आरोग्य भवन स्थापित होने चाहिये। जिन में निर्धनों के लिये उत्तम स्थान अच्छा खाना पीना और औषधियां विना मूल्य मिल सकें। क्योंकि जिन मनुष्यों को भर पेट भोजन को नहीं मिलता सोने के लिये चार बांस की झोपड़ी नहीं मिलती, रात दिन पेट भरने की चिन्ता ही सताती रहती है, वे अपने जीवन को इस दुष्ट रोग से कैसे बचा सकें।

देश के दानियों ? यदि आप अपने धन से उत्तम पुण्य सञ्चय करना चाहते हैं तो ऐसे सार्वदेशिक उपयोगी कार्यों में अपना हाथ लगाइये। भारत वर्ष में दान अब भी बहुत होता है किन्तु वह आंख मींच कर केवल नाम के लिये होता है पात्र कुपात्र और आवश्यकता की ओर दानियों का बहुत कम ध्यान जाता है। जहां दश धर्मशाला बनी हैं वहां ही ग्यारहवीं बनती है। भारतवर्ष के दानियों की ओर से कितने आरोग्य भवन स्थापित हुये हैं ? देशवासियों को अपनी आवश्यकताओं का ध्यान रख कर दान करना चाहिये। दीन और निर्धन क्षयरोगियों की रक्षा तब ही हो सकती है जब कि उन के लिये क्षयरोग मिटाने वाले आरोग्य भवन स्थापित हों क्यों कि विना धन के साधन रहित होने से ऐसे लोगों की क्षय की पहली अवस्था में भी चिकित्सा नहीं हो सकती इस से उन बिचारों की प्रायः अकाल मृत्यु ही होती है।

विदेश में स्थापित हुये क्षयरोग के आरोग्यालयों का लेखा देखने से जाना जाता है कि प्रतिशतपचीस रोगी बिलकुल निरोगी और पचास प्रतिशत बहुत अच्छे होकर निकलते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो रोगी ऐसे स्वास्थ्य भवनों में रोग की प्रथमावस्था में ही चले जाते है उन में प्रतिशत ७०।७५ रोग मुक्त हो जाते हैं।

बहुत से लोग यह सन्देह करते हैं कि आरोग्य भवन से निकलने के पश्चात थोड़े दिन पीछे रोग मुक्त पुरुष फिर रोगी हो जाता है, किन्तु विदेशी आरोग्य भवनों का निम्न लिखित लेखा इस सन्देह को भी टिकने नहीं देता।

(१) फाँकनस्टीम आरोग्यालय से--६६ रोगी स्वास्थ होकर निकले और निकलने के पश्चात ३ वर्ष से लगाकर ६ वर्ष के बीच जांच करने पर ७२ मनुष्य निरोग पाये, शेष १५ दुबारा रोगाक्रान्त हुये। परन्तु इन में से भी १२ फिर बच गये और १५ रोगी मर गये।

(२) ब्रेह्मर के स्वास्थ भवन में ६५ रोगी रोग रहित होकर निकले उन मे से पांच २१ वर्ष से २६ वर्ष पर्य्यन्त सामन, १२ से २१ वर्ष पर्यन्त ३८, सात से बारह वर्ष पर्यन्त निरोगी और जीवित रहे।

इन लेखों के बिचार करने से यह बात टपकती है कि इस दुःसाध्य रोग से अधिकांश रोगी आरोग्य भवनों में रह कर चिकित्सा कराने पर बच सकते हैं, क्षयरोग से मनुष्यों को बचाने के लिये अमेरिका में २०० से अधिक सेवा समितियां स्थापित हैं, ऐसी समितियां व्याख्यान देकर नक़शे दिखाकर क्षय सम्बन्धी छोटी २ पुस्तकें बांटकर, मिट्टी के फेफड़े बना कर और अन्य उपायों से सर्व साधारण मनुष्यों को समझाते हैं कि-

यह रोग (क्षय) बड़ा कठिन है, इस से हम किस तरह बच सकते हैं, क्षयरोगियों को किस प्रकार रहना चाहिये आदि, ऐसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितियां क्षयरोगियों को आरोग्य भवनों में पहुंचाती हैं और दीन क्षयरोगियों को सब प्रकार का खर्च देकर उन्हें आरोग्य भवनों में भेजती हैं।

जर्मनी, स्विट्ज़रलेन्ड, फ्रान्स और इंगलिस्तान में भी क्षय रोगियों के लिये स्वतन्त्र आरोग्यभवन स्थापित हैं और इन से प्रति वर्ष सहस्र २ रोगी स्वास्थ्य रूपी सुधा को प्राप्त करते हैं। बड़े आश्चर्य की बात है कि जो भारतवर्ष जनसंख्या तथा भूमि-माप में सब देशों से बड़ा है जिस में सर्वोत्तम जल वायु और स्थान प्राप्त होते हैं। जहां पर दीन धन हीन क्षयरोगियों की दुःख भरी आह चारों ओर से सुनाई पड़ती है वहां ऐसे आरोग्यभवन क्यों स्थापित नहीं होते ? जब तक देशवासियों का ध्यान इस ओर न जायगा भारतवर्ष में क्षयरोग का डंका इस ही प्रकार पिटता रहेगा और हमारी चींचपड़ कुछ भी न चलेगी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरोग्य भवन कैसे होने चाहियें

२

आरोग्य भवन ऊंचे स्थान पर, बनाये जावे, जो समुद्र की सितह से कम से कम ३॥ हजार और अधिक से अधिक ७ हजार फ़ीट ऊंचा हो।

(१) आरोग्य भवन का कुल काम एक योग्य अनुभवी और दयालु वैद्य की आधीनता में हो।

(२) मकान साफ़ सुथरे और हवादार हों।

(३) स्त्री और पुरुषों के लिये अलग २ स्थान हों।

(४) प्रत्येक रोगी अलग २ कमरे में रक्खा जावे।

(५) क्षयरोगी के कमरे में दूसरा मनुष्य न सोवे और न किसी प्रकार की रोशनी ही की जावे। शरदऋतु में भी ताजी हवा आने के लिये सम्पूर्ण खिड़कियां खुली रक्खीं जावें।

(६) रसोई घर, भोजनालय, मित्रों के लिये स्थान, पाखाना, धोबी खाना आदि सब स्थान आरोग्यालय से दूर बनायें जावें।

(७) मकान को अधिक सजाने की आवश्यकता नहीं है सामान और फर्नीचर जितना थोड़ा होवे उतना ही अच्छा।

(८) वैद्य का बंगला एक ऊंचे स्थान पर हो, जहां से वह रोगियों की स्थिति प्रति समय देख सके।

(९) आरोग्य भवन की सड़कें मुख्य प्रबन्ध से उतार चढ़ाव की बनाई जावें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षयरोग की प्राकृत चिकित्सा

क्षय रोग में औषधियां सेवन करने से इतना लाभ नहीं होता जितना कि प्राकृत चिकित्सा से। आज कल के बड़े २ डाक्टरों का मत है। कि क्षय रोग में औषधियां सेवन करने से कुछ भी लाभ नहीं होता वे कहते हैं कि :-

Nature, a Mother, kind alike to all, still grants her bliess at Elubours carinest call.

अर्थात् सम्पूर्ण प्राणियों पर एक समान प्रेम रखने वाली एक अति मायावी दिव्य माता के समान प्रकृति, उद्योग-शील पुरुषों को सदैव अमोघ सुख प्रदान करती है। प्रख्यात डाक्टर टरनर इस विषय में कहते हैं कि :—

"हे प्रिय क्षय रोगी ! यदि तुझे ऐसी आशा हो कि कोई चमत्कारिक औषधि निकल आवे कि जिस के सेवन करने से शीघ्र क्षयरोग नष्ट हो जावे तो ऐसी आशा दुराशामात्र है। रोग नष्ट करना तुम्हारे ही हाथ में है, अपना साहस, व्यवहारिक विवेक बुद्धि, और निरन्तर सावधानी इन्हीं के ऊपर रोग मिटाने का आधार है। यह सत्य बात तुम्हारे हृदय में जितनी जल्दी दृढ़ हो जावे, उस में ही तुम्हारा हित है"। इस ही प्रकार और भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत से डाक्टरों का मत क्षयरोग में औषधियां न खिलाने के पक्ष में है। वे कॉड्लिवरऑयल, एकल टूकल औफगीर, ट्यूबर्लिम, ट्युबरक्युलोजायन, आदि औषधियों को क्षयरोग में देना वाहियात बतलाते हैं। और न उन का मत क्षयरोग में किसी प्रकार के मांस रस या मांस सिद्ध औषधियां खिलाने का है।

तात्पर्य यह है कि क्षयरोगी जब उसे मालूम हो कि मुझ में क्षयका अंकुर जम गया तब ही से उत्तम वायु, साफ़ पानी, योग्य आहार विहार और मानसिक सुख पाने का सब से पहिले प्रबन्ध करे।

यदि प्राकृतिक उपायों के साथ किसी अच्छे वैद्य की औषधियां सेवन की जावें तो क्षयरोग में अति लाभ पहुंच सकता है। अन्यथा केवल औषधियां ही खिलाते रहना कूड़े में डालने के समान है। डाक्टरों का ही यह मत नहीं, किन्तु आयुर्वेदीय ग्रन्थों का भी है।

क्षयरोग ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण रोगों में पथ्य से रहना आरोग्यता प्रदान करता है। आयुर्वेदीय ग्रन्थ स्वयं कहते हैं कि :————

पथ्येसति गदार्तस्य किमौषधिनिंषवणैः।

अर्थात्—बिना औषधि सेवन किये केवल पथ्य करने से ही रोग नष्ट हो जाता है। वैद्य लोग सन्निपात आदि ज्वरों में बहुत दिनों तक औषधियां न खिलाकर रोगी को प्रकृति के ऊपर ही छोड़ देते हैं। केवल गरम पानी पीकर पथ्य पूर्वक रहने से सैकड़ों रोगी आरोग्य लाभ करते हैं। इसलिये रोगियों को चाहिये कि वे क्षयरोग मिटाने के लिये प्राकृत साधनों की ओर सब से पहले ध्यान रक्खें और उन्हें काम में लावें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ शुद्ध वायु ❀

क्षयरोग फैंफड़ों की बीमारी है और फैंफड़ों की खुराक शुद्ध वायु है। यदि रोगी को ताज़ी वायु नहीं मिलती तो जानों कि उस का आरोग्य होना दुर्लभ है। ताज़ी वायु बड़े२ शहरों और घनी आबादी में नहीं मिल सकती। इसलिये छोटे२ गांव, पहाड़, या समुद्र के किनारे पर रहना आवश्यकीय है। इन स्थानों पर चले जाने से ही ताज़ी वायु नहीं मिल सकती किन्तु वहां ऐसे मकानों में रहना चाहिये कि ताज़ी वायु का पूरा २ लाभ रोगी को मिल सके। जिस मकान में क्षय रोगी रहे उस में छोटी२ खिड़कियां न हों। क्योंकि वायु के झोंके ऐसे रोगियों को नुकसान पहुंचाते हैं। मकान के सब दर्वाजे बड़े२ हों जिस से ताज़ी वायु आसानी से आ सके और ख़राब वायु बाहर निकल जावे।

यदि रोगी में बल होवे तो शुद्ध वायु पाने के लिये मकान में घुसा न रह कर बाहर मैदान में टहला कर। क्षय रोगी को ताज़ी वायु में रहना सहना उठना बैठना चाहिये। वैद्य लोगों में ऐसी बुरी परिपाटी चल गई है कि वे ज्वर वाले तथा क्षय रोगी को ताज़ी वायु, नहीं लगने देते। ताजी वायु रोगी के लिये शत्रु समझी जाती है, बहुत से वैद्य अंधेरी कोठरियों में (जिन्हें हम काराागार समझते हैं) रोगियों को डालकर मार डालते हैं, यह उन लोगों की भूल है॥

क्षय रोगवाले के लिये शरद वायु और सर्दी का मौसम तथा समुद्री वायु बड़ी लाभ दायक है। शीत ऋतु में बिना चिकित्सा किये भी रोगी की तोल बढ़ती जाती है। डाक्टर आर थर्लेथम लिखते हैं कि—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भीगने या ऋतु परिवर्त्तन होने के कारण शरदी पड़ निकलने पर भी दुर्बल से दुर्बल क्षय रोगी को शरदी लगते नहीं देखा गया।"

यदि रोगी सदैव खुली हुई वायु में रहता हो और रोगी के पास शरदी से बचने के लिये कपड़े यथोचित न हों किन्तु आहार ठीक मिल रहा है और हवा के झोंकों से रक्षा पाता हो-तो रोगी को शरदी किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचा सकती। शरद ऋतु में क्षयरोगियों को जितना लाभ पहुंचता है उतना उष्ण काल में नहीं। तात्पर्य यह है कि रोगी एक दम गरमी से शरदी या शरदी से गरमी में न जावे।

प्रत्युत— प्रति समय एक प्रकार की वायु में रहे। हम सदैव देखते हैं कि गरमी की ऋतु में दोपहर के समय शरद खानों से निकल कर एक दम बाहर आ जाने से लू लगजाती है जिस से ज्वर तृषा दर्द जुकाम आदि पैदा हो जाते हैं। परन्तु जो किसान दोपहरी भर धूप में खड़े हुए अपने खेतों को जोतते बोते हैं तो भी इन्हें यह प्रचण्ड धूप कुछ भी हानि नहीं पहुंचाती। इस लिये क्षय रोगियों को चाहिये कि हर एक प्रकार की वायु और ऋतु को सहने का अभ्यास करें। सदैव मकान से बाहर रहें। यदि मकान के अन्दर रहें तो जिस मकान की वायु बाहर की वायु से न अति गरम और न शरद हो, रहा करें।

क्षयरोगी को समुद्र की वायु बड़ी लाभ दायक है। हमने इस का प्रत्यक्ष अनुभव किया है। हमारे एक मित्र आपान के ओसाका शहर में रहते थे वहां उन्हें क्षय हुआ। फेफड़ों से रक्त निकलने लगा, महीनों आपानी शफाखानों में रह कर चिकित्सा कराई किन्तु कुछ भी लाभ नहीं हुआ। अब वह बहुत दुर्बल हो गये और अपनी जीवन की आशा खो बैठे तब हताश होकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत वर्ष के लिये वापिस हुए। जिस जहाज में सवार होकर वापिस आते थे उस के जहाजी डाक्टरने इन की बुरी अवस्था देख इन से जहाज की छत पर बैठकर समुद्री शुद्ध वायु लेने के लिये कहा। रोगीने ऐसा ही किया घण्टों छत पर बैठकर मुंह और नासिका से हवा को खींच कर भीतर भरता और भीतर से बुरी वायु को बाहर निकालता। एक महीना तक जहाज में रह कर ऐसा करने से वह पूर्ण निरोगी हो गया। शरीर की तोल दिन पर दिन बढ़ती गई। रक्त निकलना बंद हुआ। खांसी रफूचक्कर हुई। हमने जब इसे देखा (इस देश में आने पर) तब हमारी आंखों के सामने एक हृष्ट पुष्ट युवा दिखलाई पड़ा, आज कई वर्ष हो गये वह अब तक पूर्ण स्वस्थ है।

क्षय रोगी को मुंह से श्वास न लेकर नासिका से लेना चाहिये परमात्माने नासिका में एक बालों की ऐसी चलनी लगादी है कि जिस से वायु छन कर फेफड़ों में पहुंचती है। धूल धूआं आदि चीजें नासिका में रह जाती हैं। जो लोग नासिका को छोड़ मुंह से श्वास लेते हैं या सोने के समय मुंह खुला रखते हैं वह अपने साथ स्वयं अन्याय करते हैं।

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साफ़ पानी

जिस प्रकार अन्य रोगों में साफ़ पानी पीने की आवश्यकता है वैसे ही क्षयरोग में भी साफ़ पानी पीना चाहिये। साफ़पानी का मनुष्य के स्वास्थ से घनिष्ट सम्बन्ध है। क्षयरोग की भिन्न २ अवस्थाओं में विशेष रीति से जल पिलावे।

(१) यदि क्षयरोगी को ज्वर आता हो तो पानी को गरम करके छानकर पिलावे। बहुत से डाक्टर गरम पानी पिलाने से सहमत नहीं हैं वे कहते हैं कि पानी को गरम करने से पानी की जीवनीय शक्ति नष्ट हो जाती है परन्तु वह उन का भ्रम है। गरम पानी ज्वर नाशक प्रयोगों में प्रधान है। पानी को गरम करने से उस में मिले पार्थिव परमाणु दूर होजाते हैं। क्षयरोगी के लिये पानी इतना औटाया जावे जिस से उस में दो तीन उफान आजावें। पीछे साफ़ करके किसी मिट्टी के बरतन में भरकर शीतल करके रोगी को पिलावे :-

(२) यदि रोगी को दाह अधिक हो और ज्वर न हो तो अच्छे कूप का पानी (जिस कुए में कूड़ा करकट या वृक्षों के पत्ते न पड़ते हों, पानी ज्यादा खिंचता हो, बरसात का पानी न जाता हो) बिना औटा हुआ केवल साफ़ करके ही पिलावे-टिकटियों पर घड़े रखकर और उन से पानी टपकाकर अथवा पानी को साफ़ करने वाली बोतलों से पानी साफ़ करके (ये बोतलें विलायत से मसाले की बनी आती हैं पानी में डालने से बोतल के भीतर चूंचूकर साफ़ पानी भर जाता है) या भभके से खींच कर फिर ठण्डा कर के पीवे-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) यदि रोगी को खांसी ज्यादा उठती हो और कफ़ नहीं निकलता हो। भूख कम हो तो अड्डूसे के पंचांग को जला कर उसके कोयलों से पानी साफ़ करके (टिकटियों द्वारा) रोगी को पिलावे यह पानी किञ्चित मुनखरा होता है पांच सात रोज़ पीने से कफ़ आसानी से निकलने लगता है गला साफ़ होता है, जिस रोगी का मूत्र के साथ वीर्य्य जाता हो वह इस जल को न पीवे।

(४) मलावरोध रहने वाले क्षय रोगी को द्राक्षा (मुनक्कों) का जल बड़ा लाभ देता है बीस सेर पानी में एक सेर मुनक्के या अंगूर डाल कर दो दिन भिगोवे पीछे भभके से अर्क खींचे इस पानी को कूंए के साफ़ पानी में मिलाकर रोगी को पिलावे।

(५) जिस रोगी को दस्त पतले होते हों उसे धाय के फूलों का अर्क साफ पानी में मिला कर पिलाने से बहुत लाभ होता है।

———o———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहार

आहार ही मनुष्य का जीवन है। क्षय वाले को उत्तम आहार की योजना करना भी कठिन काम है। क्यों कि प्रायः क्षय वाले दुर्बल, और चीड़चिड़ स्वभाव वाले हो जाते हैं और खाने में उन की स्वाभाविक अरुचि रहती है बार २ खाने से घबड़ाते हैं। इसलिये क्षयरोगियों को ऐसा आहार खिलावे जिससे वह रुचि से खा सकें हम यह नहीं कहते कि क्षयरोगियों को बिना लाभ हानि देखे स्वादिष्ट भोजन भर पेट खिला दिया जावे जिसे वे न पचा सकें और उलटे लेने के देने पड़ जांय तात्पर्य्य यह है कि चिकित्सक को चाहिये कि हितवस्तुओं का सुस्वादु आहार बनवाकर थोड़ी मात्रा से रोगी को खिलावें सब से पहले वैद्य को रोगी की भूक और रुचि की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये रुचि बढ़ाने के लिये सब से उत्तम उपाय ताजी स्वच्छवायु का सेवन करना है यदि रोगी में बल हो तो थोड़ी सी कसरत यानी प्रातः सायं वायु सेवन करे ऐसा करने से भूख बढ़ने लगती है।

भूक लगने के लिये कोई साधारण औषधि सेवन करते रहना भी अच्छा है, बहुत से हकीम क्षयरोगी की भूक बढ़ाने के लिये लहसन का खाना लाभ दायक बताते हैं किन्तु जिन की कफ प्रकृति हो और तीक्ष्ण वस्तुओं का सेवन कर सकते हों वेही इसे थोड़ी मात्रा में सेवन करें। डाक्टर लोग दुर्बल रोगियों की भूख बढ़ाने के लिये शराब देना अच्छा समझते हैं, परन्तु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम ऐसी सुरा जिस में केवल नशा ही हो क्षयरोगियों को देना पसन्द नहीं करते। हां क्षयरोग में हित, द्राक्षासव आदि अरिष्ट, आसव रोगी के लिये मद्य के स्थान में दिये जावें तौ कोई हानि नहीं है।

चिकित्सक के लिये यह आवश्यकीय बात है कि रोगी को कमज़ोर न होने दे। जो वैद्य क्षयरोगी का शनैः २ बल बढ़ाता है वह उसे आरोग्यता की तरफ़ लेजाता है। रोगी का बल बिना आहार के नहीं बढ़ सकता। थोड़ा २ बार २ आहार खिलाना क्षयरोगी को बड़ा लाभ पहुंचाता है। बहुत से लोग यह आक्षेप करते हैं कि आयुर्वेदीय चिकित्सक केवल लंघन या मूंग की दाल अथवा सूखी रोटी ही आहार देने में पढ़े हैं। परन्तु यह बात शास्त्रीय प्रक्रिया को छोड़ ऊटपटांग इलाज करने वालों की है। शास्त्रों में, क्षय रोगियों को अनेक प्रकार के घृत, दुग्ध, मांस रस, यूष, शाक, फल आदि देने लिखे हैं और विद्वान वैद्य इन्हें देते भी हैं। ऐसे आहार से रोगी का बल क्षीण नहीं होने पाता- प्रत्युत धीरे २ रोगी, स्वास्थ्य लाभ करता है। हम इन आहारों की प्रक्रिया यहां बतलाते हैं॥

शास्त्रों में बकरी का दुग्ध, घृत, मांसरस देना बड़ा लाभ दायक लिखा है। गाय का दुग्ध भी लाभप्रद है परन्तु बकरी का सर्वोत्तम। यदि बकरी या गाय को गिलोय, अडूसा, खिला कर दुग्ध लिया जावे तौ और भी विशेष लाभ देता है। रोगी को जिस विकार की अधिकता हो उसकी नाशक बनस्पत्ति खिला कर दुग्ध लेना चाहिये यदि बल बढ़ाना हो तौ गोखुरादि या अश्वगन्धादि चूर्ण, जौ के चून के साथ मिला रोटी बनाकर गौ या बकरी को खिलाकर दुग्ध लेना चाहिये। यदि रोगी को दाह अधिक हो और धातु सूखती जाती हों तौ कच्चे दुग्ध के फेन या धारोष्ण दुग्ध पिलाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा लाभ दायक है। दुग्ध का क्षीर पाक [बराबर या द्विगुण जल मिला मन्द अग्नि से पकाकर दुग्ध मात्र शेष रक्खें] बना कर पिलाना भी बहुत गुणदायक है, क्षीर पाक बनाते समय औषधियां भी डाली जाती हैं। क्षीरपाक प्रायः रात्रि में पिलाते हैं। दिन में भी थोड़ा२ पिलाया जावे तौ और अच्छा॥

ज्वरघ्न क्षीरपाक- यदि क्षय वाले को ज्वर की अधिकता हो तौ क्षीर पाक बनाते समय- गिलोय, पीपल, मुनक्का, डालकर दुग्ध औटावे। बुर्द्धमान पीपल से धातुओं में प्रविष्ट हुआ ज्वर निकल आता है। एक२ पीपल नित्य बढ़ा कर २१ पीपल तक बढ़ावे और फिर एक२ घटाता जावे। पहले समय में पांच २ पीपल बढ़ाकर सौ सौ पीपल तक नित्य दुग्ध में डाल कर और औटाकर पिलाते थे। अब भी हम ने बहुत से रोगियों को पचास२ पीपल तक पिलाया है। पीपलों का प्रयोग ज्वर नाश करने में अद्वितीय है। रोगी की प्रकृति और बल देख कर पीपलों का प्रयोग करे॥

कासघ्न क्षीर पाक- खांसी की अधिकता में दुग्ध के साथ, मुनक्का, गिलोय कण्टकारी, आदि औषधियां डालकर औटावे। अडूसेकी जड़ का बक्कुल भी डालना अच्छा है। मुलेहठी का चूर्ण जब खांसी सूखीहो तब डाले। यदि खांसी के साथ, पार्श्व शूल हो तौ दशमूल या, पञ्च मूल डाले। यदि खांसी के साथ खून आता हो तौ पीपल की लाख दुग्ध में डाले॥

बलिष्ठ क्षीर पाक- बल बढ़ाने के लिये क्षीरपाक में, वंशलोचन, इलायची, मुनक्का, डाले, लवणादिचूर्ण को क्षीरपाक के साथ फांके—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्य डाक्टर लोग दुर्बल रोगियों की क्षुधा बढ़ाने के लिये भोजन के साथ थोड़ी २ सुरा पिलाना अच्छा समझते हैं परन्तु अच्छे २ वैद्य और हकीम इसे हानिकारक बतलाकर पीने की आज्ञा नहीं देते। हां आयुर्वेदीय ग्रन्थों में औषधस्वरूप द्राक्षासव, द्राक्षारिष्ट, उशीरासव, दशमूलासव आदि क्षयरोगियों को सेवन करने के लिये वर्णन किये हैं और इन को आहार न समझ कर औषधिस्वरूप सेवन करना चाहिये। ये आसव शराब की तरह दुर्गुण नहीं करते किन्तु रोगी को बड़ा लाभ पहुंचाते है।

मांस डाक्टर लोग मछली के तेल को इस में परम लाभ दायक समझते हैं। आयुर्वेदीय ग्रन्थों में भी इस रोग पर बकरे का मांस आहार और औषधि दोनों में हित माना गया है। क्षय रोगियों को जोकि मांसाहारी हैं इस से लाभ भी पहुंचता देखा है। हम मांस खाने के पक्षपाती नहीं हैं, दुग्ध, घृत, मक्खन आदि पदार्थ भी मांस से कम लाभ दायक नहीं हैं। परन्तु आयुर्वेदीय शास्त्र सार्व भौमिक चिकित्सा शास्त्र हैं। संसार में सब प्रकार के मनुष्य है इस ही लिये आयुर्वेदीय ग्रन्थों ने सब लोगों की प्रकृति को विचार कर आहार की योजना की है।

जो मांसाहारी पुरुष हैं जिन्हें मांस खाने में ग्लानि नहीं है वे अपनी इच्छानुसार बकरे के मांस का रस, सत्तू, आदि खा सकते हैं। परन्तु फलाहारी पुरुषों को इस से लाभ के स्थान में हानि होगी। उन्हें ग्लानि होकर अन्य उत्तम भोजनों से भी अरुचि होजायगी। जहां तक हो सके मनुष्यों को दुग्धादि सेवन कर अपने जीवन की रक्षा करनी चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारोष्ण दुग्ध | जिन रोगियों को दाह अधिक रहता हो धातु निरन्तर सूखती जाती हों, निर्बलता और रूक्षता बढ़ती हो उन्हें धारोष्ण दुग्ध बड़ा लाभ दायक है। यद्यपि कच्चे दुग्ध में डाक्टर लोग कीटाणुओं का होना मानते हैं। परन्तु हमने अनेक रोगियों को इससे बड़ा लाभ होता देखा है। एक रोगी जो बहुत दुखी था और उसे क्षय का अंकुर तीन चार महीने से ही उत्पन्न हुआ था इस धारोष्ण दुग्ध से ही थोड़े दिनों में चंगा हो गया। जिस रीति से उस रोगी को तथा अन्य रोगियों को हमने धारोष्ण दुग्ध पिलाया है उसकी विधि लिखते हैं॥

जिस गाय का दुग्ध लिया जावे उसे निम्न लिखित औषधियों का मोटा २ चूर्णऽ= जौका चून ॥सेर, घीऽ- शक्करऽ- मिला कर रोटी बना कर और अग्नि पर सेक कर खिलावे और थोड़ा २ सेंधा नमक भी गौ को चटाता रहे॥

असगंध, सितावर, मूसली सुफ़ेद, समुद्र सोख, तालमखाना, मुलेहठी, खिरैटी के बीज, समान भाग लेकर कूटकर चूर्ण करे इस रोटी को पांच सात दिन खिलाने के पश्चात्–पहले उस गाय के दुग्ध का घी निकाल कर रक्खें। एक तोला घृत, शहद माशे ६, पीपल दाने घुटे हुये चार रत्ती मिलाकर चाटे और ऊपर से उसी गाय का धारोष्ण दुग्ध पाव भर से लेकर आध सेर तक पीवे–

गौ के दुग्ध को दुहते समय दोहनी से एक सुफ़ेद वस्त्र का छन्ना बांध दे और उस छन्ने पर मिश्री अनुमान की पिसी हुई रखदे पश्चात् दुग्ध को उसके ऊपर दुहे और उसे तत्काल ही जब तक फेन शान्त न होने पावे पीले।→

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मक्खन | क्षय रोगी को मक्खन खाना भी बड़ा उपयोगी है। जिन को रूक्षता दाह शुष्क कास, या धातु नाश हों उन्हें सितोपलादि चूर्ण माशे दो मक्खन तोले एक या दो शहद माशे ६ मिलाकर खाना चाहिये। बाजारू, या कुछ दिन रक्खा हुआ मक्खन काम नहीं देता– गौ या बकरी के पवित्र दुग्ध का नित्य प्रति ताज़ा मक्खन निकाल कर खाना चाहिये॥

घृत | घृत के नाम से बहुत से रोगी और वैद्य बड़े डरते हैं। वैद्यों में सूखी रोटी खिलाना ही पथ्यापथ्य का निचोड़ समझा जाता है। परन्तु यह प्रणाली शास्त्रीय सिद्धान्त से विपरीत है। पुराने ज्वर और उस क्षय में जिस में ज्वर से धातु निरन्तर सूखती जाती हों घृत देना चरकादि ऋषि बड़ा लाभ दायक बतलाते हैं। जिस प्रकार जलते हुए मकान को मनुष्य जल से बुझा देते हैं वैसे ही ज्वर से सूखते हुए प्राणियों को वैद्य घृत से बुझाता है ऐसा चरक में लिखा है। क्षयरोग पर पचास चालीस प्रकार के घृत बनाने के प्रयोग शास्त्रों में पाये जाते हैं (जिन में से कुछ आगे चिकित्सा प्रकरण में लिखेंगे) हमने इनका क्षयरोगियों पर अनेक बार प्रयोग किया है और लाभ भी देखा है। वैद्यों को निर्भय होकर घृत को स्निग्ध कर उपयोग करना चाहिये क्षयरोग में धातुओं का क्षय होने से निर्बलता विशेष होती है और दुग्ध घृतादि बल बढ़ाने वाले प्रधान पदार्थ हैं।

फल | इस रोग में फलों का खाना भी बहुत अच्छा है। विलायती अनार, अंगूर, मुनक्का, किशमिश, फालसे, केला, छुहारे, आममीठा, इन फलों को थोड़े २ खाना चाहिये, अनार के रस के साथ पकाये हुए अन्न भी दाहनाशक तृप्तिकारक और बल देने वाले होते हैं। भोजन काल से अन्य समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भूख लगने पर फलों को खावे। एक हकीम मुनक्कों का अधिक खाना इस रोग में बड़ा हित बतलाते हैं। रुचि के लिये सूखे झरबेरों का चूर्ण मिश्री और नमक मिला कर खाते रहना अच्छा है।

अन्न गेहूं, निस्तुष जौ, मूंग, पुराने साठी चांवल, इस रोग में हितकारी माने जाते हैं गोधूमसत्व, यवसत्व, मूंग, या जौकायूष, गेहूं का दलिया, बनाकर खाना चाहिये। इन पदार्थों में यदि खटाई की आवश्यकता हो तो आमले या खट्टे अनार की खटाई डाले। रूक्ष अन्न, उड़द, आदि इस में वर्जित हैं। पदार्थों में तीक्ष्ण मसाला नहीं डालना। हींग, लाल मिर्च, लहसन आदि हानि कारक हैं।

(१) गोधूमसत्व अथवा यवसत्व बनाने की विधि। पहले गेहूं या पुराने जौ को कूट कर और भिगो कर सत्व निकाले पीछे उन्हें बकरी के घी में भून ले (भूनने में एक मिनिट भी नहीं लगती, कलछी के तेज पके हुए घी में सत छोड़ते ही भुनजाते हैं) तथा अनार और आमले का जल पहले से निकाल तय्यार कर रक्खे। फिर एक वर्तन में थोड़ा घी डाल जीरे का छोंक लगा अनार का और आमले का रस तथा यवादि के सत्व को छोड़ दे। इस में सेंधानमक, इलायची, पीपर, और थोड़ी सी सोंठ को कूट कर डाल दे। जब एक उफान आजावे तब इस यूष को हकार क्षय पीड़ित रोगी को पिलावे। अथवा भुने हुए सत्व को मिश्री के जल में औटा एक उफान देले, इस में सितोपलादि चटनी और आमले का चूर्ण भी थोड़ा डाल दे, इस यूष में घनिष्ठता आना ठीक नहीं, यूष के पानी का प्रमाण अच्छी तरह कर लेना योग्य है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) जौ का यूष—इस यूष में अवों को पका कर यूष निकाला जाता है, परन्तु इसका बनाना अति कठिन है अतएव इस की प्रक्रिया लिखी जाती है। पुराने छिले हुये यवों को सोलह गुने पानी में पकावे तथा दूसरे एक वर्तन में गरम पानी और भी रखा रहने देवे, जब चौथाई पानी रह जावे तब उसे फेंक देवे, और उन में इस दूसरे वर्तन का गरम पानी उतना ही डाल देवे और फिर पकावे, इस प्रकार यव दूसरे या तीसरे बार में अवश्य गल जावेंगे तब उस अन्तिम पानी को सीजे हुए जौ सहित उतार लेवे और फिर एक गाढ़े कपड़े में छाने और सुफेद और गाढ़े सत्व को निकाललें। तदनन्तर इस सत्व को घृत, जीरा तेजपात का छोंक देकर छोंके और इस में सेंधानमक, आमला, पीपर, सोंठ डाल एक उफान आने पर उतार लेवे और रोगी को सेवन करावे। आमले की जगह आमले का रस भी डाला जाता है। इस यूष को मीठा बनाओ तो मीठा भी नं० १ की विधि से बना सकते हो। पानी बार २ फेंकने का अभिप्राय यह है कि जौ बहुत देर में गलते हैं एक बार के पानी में नहीं गलेंगे जौ को भुनाकर यूष बनाना उत्तम नहीं है।

शाक, लौकी, तोरई, बथुआ, कमल की जड़, केला, कटहर, लसेड़े, इन के शाक बना कर रोगी को खिलाने चाहिये। सरबूज, सरसों, करेला, मैथी, ककड़ी, सेम, के शाक हानिकारक है। गरम और तेज मसाले शाकों में न डाले जावें।

आहार विधि- क्षय रोगी को थोड़ा २ खाना बार २ खाना चाहिये। ऊपरी उपचारक, समझा बुझाकर रोगी के पेट में थोड़ा बहुत आहार अवश्य पहुंचाता रहे। जिस चीज़ के खाने से लाभ पहुंचे उसे खाता रहे अन्यथा तत्काल छोड़ दे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ विहार ॥

क्षयरोगी को सदैव पवित्र, चिन्ता रहित, और खुश मिजाज रहना चाहिये। क्षयरोगी को यह जतलाना कि तुम्हारा जीवन संकट मय है बड़ा हानि कारक है। शरीर को जितना आराम दिया जासके देवे गीतवाद्य सुनना, जी बहलाने के लिये इष्टमित्रों से हास्य करना, चन्दन लगाना, मन्द २ वायु का सेवन आदि रोगी का स्वास्थ्य बढ़ाते हैं। जिस काम या परिश्रम से शरीर म थकान मालूम दे उसे कभी न करे। ऐसा खेल जिस में जोश या गरमी बढ़े कदापि न खेले। यदि रोगी बलिष्ठ हो तो शुद्ध वायु के सेवन के लिये किसी बगीचे में टहलकर फूलों को सूंघता रहे। क्षय रोगी के उपचारक उसे शान्ति देते रहें। यद्यपि क्षयी वाले रोगियों का स्वभाव चीचड़ और क्रोधालु हो जाता है परन्तु इन्हें धीरज तथा शान्ति देते रहना योग्य है।

स्नान | चार छः दिन पीछे रोगी को गुन गुने या ताज़ी पानी से न्हिलाया जावे। मैल मिट्टी एक तौलिया से साफ़ करले। स्नान प्रातः काल करना चाहिये। इससे जुकाम पैदा नहीं होता।

इष्ट मित्र, | क्षय रोगी से प्रेम रखने वाले, रोगी को आश्वासन देते रहें। और रोगी को बहुत बुलाने की कोशिश न करें। ऐसा करने से रोगी का दिमाग़ कम जोर हो जाता है।

किसी विचारणीय विषय पर बहस करना भी अच्छा नहीं है। जहां तक हो सके रोगी के पास मनुष्य कम जाया करें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ना लिखना | अब रोगी को ऐसी पुस्तकें जिन में दिमाग़ को ज़ोर लगाना पड़े, और ऐसे उपन्यास जिन से मन में ग्लानि या कुभाव उत्पन्न हों पढ़ने के लिये न दिये जावें। हां जिन पुस्तकों के पढ़ने से चित्त में शान्ति प्रसन्नता और हर्ष पैदा हो उन्हें वे अवश्य पढ़ सकते हैं, अब रोगी को पढ़ने चाहियें। रामायण महाभारतादि पुस्तकें पढ़ने के लिये अच्छी हैं। विचारपूर्ण लेख लिखने से भी उन्हें रोकना चाहिये। अपने इष्ट मित्रों को पत्रादि लिखने का समय दिया जावे।

व्यायाम | थोड़ी २ ऐसी व्यायाम जिससे शरीर में थकान न मालूम पड़े अब रोगियों को करते रहना चाहिये। बल से अधिक कसरत या परिश्रम भी रोगियों के लिये अच्छा नहीं है। ज्यों ज्यों अब रोगी स्वास्थ्य लाभ करता जावे कुछ २ व्यायाम भी बढ़ाता जावे। जब बल अधिक आजावे तब कुछ परिश्रम करने वाली कसरत भी हानि नहीं देती किन्तु उस से नींद आजाती है। आहार के पचाने में व्यायाम बड़ी सहायता देती है। और अब वालों का आहार पचना एक आवश्यकीय बात है। इस से स्वास्थ्य बढ़ने के साथ इसे भी बढ़ावे॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीटाणुओं का नाश

डाक्टर लोग क्षयरोग का मुख्य कारण कीटाणुओं को मानते हैं। और उन के नाश करने को ही चिकित्सा का प्रधान सिद्धान्त समझते हैं। इस के लिये वे प्रायः विषैली औषधियां देते हैं, परन्तु इस चिकित्सा से स्थिर लाभ नहीं हो सकता। मूल भित्ति की ओर लक्ष्य न करके ऊपरी चिकित्सा करना कभी स्थिर लाभ नहीं देता। जैसे किसी कमरे में कूड़ा करकट भरा पड़ा है और उस से अनेक कीट पैदा होगये हैं जिन से कि स्वास्थ्य बिगड़ता है ऐसी अवस्था में उन कीटों को नाश करने के लिये विषैला छिड़काव या धूआं आदि करना उत्तम या टिकाऊ उपाय नहीं है क्योंकि कीटों को उत्पन्न करने वाला कूड़ा करकट जोकि कीटों को पुनः उत्पन्न कर देगा अभी दूर नहीं किया गया, शरीर से कीटाणुओं को नाश करने के लिये जिन कारणों से कीट उत्पन्न होते हैं उन्हें दूर करना ही सर्वोत्तम उपाय है। विषैली औषधियों से कीटों का बीज नाश तो होता नहीं प्रत्युत रसादि धातु और भी बिगड़ जाते हैं। आज कल प्रायः इस ही प्रकार की चिकित्सा से डाक्टर लोग काम ले रहे हैं परन्तु ऊपरी साधन अच्छे होने पर भी अभी वे इस प्रणाली से अच्छा लाभ नहीं दिखा सके। यदि उत्तम आहार विहार की योजना कर रोगी बिना औषधि के ही रक्खा जावे तो भी हम उसे इस विषैली चिकित्सा से अच्छा समझते हैं। हमने बहुत से धनाढ्य रोगी ऐसे देखे हैं जो कीटनाशनी पिचकारी आदि लगवाने पर कुछ दिन अच्छे दीखे हैं, परन्तु पीछे वही ढांक २ फिस। डाक्टर लोग चाहें कितनी ही शेखी मारें और पश्चिमीय चिकित्सा की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिमाथतियों के ज़ोर से कितनी ही तूती बोल जावें परन्तु अभी ये प्राचीन ऋषियों की चिकित्सा प्रणाली से बराबरी करने लायक नहीं हुए। हमारे शास्त्रों में क्षय रोग का कारण कीटाणुओं को भी माना है परन्तु जैसे डाक्टर लोग इस के पीछे पड़े हैं वैसे उन्हों ने इन का वर्णन और परवाह नहीं की क्योंकि इन की चिकित्सा प्रणाली स्थिरता रखती थी। वे जानते थे कि बिना उपयुक्त भूमि मिले कीटाणु उत्पन्न नहीं हो सकते, और उत्पन्न हो भी जावें तो रोग पैदा नहीं कर सकते इसलिये जो कारण शरीर को बिगाड़ने वाले या कीटों के लिये उर्वरा भूमि थे उनकी ओर ही लक्ष्य रहा और इस ही से क्षय रोग में उन्हों ने कीट नाशक प्रयोगों को नहीं लिखा। यदि उत्तम स्वास्थ्य गृहों में आयुर्वेदीय प्रणाली से प्राकृतिक या धातु वर्द्धिनी चिकित्सा की जावे तो वास्तविक लाभ पहुंचे। उत्तम चिकित्सा न होने के कारण आज कल स्वास्थ्य गृहों में रह कर अधिक धनव्यय करके भी बहुत से रोगी स्वास्थ्य लाभ नहीं कर सकते। बहुत से अच्छे२ डाक्टर इस कीट नाशिनी चिकित्सा के पक्ष में नहीं हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदीय मत से

चिकित्सा क्रम

जिन कारणों से जो रोग उत्पन्न हो उन कारणों को दूर करना ही संक्षेप से उस रोगी की चिकित्सा है। पहले लेखों में यक्ष्मा के कारणों का सविस्तार वर्णन किया है अतः इन्हें दूर करना भी क्षयरोग की चिकित्सा सम्बधी पहली सीढ़ी है। चरकाचार्य्य ने इस रोग के चार कारण साहस संधारणादि बतलाये हैं जिनका कि पहले उल्लेख हो गया है। इन कारणों को दूर कराने के लिये चिकित्सक को सदैव सावधान रहना चाहिये। रोगी, साहसिक कर्म, और वेगरोकना त्याग दे यथा समय हित भोजन करे, और धातुओं की वृद्धिकर प्रयोगों का सेवन करे। वैद्यक शास्त्र में वैद्य के लिये आज्ञा ही है कि यक्ष्मी पुरुष की मल और बल की रक्षा करता रहे। जो वैद्य मल का भेदन, या धातुओं की रक्षा न कर रोगी को निर्बल बनाता है वह चिकित्सक नहीं कहा सकता। क्योंकि।

मलायत्तं बलं पुँसां शुक्रायत्तं तु जीवनम् ।
तस्माद्यत्नेन संरक्षेत् यक्ष्मिणो मल रेतसी ॥

मनुष्यों का बल मल के, और जीवन वीर्य्य के आधीन है। इस से यक्ष्मा वाले रोगी को इन दोनों की रक्षा यत्न से करनी चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों को चाहिये कि उपद्रवों की चिकित्सा करते हुए भी इन दोनों को सावधानी से देखता रहे कि कहीं रोगी नित्य प्रति दुर्बल तो नहीं होता, और मल अपक्व तो नहीं है। मल की जांच के लिये रोगी को प्रति सप्ताह वजन कराता रहे और उसकी मानसिक शक्ति की जांच करता रहे। जो वैद्य बिना विचारे ऊट पटांग दवा देकर रोगी को जुल्लाब करा देते हैं या कमजोर बनाते हैं वे रोगी को मृत्यु के मुख में ढकेलते हैं। क्षय रोगी की जीवनाशा तब ही तक रहती है जब तक कि वह डोलता फिरता और कुछ खा लेता है। खट्वाशायी क्षयरोगी बचते हुये प्रायः देखे नहीं जाते। पंचकर्म जो आयुर्वेदीय चिकित्सा का मुख्य अंग है यक्ष्मा वाले को तब ही कराया जा सकता है जब तक कि वह क्रियाओं को सहन करने वाला और बलिष्ठ हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ तात्कालिक चिकित्सा ॥

प्रतिष्याय (जुकाम)

इस रोग में अधिकांश रोगियों को जुकाम ज्यादा होता है इसलिये प्रतिष्याय नाशक मुख्य २ अनुभव में आये प्रयोगों को लिखते हैं।

प्रतिष्याय होते ही रोगी ऐसी जगह सोवे या बैठे जहां वर्षा का शीतल वायुन चल रहा हो शिर पर गरम कपड़ा बांध ले। शरीर पर भी उष्ण वस्त्र धारण करे पृतिष्याय रोकने के लिये कोई तीक्ष्ण और गरम वस्तु न खावे, पहले ऐसी साधारण औषधि खावे जिस से वह आसानी से झड़ जावे ॥

(१) मिश्री २) तोला कालीमिरच पन्द्रह दाने (२) अदरख २) तोले मिश्री १) तो० (३) मिश्री १) तो. मुलेहठी ६ मा० कालीमिरच १० दाने (४) गेहूं की भूसी २) तो० मिश्री १) तो० कालीमिरच १० दाने (५) गुलबनफ्सा ३ मा० उन्नाब ४ दाने मुनक्का ७ दाने मुलेहठी २ माशे खतमी के बीज २ माशा। इन में से किसी प्रयोग को पाव भर पानी में औटावे जब आधा रह जावे तब छान कर पीवे। खांसने से कफ न निकलने पर नं० २ कण्ठ में खरास होने पर नं० ४ साथ में सूखी खांसी आने पर नं० ३-५- का प्रयोग काम में लावे यदि मस्तक में कफ भरा हो और बोल भारी हो तो इस हकीमी नुसखे को सूंघे- बर्ग तिब्बत, उस्तखद्दूस गुलबनफ्सा, इलायची के छिलके ये सब बराबर लेकर कपरछान करले (२) बनतुलसी, सैंहजने के बीज,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाइबिरंग, काली मिरच, इनको बारीक पीस कर बहुत थोड़ी मात्रा सूंघे (३) आक के पत्तों का स्वरस निकाल कर दो तीन बूंदें नासिका में डाले। शिर दर्द होता हो तो (१) चूने को बहुत महीन पीस कर गाढ़े के कपड़े में छान ले पीछे उस में थोड़ा घी मिलाकर खूब घोटे जब मलहमसा बन जावे तब इसका मस्तक पर लेप और मालिश करे (२) केशर १ मा० कपूर २ मा० बादाम की मिंगी ३ मा० मिश्री १ मा० इन को पानी में पीस दो तोले घी डाल अग्नि पर गरम करे जब पानी जल जावे तब घी को छान कर उस की मस्तक पर मालिश करे और नासिका द्वारा ऊपर को चढ़ावे (३) नौसादर और चूना इन दोनों को मिलाकर शीशी में भरदे पीछे उस में पानी भर कर मुंह में डाट लगा दे डाट खोल कर शीशी के मुंह को नासिका से लगा कर सूंघे (४) लाल कनेर के पुष्पों को घी में घोट कर मस्तक पर मले (५) रैनुका, तगर, पाषाण भेद मोथा, छोटी इलायची, अगर, दैवदार, बालछड़ अरण्ड की मिंगी, इन को पानी में पीस कर लेप करे॥

यदि जुकाम से ज्वर आ जावे तो (१) मुनक्का ६ माशे मुलहठी माशे ६ कटेहरी की जड़ माशे ६ (२) बांसे की जड़ ६ माशे कटेहरी की जड़ मा०६ गिलोइ माशे ६ (३) गिलोइ कुटकी, नीम की छाल पटोल पत्र, मोथा, लाल चन्दन, सोंठ, इन्द्र जौ तीन २ माशे इन में से किसी काथ को पाव भर पानी में औटावे जब छटांक भर रहै तब छान कर पिलावे॥

जिन मनुष्यों को जुकाम बार २ हो या बना रहे वे आयुर्वेदीय प्रसिद्ध प्रयोग जैसे, जातीफलादि, लवंगादि चूर्ण, च्यवन प्राश्य, त्रिफलादि लेह, द्राक्षासव दशमूलासव आदि किसी औषधि का सेवन बराबर करता रहे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ खांसी ❀

क्षय रोग में खांसी अवश्य होती है और प्रायः सूखी खांसी आया करती है। ऐसी खांसी के लिये गरम औषधियां नहीं खानी चाहिये। क्योंकि गरम दवाइयों से खून आ निकलता है। तर गरम दवाइयां ही अधिक लाभ देती हैं। स्निग्ध पदार्थ ऐसी खांसी में लाभ दिया करते हैं। थोड़े से छोटे २ प्रयोग नीचे लिखते हैं जिन से खांसी कम हो जावे और आसानी से कफ निकले॥

बलादिक्काथ | खिरैटी, मुनक्का, कटेहरी की जड़, अरूसे की जड़ इन चारों औषधियों को छः छः माशे लेकर कुचलकर पावभर पानी में औटावे जब छटांक भर रहै तब छान कर शहद माशे ६ डालकर पीवे।

एलादिवटी | इलायची छोटी, तेजपात, दालचीनी, मुनक्का पीपल छोटी, ६: ६: माशे मिश्री, मुलेहठी, खजूर, किशमिश एक २ तोले इन को शहद डालकर झरबेर बराबर गोली बनाले और दिन रात में दस पांच बार मुंह में डाल कर चूसता रहै।

मिर्चादिवटी | गोंद बबूल, मुलेहठी का सत्त, मिर्चकारी, मिश्री इन को कपर छन कर पानी डालकर गोली बनावे और मुंह में डाला करे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यवासादिवटी जवासे की जड़, पीपर छोटी के बीज, मुनक्का, काकड़ासींगी इन को पीस कर शहद के साथ गोली बनावे और मुंह में डाले।

खैरसारादि पपरिया कत्था ४) तोला, खतमी के बीज २)तोला, गोंद बबूल १) तोला, कतीरा १) तो०, बहेड़े का बक्कल १) तोला, मुलेहठी २) तोला, कपूर माशे ६, इन को बारीक पीस बिहीदाने के लुआब में घोट कर गोली बनावे यह खांसी के लिये बड़ा अच्छा प्रयोग है।

शुष्क कासारि चूर्ण कतीरा गोंद तोला २) गोंद बबूर १) तोला मुलेहठी १) तोला बंशलोचन तोला १) लौकी की मिंगी १) तोला इन को पीस कर दो दो माशे शहद में मिलाकर चाटो–

कफार्द्रावलेह– हंसराज तो० १) मुलेहठी तो० १) खतमी के बीज माशे ८ उन्नाव तोले १॥) जूफा माशे ६ इन दवाओं को कुचल कर आध सेर पानी में औटावै जब आध पाव रहे तब आध पाव मिश्री डाल कर चाशनी ले और शर्वत बना कर चाटता रहे।

इसी प्रकार वांसावलेह, वांसाकुष्माण्डावलेह, कुष्माण्डावलेह, द्राक्षासव, बब्बूलारिष्ट, मृगांक पोटलीरस, सितोपलादि चूर्ण मक्खन के साथ, लोकनाथरस, शृंगाराभ्रवटी, आदि प्रसिद्ध औषधियां भी बड़ी लाभ दायक हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ रक्तागम ॥

क्षय, रक्तपित, उरः क्षतादि रोगों में कास के साथ रक्त आता है। उस से रोगी निर्बल हो जाता है। रक्त को एक साथ बन्द करने के लिये कोई उपाय न करे। सहसा रक्त बन्द करने से भी हानि होती है॥

(१) बबूल की कोंपल, अनार के पत्ते, आंवले, धनियां, इन को तीन२ माशे लेकर रात को ऽ– छटांक भर पानी में भिगोदे सवेरे मल छान कर मिश्री मा० ६ मिला कर पीवे।

(२) लाख पीपल की दुग्ध में औटा कर या पीस कर शहद में मिलाकर चाटे–

(३) कच्चे गूलर का स्वरस तोले १) शहद माशे ३ मिलाकर चाटे।

(४) सितोपलादि चटनी माशे २ नागकेशर माशे २ दोनों को मिलाकर मक्खन या लौनी, मिलाकर चटावे।

(५) नेत्रबाला, कमल, धनियां, चन्दन, मुलेहटी, गिलोइ, बांस, अडूसा, इनका क्वाथ बनाकर पीवे।

(६) ईखकी पंगोली, कमल की जड़, कमल केशर, मोचरस, मुलेहठी, पदमाख, वड़की कोंपल, मुनक्का, खजूर इनका काढ़ा बना कर पीवे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) मुलहठी, और दुग्ध औटा कर मिश्री और शहद मिला कर पीवे।

(८) नेत्रबाला, खजूरा, मुनक्का, मुलेहठी, फालसा, इन औषधों के काढ़े में मिश्री मिलाय कर पीवे।

(९) पोस्त के दाने, बादाम की मिंगी, इन को भिगोकर पीस कर मिश्री मिलाकर पीवे।

(१०) नासिका से रुधिर गिरता हो तो दूब, अनार की कली, कपूर इनको पीस लेप करे या नासिका से सूंघे (२) शिर पर फिटकिरी के पानी से भीगे हुए कपड़े को रक्खे।

इन के अतिरिक्त, उशीरादि चूर्ण, उशीरासव, खंडकाद्यव-लेह, दूर्वादि घृत, कूष्माडांसव, लोहभस्म, आदि प्रयोग भी बहुत अच्छे हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्श्व और कन्धों का संकोच

जब फैफड़ों में खराबी हो जाती है या रक्तादि धातुओं के क्षय होने से वायु कुपित हो जाता है तब कन्धों और पसवाड़ों में दर्द या खिचावला होता रहता है, किसी २ को बाम या दक्षिण पार्श्व में सोते में बड़ा दर्द मालूम देता है और खांसी ज्यादा उठती है कफ निकलता है। यह सब भी फैफड़ों के कमज़ोर और बिगड़ने से होते हैं। इस की चिकित्सा मुख्तसर यही है कि फैफड़ों को बलवान, और उनसे कफ निकालने वाली तथा वायु शान्ति करने वाली औषधियां खाई और लगाई जावें।

मालिश–चन्दनादि, किरातादि लाक्षादि, तैलों की सम्पूर्ण शरीर पर मालिश कराना, फैफड़ों से मोम का तैल या रूमी मस्तगी को मीठे तेल में गरम करके लगाना अच्छा है। कफ निकालने के लिये, अपामार्ग, तमाखू और अरूसे का क्षार समान भाग मिलाकर दो २ रत्ती शहद में मिलाकर चटाने चाहिये। आवश्यकता पड़ने पर बालू और मोम मिलाकर पोटरी बना सिकाई करनी चाहिये।

कफतर करने और निकालने के लिये प्रयोग

गेहूं की भुसी पावभर को आधसेर पानी में भिगोदे। घंटा भर पीछे मल छान कर बादाम मा० ६ गोंद बबूल मा० ६, मिश्री तो० १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलसी मा० ६ मिलाकर औटावे जब आधा पानी रह जावे तब छान कर रखले और कई दफे दो २ तोले पीता रहे।

अन्य प्रयोग—सौंफ, मुलहठी, कूठ, तगर, इन को घृत में मिला लेप करे तो शिर, पसली और कन्धे का शूल दूर होता है (अ) खरैटी, रास्ना, तिल, घृत, मुलहठी, नील कमल (आ) गूगल, देवदारु चन्दन, केसर, घृत, (इ) क्षीरकाकोली, खिरैटी विदारीकन्द, सहजना, पुनर्नवा (ई) शितावर, क्षीरकाकोली, मुलहठी, घृत, यह चारों लेप बहुत दोष युक्त शिरः शूल, पार्श्व शूल, अंसशूल को नष्ट करते हैं। ध्यान रक्खो जैसा दोष हो वैसे ही दोषघ्न लेप करे। वातजों में वातघ्न और पित्तज में पित्तघ्न और कफज में कफघ्न लेप करे।

॥ हाथ पावों की जलन ॥

यक्ष्मा रोग में जब मन्द ज्वर बना रहता है और धातुओं की कमी हो निकलती है तब हाथ पावों में जलन होती है। इस की चिकित्सा धातुओं को बढ़ाना ही है। हाथ पावों से चन्दनादि तैलकी मालिश करने, या धुले हुए घृत में, सैंधा नोंन या कपूर मिलाकर मलने या कांसे की बेली से मालिश करने से दाह कम हो जाती है। सितोपलादि, लवंगादि, उशीरादि, बलादि चूर्णों को चाटने, मक्खन खाने तथा च्यवन प्राश्य, सेवतीपाक, धात्रीलेह आदि को दुग्ध के साथ खाने से भी बहुत लाभ होता है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ स्वर भेद ❀

जब रोग बढ़ जाता है तब यक्ष्मा वाले की आवाज़ बैठ जाती है मुश्किल से बोला जाता है। ऐसा स्वर भेद प्रायः नहीं जाता– कफ निकलने और वायु शान्त होने पर थोड़ा २ चैन पड़ता है। खदिरसारादिवटी, एलादिवटी, द्राक्षारिष्ट, वा सारस्वतारिष्ट का सेवन करना चाहिये। खिरैटी और बिदारीकंद से सिद्ध किये हुये घृत का नस्य लेना, तथा ब्राह्मी, संखाहूली का स्वरस १) तो० उस में शहद माशे ३ घृत माशे १ स्वर्ण का वर्क १ मिलाकर चाटना विशेष उपयोगी है।

❀ अतीसार ❀

दुष्ट पित के बढ़ जाने से क्षय रोगी का दस्त पतला आ निकलता है इस से रोगी बहुत जल्दी निर्बल हो जाता है। इस उपद्रव की ओर वैद्य तत्काल ध्यान दे। जात्यादिपञ्चक, कुटजावलेह, कुटजारिष्ट, आदि औषधियों को सेवन करे। अतिसारोक्त औषधियों का यथा योग्य प्रयोग करे॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवाय शोषादि की चिकित्सा के विषय में व्याख्यान

व्यवाय शोष—व्यवाय शोषवाले का उपचार घृत संयुक्त भोजन और जीवनीय गण द्वारा दुग्ध पान है।

शोक शोष—शोक शोषी को शान्ति दायक प्रिय वचनों से धैर्य्य बंधावे, भोजन में दुग्धपान तथा स्निग्ध, मधुर शीतल और अग्नि दीपक पदार्थों का सेवन करावे।

व्यायाम शोष—इस शोष में द्राक्षा घृत का सेवन अत्युत्तम है।

अध्वशोष—सुन्दर शय्या पर सुलाना, शयन, शीतल मधुर पुष्टि कारक भोजन अध्वशोषी को लाभ करता है।

जराशोष—स्निग्ध, अग्नि दीपनकर्ता तथा आमलक युक्त यूष पिलाना हितप्रद है।

उरः क्षत शोष—एलादि गुटिका, द्राक्षा घृत, अमृत प्राशा-वलेहों का सेवन उत्तम है। उरः क्षत शोषी को शीतल, लघु, प्रिय भोजन करना, द्वेषादि त्यागना, ब्राह्मण, देवता और गुरुओं का पूजना पथ्य है॥ इन शोषों में व्यवायादि चार शोषों को उत्पन्न हुए थोड़े दिन बीते हों तो पथ्यमात्र से ही दूर हो जाते हैं। क्षय-शोष और उरःक्षत शोष में पथ्य के साथ औषध की भी परमावश्य-कता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यक्ष्मा के विशेष २ प्रयोगों का वर्णन

धनहीन यक्ष्मियों के लिये कुछ प्रयोग

❀ प्रयोग पंचदशी ❀

—— ——

(१) लघु लोकनाथरस (२) अमृतेश्वररस ३) क्षय केसरी (४) यक्ष्मांतक लोह (५) बृहत् वासावलेह (६) जीवन्त्यादि घृत (७) द्राक्षारिष्ट (८) बब्बूलारिष्ट (९) पिप्पल्यासव (१०) सितोपलादि चूर्ण (११) जातिफलादि चूर्ण (१२) तालीसादि वटिका (१३) यवानी खांडव (१४) चन्दनादि तैल (१५) अशोकारिष्ट।

❀ उपयोग ❀

(१) लघु लोकनाथरस
(२) अमृतेश्वर
(३) क्षय केशरी
(४) यक्ष्मांतक लोह

ये चारों प्रयोग पिप्पली और काली मिरचों के चूर्ण के साथ मधु वा मक्खन अथवा जीवन्त्यादि घृत में मिला कर बलानुसार अहोरात्र में तीन चार बार वा न्यूनाधिक जैसा वैद्य योग्य समझे सेवन कराना उत्तम है, ये प्रयोग ज्वर, कास, श्वास अग्निमांद्यादि यक्ष्मा के सम्पूर्ण रोगों में उपयोग कराने योग्य है, इनसे यक्ष्मा के सब रोगों को लाभ होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) बृ० वासावलेह—यह अवलेह अहोरात्र में तीन, चार वा अधिकवार जैसा वैद्य योग्य समझे सेवन करावे, यह यक्ष्मा के क्षतज क्षयजादि सम्पूर्ण कासों के लिये आयुर्वेद में एक अमोघ औषधि है। इस के सिवाय वमन, रक्तपित्त, स्वरक्षय, उरः क्षत, दारुणश्वास हृदयशूल, पार्श्वशूल, अरुचि, ज्वर इन सब रोगों में यह, अवलेह, अवश्य प्रयोग में लाना चाहिये, यक्ष्मा के लिये यह अवलेह जीवन स्वरूप है।

(६) जीवन्त्यादि घृत—यह घृत यक्ष्मा के एकादशरूपों में सेवन करना योग्य है। इसे भी अहोरात्र में तीन चार वार देना चाहिये। यह घृत यक्ष्मा के ज्वर और कास और पार्श्व शूलादि को शीघ्र दूर करता है। और बल को बढ़ाता है।

(७) द्राक्षारिष्ट—इसे उरःक्षत, दाहरोग, क्षयजादि सम्पूर्ण कास श्वास, कण्ठरोगों में, सेवन कराना योग्य है फुफ्फुसादि को शुद्ध करने के लिये तथा उनको बलवान बनाने के लिये यह दूसरा अमृत है। इसका प्रयोग अहोरात्र में तीन चार वार कराना योग्य है, यक्ष्मी कुछ पथ्य ले चुके तो उस के अनन्तर यह अवश्य पिलाना चाहिये। यह पाचक और रोचक भी है।

(८) बब्बूलारिष्ट—क्षयज शुष्क कास को आर्द्र करता है, फुफ्फुसादि के चिपटे हुए कफ को बाहिर निकालता है। तथा अतीसार को दूर करता है। प्रमेह को नष्ट करता है। कुष्ठ को नष्ट करता है। स्त्रियों के प्रदर में लाभकारी है। धातु क्षय को लाभकारी है। अतएव क्षय, अतिसार, प्रमेह, शुष्क कास श्वास में इस का प्रयोग करना योग्य है। यह भी दोषानुसार दो तीन चार वार सेवन कराना योग्य है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(९) पिप्पल्यासव—इसका उपयोग क्षय की ऐसी अवस्था में करना चाहिये जब कफ विशेषतया निकल रहा हो कफ निकलने से रोगी दुर्बल होगया हो, यह उदर रोग, ग्रहणी, पांडु, अर्श में भी यथा समय दिया जाता है। और यदि साधारण कफ निकलने में १ बार देने से कोई हानि न दीखे तो प्रयोग करना योग्य है। इसको परीक्षा कर देखलें, यह अग्नि की शक्ति को बहुत शीघ्र तीव्र करता है। यदि यह सात्म्य हो जावे तो रोगी को अन्न पर शीघ्र रुचि आती है।

(१०) सितोपलादि चूर्ण—यह शहद अथवा शहद और घृत में मिलाकर तीन चार वार चाटना चाहिये यक्ष्मा के कास श्वास को लाभ पहुंचाता है। रुचि को शीघ्र अन्न पर लाता है। दाह तृषा को दूर करता है, अग्नि को बल देता है। ज्वर को शरीर से निकालता है। अतएव इन रोगों में इस का प्रयोग कराना योग्य है।

(११) जातीफलादि—यह चूर्ण अतिसार, संग्रहणी अरुचि, प्रतिश्याय, अग्नि मांद्य, कास, श्वासादि यक्ष्मा के रोगों में उत्कृष्ट औषध है। यक्ष्मा के दस्तों में बकरी के दूध के साथ इसे देना लाभकारी है।

(१२) तालीसादि वटिका—यह वटी मुख में प्रत्येक समय रखने से मुख वैरस्य, कासादि नष्ट होते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१३) यवानी खाण्डव—मुख वैरस्य, हृद्रोग, प्लीहा, पार्श्वशूल, विबन्ध, आनाह, कास, श्वास में देना परम उपयोगी है, भोजन रुचि उत्पन्न करता है। और खाने में सुस्वादु भी है।

(१४) चन्दनादि तैल—शरीर पर मर्दन किया हुआ पुराने ज्वर, पुराने काल को लाभ पहुंचाता है। बल और वर्ण सौन्दर्य को बढ़ाता है। यक्ष्मा में इस तैल का मर्दन कराना योग्य है। यक्ष्मा के लिये यह तैल परम औषधि है।

(१५) अशोकारिष्ट—स्त्रियों की चिकित्सा में उपयोगी होता है, यदि किसी को प्रदर रोग हो तो यह अरिष्ट स्वतंत्र या द्राक्षारिष्टादि में मिलाकर पिलाना योग्य है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
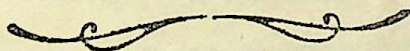
सामर्थ्यवन्तों के प्रयोगों का वर्णन

प्रयोग पंचविंशतिका

---

(१) सुवर्ण भस्म (२) मुक्तादि चूर्ण (३) राज मृगांक (५) हेमगर्भपोटली (६) रत्न गर्भ पोटली (७) वृ० कांचनाभ्र रस (८) वृ० वासावलेह (९) च्यवनप्राशावलेह (१०) अमृत प्राशावलेह (११) जीवन्यादि घृत (१२) सुश्रुतोक्त एलादि घृत (१३) द्राक्षादि घृत (१४) द्राक्षारिष्ट (१५) बब्बूलारिष्ट (१६) पिप्पल्यासव (१७) दशमूलारिष्ट (१८) एलादि गुटिका (१९) तालीसादि (२०) सितोपलादि चूर्ण (२१) जातीफलादि चूर्ण (२२) यवानी खांडव (२३) चन्दादि तैल (२४) लाक्षादि तैल (२५) अशोकारिष्ट।

❀ उपयोग ❀

(१) सुवर्ण भस्म—यह क्षय नाशक, कास श्वासघ्न और बलवर्द्धक है। अतएव किसी मृगांकादि रस के साथ संमिश्रण, कर सेवन करने से क्षय रोग को शीघ्र लाभ पहुंचाती है, क्षय में सुवर्ण का प्रयोग उपयोगी होता है यह भस्म स्वतंत्र रूप से भी मधु के साथ कई वार दी जा सकती है।

(२) मुक्तादि चूर्ण—यह सुवर्ण भस्म के समान उपयोग म लाना योग्य है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) राज मृगांक—क्षय रोग की सुप्रसिद्ध महौषध है। क्षय सम्बन्धी सब विकारों में दी जाती है, अनुपान- पीपल और, कालीमिर्चों के चूर्ण के साथ। विषम भाग प्राप्त मधु और घृत में मिला देना योग्य है- अथवा पीपर और कालीमिर्चों की संख्या दोष बलानुसार निर्णीत करले, प्रातः सायं दो समय तो देना ही चाहिये। रोगी सह सके तो अधिकतया ४ बार तक दी जा सकती है। इसका प्रयोग अल्प मात्रा से करे। प्रारम्भिक मात्रा १ रत्ती होना योग्य है। पीछे रोगी के बलानुसार इस की मात्रा बढ़ा देना योग्य है॥

(४) महा मृगांक— (५) हेम गर्भ पोटली (६) रत्न गर्भ पोटली (७) बृः कांचनाभ्र रस आदि भी क्षय रोग की सुप्रसिद्ध महौषध हैं। इन का उपयोग राजमृगांकवत् करना चाहिये। इन की मात्रा ४ चा० से प्रारंभ करना अच्छा है। पर हेम गर्भ पोटली की विधि इस के प्रयोग में देखो॥

(८) बृ० वासावलेह —इस के उपयोग के विषय में लिख चुके हैं॥

(९) च्यवन प्राश- (१०) अमृत प्राशावलेहों का उपयोग बृ० वासावलेह के समान होता है। बृ० वासावलेह की अपेक्षा यह अवलेह कुछ शीघ्र फल दिखाते हैं, यह अवलेह मूत्र कृच्छ्र और प्रमेह को भी अत्यंत लाभ पहुंचाते हैं॥

(११) जीवन्त्यादि घृत- इस के सेवन के विषय में लिख चुके हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१२) सुश्रुतोक्त एलादि घृत--- यह घृत जीवन्त्यादि की अपेक्षा शीघ्र लाभ करता। है इस के सेवन में इतनी विशेषता है कि इसका सेवन कर के दूध अवश्य पीवे। यह दूध का अनुपान जीवन्त्यादि अन्य घृतों में भी करना प्रशस्ततम है, यह स्त्रियों के प्रदर के लिये भी उत्तम है। पुरुषों के प्रमेह को भी लाभ करता है। यक्ष्मा के लिये एक अनन्यतम औषध है। सुश्रुताचार्य इसे केवल प्रातः काल देने को कहा है। मृगांकादि रस इस घृत के अनुपान से सेवन किये जांय तो शीघ्र ही लाभकारी होते हैं॥

(१३) द्राक्षादि घृत— उरः क्षत, कास, श्वास, ज्वर, दाह, पांडु, प्रदर और रक्त पित्त रोगों में इसे सेवन करना योग्य है, यह घृत भी जीवन्त्यादि घृतों की भांति सेवन किया जा सकता है। घृतों में मुक्तादि चूर्ण और सुवर्णभस्म डाल देना भी अच्छा है॥

(१४) द्राक्षारिष्ट (१५) बब्बूलारिष्ट (१६) पिप्पल्यासव—इन के सेवन की विधि लिखी जा चुकी है।

(१७) दशमूलारिष्ट— यह भी धातु पुष्टि करता है। स्त्रियों को भी सेवन कराना योग्य है, क्षयी के ज्वर को शीघ्र निकालता है।

[१८] एलादिगुटिका [१९] तालीसादिगुटिका-- दोनों को मुख में रखने से कास मुख वैरस्य, ज्वर, अरुचि आदि दूर हो जाते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२०] सितोपलादि चूर्ण, [२१] जातीफलादि चूर्ण, [२२] यवानी खाण्डव [२३] चन्दनादि तैल--- इन सब के सेवन की विधि लिखी जा चुकी है ॥

[२४] लाक्षादि तैल---चन्दनादि के समान इस का भी उपयोग है ॥

[२५] अशोकारिष्ट--- इस की भी विधि लिख चुके हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोगावली

आटरूषादिकाथ--अडूसा, सिरस की छाल, असगंध, सोंठ की जड़, इनका काथ क्षयरोग में उस अवस्था में लाभ देता है जब कि खांसी, शरीर में दर्द और किसी स्थान में सूजन हो।

त्रयोदशांग काथ--धनियां, पीपल, सोंठ, दशमूल, इनका काथ पार्श्वशूल, श्वास सुकास और ज्वर को दूर करता है वात और कफ की अधिकता में देना चाहिये।

दशमूलादिकाथ--दशमूल, खिरेटी, रायसन, पोहकरमूल, देवदार मोथा, इनका काथ पसवाड़ा, कन्धा, मस्तिष्क इन के शूल को और उरःक्षत खांसी श्वास को दूर करता है।

बलादि काथ--खिरेटी, विदारीकंद, खम्भारी, सेवती के फूल, सितावर, सांठकीजड़ इन औषधियोंको दूध में औटाकर छानकर और शहत मिलाकर पीने से क्षय शोषादि से दुर्बल रोगी का बल बढ़ता है तथा खांसी को नष्ट करता है।

द्वितीयबलादिकाथ--खिरेटी, दोनों कटेरी की जड़, मुनक्का, अडूसे के पत्ता, इन के काथ में शहद डाल कर और मिश्री डालकर पीने से क्षय जन्य शुष्ककास दूर होता है।

उपरोक्त काथों की औषधियां समान भाग लेनी चाहिये। और १ मात्रा दो तोले की बनानी चाहिये। उसे पावभर पानी में औटाओ जब छटांक भर रहे जब छानना चाहिये। मिश्री शहत जो प्रक्षेप में है इन्हें एक खुराक में चार २ माशे डालने चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्तादि चूर्ण--मोती तोले १, अम्बर ३ माशे, सोने के वर्क ३ माशे, चांदी के वर्क़ ६ माशे, कस्तूरी १॥ माशे, वंसलोचन ६ माशे छोटी इलायची के बीज ३ माशे पीपर के दाने ३ माशे प्रथम मोतियों को गुलाब जल में खरलकर उस में स्वर्ण और चांदी के वर्क खरल करले, पश्चात् सूखने पर अन्य औषधियों को दूसरे खरल में घोटकर मिलाले और ३ रत्ती चूर्ण को १ तोले मक्खन और ४ माशे शहत में मिला कर क्षय रोग की उस अवस्था में देवे जब कि ज्वर की मन्द उष्मा हो रोगी निर्बल हो और कफ की अधिकता हो।

सितोपलादि चूर्ण--मिश्री १६ माशे बंसलोचन ८ माशे पीपर छोटी ४ माशे, छोटी इलायची के दाने २ माशे दालचीनी १ माशे, इन सब को कूट कर चूर्ण बना लेवे, इस में से २ माशे चूर्ण को एक तोले मक्खन और ४ माशे शहत में मिला कर क्षय रोग की उस अवस्था में जब कि शुष्कखांसी, दाह, पाद दाह, ज्वर अथवा अरुचि, हो देवे।

जातीफलादि चूर्ण--जायफल, वायविड़ंग, चीतेकी छाल तगर, तिल, तालीसपत्र, चन्दन सफेद, सोंठ, लोंग, कालाजीरा, भीमसेनीकपूर, हरड़, आंमले, पीपलछोटी, वंसलोचन, दालचीनी, तेजपात, इलायचीछोटी, नागकेशर, यह सब औषधियां तीन २ तोले ले और भांग २८ तोले ले और सब की बराबर मिश्री मिला सब को कूट कपड़ छनकर चूर्ण बनावे। जब क्षयरोगी को दस्त होते हों या भूक न लगती हो अरुचि हो खांसी हो उस अवस्था में २ माशे चूर्ण को ६, ६ माशे शहत में मिलाकर चाटना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यवानी खांडव—अजमोद अनार दाना, सोंठ, ततड़ीक, अमलवेंती, बेर खट्टे ये औषधियां चार२माशे काली मिर्च ढाई माशे, पीपर छोटी १० माशे, दालचीनी, काला नोंन, धनियों, जीरा सफेद, ये प्रत्येक दो दो माशे और मिश्री ६४ माशे ले सब का चूर्ण करले। यह चूर्ण २ माशे जल के साथ, क्षय के साथ जब अरुचि हो, दे।

लवंगादि चूर्ण—लोंग, कंकोल मिर्च, खस, सफेद चन्दन, तगर, कमलगट्टा, काला जीरा, छोटी इलायची काला अगर, नाग केशर, छोटी पीपल, सोंठ, वालछड़, नेत्र वाला, कपूर, जायफल, वंसलोचन. ये सब औषधियां बराबर २ लेवे और सब की आधी मिश्री मिलावे। यह चूर्ण १॥ माशे से २ माशे तक शहत के साथ दे। यह चूर्ण दाह, अरुचि, ज्वर को दूर करता है। वीर्य्य वर्द्धक और जठराग्नि प्रदीपक है।

द्राक्षादि चूर्ण---मुनक्का, खील, मिश्री, मुलेहठी, खजूर, सारिवा, वंसलोचन, नेत्र वाला, आंमले, मोथा, चन्दन सफेद, वालछड़, कंकोल, जायफल, दालचीनी, तेजपात इलायची छोटी, नाग केशर, पीपल छोटी, धनियों ये सब औषधियां समान भाग ले और सब की बराबर मिश्री मिलावे। इस की मात्रा २ माशे से ६ माशे तक है, अनुपान जल व दुग्ध के साथ पित्त, पित्तदाह, मूर्छा, वमन, अरुचि, क्षय, ज्वर, रक्तपित्त, और रक्त विकार के लिये देना चाहिये।

कर्पूरादि चूर्ण—कपूर, दालचीनी, कंकोल, जायफल, तेजपात यह समानभाग लेवे, लोंग १ जटामांसी २ कालीमिर्च ३ पीपल ४ सोंठ ५ भाग ले और सब औषधियों के बराबर मिश्री मिला कपड़ छन कर चूर्ण बनावे इस की मात्रा १ माशे से ३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माशे तक अनुपान शहद व दूध के साथ। यह चूर्ण हृदय को हितकारी, क्षय, कांसी, श्वास और कंठरोग नाशक है।

रास्नादि चूर्ण---रास्ना, कपूर, तालीसपत्र, मजीठ, शिलाजीत, त्रिकुटा, त्रिफला, मोथा, बायविरंग, चीतेकी छाल, ये औषधि समान भागले और लोहभस्म १४ भाग ले सब को कपड़छन कर चूर्ण करले। इस चूर्णकी एक माशे मात्रा शहत माशे ४ और घी माशे ६ में मिला कर क्षय की उस अवस्था में दे जब कि शुष्क खांसी और रोगी बल हीन हो। यकृत, तिल्ली, बढ़ गई हो पेट में दर्द और अग्नि मन्द हो कफ के साथ रक्त जाता हो।

उशीरादि चूर्ण---खस, तगर, सोंठ, कंकोल, चन्दन, दोनों, लोंग, पीपरा मूल, पीपल छोटी, इलायची छोटी, नाग केशर, मोथा, आंवला, कपूर, तवाखीर, तेजपात, काला अगर, ये समान भाग लेवे तथा इन सब का अष्टमांश मिश्री मिलाय चूर्ण करे। यह रक्त वांति (खून की वमन) और हृदय का संताप इन को नष्ट करता है। मात्रा २ माशे से ६ माशे तक अनुपान जल व दूध॥

तालीसादि चूर्ण---तालीसपत्र १ काली मिर्च २ सोंठ ३ पीपल छोटी ४ वंस लोचन ५ दाल चीनी अर्द्ध भाग, इलायची छोटी अर्द्ध भाग और मिश्री ३२ भाग ले चूर्ण करे यह चूर्ण खांसी श्वास, अरुचि, हृदयरोग, शोष, ज्वर कफ नाशक और अग्नि वर्धक है॥

एलादि गुटिका—इलायची छोटी ६ माशे तेजपात ६ माशे दालचीनी ६ माशे मुनक्का और पीपल छोटी दो दो तोले मिश्री ४ तोले मुलेठी ४ तोले खजूर ४ तोले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशमिश ४ तोले इन को पीस कर शहत में गोली झरबेर के बराबर बनावे। इन गोलियों से उरःक्षत, शोष, ज्वर, शुष्क खांसी, तृषा, अरुचि, स्वरभंग ये सब नष्ट होते हैं।

सूर्य्यप्रभा गुटिका—दारुहल्दी, सोंठ, काली मिर्च, पीपल छोटी, वायविडंग, चीतेकीछाल, बच, हल्दी, कंजा, गिलोइ, देवदार, अतीस, निसोथ, कुटकी, धनियों, अजमायन, जवाखार, सुहागो, सेंधानमक, कालानमक, कच-लोना, गजपीपल, चव्य, भिलाये, तालीसपत्र, पीपरामूल, पोहकरमूल, चिरायता, भारंगी, पदमाख, जीरा सफेद, जायफल, कुड़ा की छाल, दंती, मोथा, ये औषधियां एक एक तोला ले और त्रिफला २० तोला शिलाजीत २० तोला गूगुल ३२ तोले लोहभस्म २८ तोले स्वर्ण माक्षिकभस्म ८ तोला मिश्री २० तोला बंसलोचन, दालचीनी, तेजपात इलायची छोटी ये औषधियां चार चार तोले ले, और सब का चूर्ण बना घी, शहत में पीस-गोली झरबेर के बराबर बनावे। जिस रोगी को क्षय के साथ वीर्य्य विकार भी हो उस के लिये यह अतिलाभ दायक है और खांसी उरःक्षत शोष मंदाग्नि को दूर करती हैं।

च्यवनप्राश्यावलेह--शालपर्णी, प्रश्नपर्णी, कटेरी दोनों की जड़, गोखरू की जड़, बेल की जड़ की छाल, अग्निमंथ, श्योनाक, खम्भारी, पाठा, खिरेटी, मुग्दपर्णी, माषपर्णी काकड़ासिंगी, भूमिआमला, मुनक्का, जीवन्ती, पोहकर-मूल, अगर, हरड, गिलोइ जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, कचूर, मोथा, सांठ की जड़, मेदा, इलायची छोटी, कमलगट्टा चन्दन-सफेद, विदारीकंद, बांसे की जड़, काकोली, काकनासा ये प्रत्येक चार चार तोला, आंवले ५०० नग, जल १ द्रोण (१६ सेर) शेषजल एक आढ़क घृत २० तोला, तैल सरसों का २० तोले,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्री २०० तोले, शहत २० तोले, वंसलोचन १६ तोला, पीपल-छोटी ८ तोला दालचीनी, इलायची छोटी, नागकेशर, ये सब ४ तोला लेवे ॥ बनाने की विधि —

प्रथम शालपर्णी से काकनासा तक औषधियों को जौ कुटकर आमले पानी के साथ एक गागर (मटका) में भर कर औटाओ जब चौथाई शेष रहे तब आंमले निकाल अलग रक्खे और दवा में से पानी (क्वाथ) अलग निकाल ले। इन उबाले हुये आंमलों को मथ और गुठली निकाल कपड़ा में छान ले, और घृत, तैल, डाल चीनी की कढ़ाई में आंमले के गूदे को भूनले फिर क्वाथ (जो आंमले के साथ औषधियां औटाई गई थी) में मिश्री डाल चासनी करे जब चासनी होजाये तब वंसलोचन से नाग केशर तक औषधियों को कूट कपड़छन कर मिलादे तथा शहत और भूना आंमले का गूदा डार अवलेह तैयार करे। यह अवलेह एक एक तोले दूध के साथ सब रोग की उस अवस्था में दे जब कि रोगी दुर्बल हो, बात पित्त की खांसी हो, दाह हो, वीर्य्य विकार हो, कफ के साथ रक्त जाता हो, कंठ का स्वर क्षीण होगया हो,।

अमृत प्राश्यावलेह—गाय का दुग्ध, आंमले, विदारीकंद, ईख, और क्षीर वृक्षों का रस एक २ सेर घी, एक सेर, मुलेठी, ईख, मुनक्का, दोनों चन्दन, खस, मिश्री, कमलगट्टा, महुआ के फूल, पदमाख, जवासेकीजड़, खम्भारी, रोहिषतृण, ये सब औषधियां कल्कार्थ डेढ़ २ तोले ले, घृत पाक विधि से घी सिद्ध करले, पीछे इस घी में आध सेर शहत और मिश्री ५ सेर तथा दालचीनी, इलायची छोटी, तेजपात, नाग केशर दो दो तोले को चूर्ण कर मिलाले, इसे अमृतप्राश्यावलेह कहते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक तोले अवलेह दुग्ध के साथ खिलावे। इससे रक्त पित्त, क्षत क्षय, श्वास, खांसी, अरुचि, हिचकी, मूत्रकृच्छ्र और ज्वर दूर होते हैं, और बलवर्धक है।

बृ० वासावलेह—बांसा ४०० तोले को एक द्रोण (१६ सेर) पानी में पकावे चतुर्थांश शेष रहने पर उतार कर छानले। पुनः इस जल में ४०० तोले मिश्री मिलाकर मन्द अग्नि से चासनी अवलेह की करले। और सोंठ, मिर्च कारी, पीपरछोटी, इलायची, दालचीनी, तेजपात, कायफल, मोथा, कूट, जीरे दोनों, निशोथ, पीपरा मूल, चव्य कुटकी, आंमले, तालीसपत्र, धनियां, वंसलोचन, ये सब औषधियां दो २ तोले ले चूर्ण कर मिलाले और शीतल होने पर ३२ तोला शहत मिला कर अवलेह तैयार करे। इस अवलेह को रोगी का बलाबल विचार १ तोले से २ तोले तक गरम (गुनगुने) जल के साथ क्षयरोगी को दे। यह अवलेह उस अवस्था में अति लाभ देता है, जब कि कफ खांसी की अधिकता हो, दस्त साफ न होता हो, और अग्नि मन्द हो।

बलादिघृत—खिरेंटी, गोखरू, कटेरी की जड़, पृष्ठपर्णी, शालपर्णी, नीम की छाल, पित्तपापड़ा, मोथा, त्रायमाण, जवासेकीजड़, बड़ी कटेरी, हरड़, कचूर, मुनक्का, पोहकरमूल, मेदा आंवला ये सब औषधियां दश २ तोले लेकर ८॥ सेर पानी में औटाओ जब २= सेर रहे तब छान कर उसमें दूध गाय का २= सेर और घी १- सेर डाले और भूमि आंवला, कचूर मुनक्का, पोहकरमूल, मेदा, आंमले साढ़े तीन तीन तोले ले कल्क बना घृत सिद्ध करे। इस घृत के सेवन से ज्वर, क्षय, कास शिर और पसवाड़े का दर्द दूर होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवंत्यादिघृत—जीवन्ती, मुलेठी, मुनक्का, इन्द्रजौ, कचूर, पोहकरमूल, कटेरी की जड़, गोखरू, खिरेटी, नीलोफर, भूमिआंवला, त्रायमाण, जवासेकीजड़, पीपलछोटी ये सब औषधियां पांच २ तोला ले चार सेर जल में औटावे जब १ सेर रहे तब छानकर बकरी का दूध २ सेर दही १ सेर घी एक सेर मिलाकर पकावे जब घृतमात्र शेष रहे तब छान कर रक्खे। यह घृत क्षय रोग के ११ उपद्रवों को दूर करता है तथा नस्य लेने से शिर रोग दूर करता है।

कोलाद्य घृत—बेर की लाख का रस १ सेर, घृत एक सेर, दूध आधसेर, और वायविडंग, दारुहल्दी, दालचीनी, अखरोट, खजूर, फालसे, मुनक्का, मुलेठी, पीपल छोटी, ये सब दो २ तोले ले कल्क बनाकर मिला पचावे जब घृत मात्र शेष रहे तब छान कर रक्खे। इस से खांसी कफ के साथ रक्त का आना स्वरभेद, श्वास, ज्वर नष्ट होते हैं।

गोक्षुरादिघृत-गोखरू, जवासो, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, मुद्गपर्णी माषपर्णी, खिरैटी, पित्तपापड़ा, एक एक छटांक पानी ५ सेर में औटाओ। जब आध सेर पानी शेष रहे तब छानकर कचूर, पोहकरमूल, पीपल, त्रायमाण, भूमिआंवला, चिरायता, कुटकी, सारिवा, ये सब एक २ तोला ले। इन औषधियों का कल्क बनावे। और घृत एक सेर दूध २ सेर डाल कर पचावे जब घृत मात्र शेष रहे तब छान कर रक्खे। इस घृत से ज्वर, दाह, श्वास, पसली और मस्तक का शूल आदि सब के उपद्रव दूर होते हैं।

नोट—कोलाद्यघृत में बेर की लाख का रस लिखा है उस के बनाने की विधि यह है कि एक सेर लाख को चार सेर पानी में औटाओ जब १ सेर रहे तब छान लो। और औटाते समय सज्जी, सुहागा लोध दो २ तोले डालना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एलादिघृत—इलायची छोटी, अजमोद, आमले, हरड़, बहेड़ा, खैर, नीम, विजे शाल, (खैर से शाल तक चारों का सार लेना चाहिये सार न मिले तो छाल लेना) वायविड़ंग, भिलाये, चित्रक, त्रिकुटा, मोथा, गोपीचन्दन, ये सब आठ आठ पल ले सोलह गुने जल में पचावे। जब सोलवां भाग शेष रहे तब छान कर एक सेर घी डाल कर पचावे जब घी मात्र शेष रहे तब छान कर २ सेर शहत, छः छटांक बंसलोचन का चूर्ण, और एक सेर चौदह छटांक मिश्री, मिलाकर रई से अच्छी प्रकार मथ कर एक रस करले। यह घी दो तोले दूध के साथ खिलावे इसके सेवन करने से यक्ष्मा रोग दूर होता है। इस से बल, वीर्य्य बढ़ता है। सुश्रुतोक्त यह घृत परम रसायन है।

द्राक्षादिघृत—मुनक्का काली एक सेर, मुलेठी आध सेर, जौ कुट कर ६ सेर पानी में औटाओ जब १॥ सेर रहे छान कर उसमें मुलेठी ४ तोला मुनक्का ४ तोला पीपल छोटी ८ तोला का कल्क बना घी १ सेर दूध ४ सेर डाल पचावे। जब घी मात्र शेष रहे तब छान कर मिश्री आध सेर को पीस कर छने भये घी में मिलावे यह द्राक्षादि घृत क्षय, उरः क्षत, खांसी, कफ नाशक और बल वर्धक है।

छागलाद्यघृत—बकरे का मांस (खस्सी बकरा) ६। सेर १६ सेर जल में पकावे जब ४ सेर बाकी रहे तब एक सेर घी जीवनीयगण की औषधियां छटांक २ भर ले कल्क बना कर, पकावे जब घृत मात्र शेष रहे तब छान कर शहत पाव भर, मिलावे। यथा शक्ति मात्रा देवे। इस से क्षय, उरःक्षत, कास श्वास, पार्श्वशूल, अरुचि, स्वरभंग, हृदयरोग दूर होते हैं जो लोग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलायती मछली का तैल सेवन करना पसन्द करते हैं वे इस आयुर्वेदीय घृत को सेवन करें अनुभव से जानागया है कि यह घृत मछली के तैल से अधिक बल वर्धक और क्षयरोग नाशक है।

चन्दनादि तैल— चन्दन सफेद, नेत्रवाला, नख, कूट, मुलेठी, मजीठ, पद्माख, छार छबीला, खस, देवदार, कायफल गंधेल घास (पूतकेशर) तेजपात, इलायची छोटी, वालछड़, ककोल, फूलप्रयंगु, मोथा, हल्दी, दारुहल्दी, सारिवा दोनों, कुटकी, लोंग, केशर अगर, दालचीनी, रेनुका, ये प्रत्येक तीन २ तोला और दही का तोड़ बीस सेर तैल ५ सेर लाख का रस ५ सेर, सब को एकत्र कर पचावे जब तैल मात्र शेष रहे तब छान ले इस तैल के मर्दन से बल बढ़ता है शरीर कान्तिवान होता है क्षय रक्त पित्त नष्ट होते हैं। धातुओं में प्रविष्ठ हुआ ज्वर बाहर निकलता है।

चन्दनादि तैल—में जो लाख का रस लिखा है वह इस प्रकार बनाना चाहिये कि लाख २॥ सेर सज्जी आधपाव सुहागा आध पाव लोध आध पाव बेरकी पत्ती ऽ= सब को जौकुट कर बीस सेर पानी में औटाओ जब ५ सेर रहे छान लो यही लाख कारस है।

छागलाद्यघृत—में जो जीवनीयगण है उसकी औषधियां यह हैं जीवक, ऋषभक, मेदा, काकोली, मुलेठी माषपर्णी, मुद्गपर्णी, जीवन्ती, जीवक, ऋषभक के अभाव में गिलोइ वंशलोचन मेदा के अभाव में असगंध और काकोली के अभाव में सितावर लेनी चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्व गन्धादि तैल — असगंध, खिरेटी, लाख, ये तीनों एक २ सेर ले जौकुट कर एक द्रोण (१६ सेर) पानी में औटावे। जब चौथाई पानी शेष रहे तब छान कर तैल तिलका १॥ सेर दही का तोड़ ६ सेर और असगंध, हल्दी, दारुहल्दी, रैनुका, कूट, मोथा, चन्दन, देवदार, कुटकी, सितावर, लाख, मूर्वा, पीपरामूल मंजीठ, मुलैठी, खस, सारिवा, ये प्रत्येक औषधियां पौने दो दो तोले ले कल्क बनाकर सब को अग्नि पर रख पचावे जब तैल मात्र शेष रह जावे छानले। इस तैल की मालिश से यक्ष्मा, ज्वर, कास, श्वास, दूर होते हैं धातुओं की वृद्धि होती है।

लक्ष्मी विलास तैल—इलायची, चन्दन, रास्ना, लाख, नख, कपूर, कंकोल, मोथा, खिरेटी, दालचीनी, हल्दी, पीपल छोटी, अगर, तगर, जटामांशी, कूट ये प्रत्येक औषधियां एक २ तोला और काली सर ३ तोला ले, डमरू यन्त्र से तैल निकाल ले। यह तैल सुगंधयुक्त है पान में लगाकर सेवन करने से कफ को दूर कर जठराग्नि को दीप्त करे और शरीर से मालिश करने पर क्षय, बवासीर को नष्ट कर स्त्री पुरुषों में प्रीति उत्पन्न करे।

द्राक्षारिष्ट—मुनक्का २०० तोले ले ३२ सेर पानी में औटावे जब ८ सेर पानी शेष रहे तब छान कर १२॥ सेर गुड़ डाले और दालचीनी, इलायची छोटी, तेजपात, नागकेशर, फूल प्रयंगु, काली मिर्च, पीपर छोटी, वायबिड़ंग, ये आठ औषधियां चार २ तोले डाल कर चिकने बासन में भर मुख बन्द कर एक मास रक्खा रहने दे। १ मास पश्चात साफ़ कर बोतलों में भरले। यह अरिष्ट कफ को निकालने वाला, फेफड़ो को साफ़, और पुष्ट करने वाला, कास नाशक, बल वर्धक, और क्षय नाशक है।

द्राक्षारिष्ट—में अनेक वैद्य धाय के फूल, मुनक्कों से चौथाई भाग डालते हैं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बबूलारिष्ट—बबूल की छाल २ तुला (अर्थात् १२॥ सेर) को जौकुट कर ६४ सेर पानी में औटाओ, जब १६ सेर रहे छान कर १८॥। सेर गुड़ डाले और धाय के फूल ६४ तोले पीपल छोटी ८ तोले, तथा जाय फल, कंकोल, लोंग, इलायची छोटी, दालचीनी, तेजपात नागकेशर, काली मिर्च, ये सब औषधियां चार २ तोले ले। सब को चिकने बासन में भर कर मुख बन्द कर एक मास रक्खा रहने दे। १ मास पश्चात साफ़ कर बोतलों में भरले यह अरिष्ट– कफ को निकालने वाला, दस्त को बांधने वाला कास नाशक है।

दशमूलारिष्ट—दशमूल २०० तोले चीते की छाल १०० तोले पोहकर मूल १०० तोले लोध ८० तोले, गिलोइ ८० तोले, आंमले ६४ तोले, जवासे की जड़ ४८ तोले खैरसार ३२ तोले, बिजेसार ३२ तोले हड़काबक्कल ३२ तोला कूट, मजीठ देवदार, बायबिड़ंग, मुलेठी, भारंगी, कैथ, बहेड़े का बक्कल, सांठीकीजड़, चव्य, बालछड़, प्रियंगु, सारिवा, कालाजीरा, निशोथ, रेनुका, बाय सुरई, पीपलछोटी, सुपारी, कचूर, हल्दी, सोंफ, पदमाख, नागरकेशर, मोथा, इन्द्रजो, काकड़ासिंगी, ये औषधियां आठ २ तोले और अष्टवर्ग ६४ तोले ले, सब को जौ कुटकर अठगुने जल में क्काथ करे जब चतुर्थांश रहे। तब छानले, फिर मुनक्का २५६ तोले ले चौगुने जल में पचावे जब चतुर्थांश शेष रहे तब छान कर ऊपर के क्काथ में मिलादे। और धाय के फूल १२० तो० शीसलचीनी, खस, चन्दन सफेद, जायफल, लोंग दालचीनी, इलायची छोटी, तेजपात, नागकेसर, पीपलछोटी, ये सब आठ आठ तोले और कस्तूरी ४ माशे डालकर चिकने बासन में भर मुख बन्दकर एक महीना धरा रहने दे पश्चात् छानकर निर्मली डाल साफ कर बोतलों में भरले यह अरिष्ट बात प्रधान क्षय के लिये तथा नजला प्रतिश्याय के लिये अति लाभ दायक है तथा बल वर्धक है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांसारिष्ट—बांसे के पत्तों का स्वरस १०० तोला मृतसंजीवनी सुरा १०० तोले मुलेठीकासत्व २ तोला कपूर १ तोला अफीम १ तोला भारंगी १ तोला बहेरेकाबक्कल २ तोला लौंग २ तोला जायफल १ तोला इलायची छोटी २ तोला, मिर्चकारी १ तोला तालीसपत्र २) काकड़ासिंगी १) मिश्री ४० तोला इन सब औषधियों को जौ कुट कर चिकने बासन में भर मुखबन्दकर १ महीना रक्खा रहने दे। पश्चात् छान कर साफ करले यह अरिष्ट बढ़े हुये कफ को नष्ट कर खांसी को दूर करता है तथा क्षय, ज्वर, प्रतिश्याय को नष्ट करता है।

चित्तचन्द्रासव—मोथा, मिर्चकारी, चव्य, चीते की की छाल, हल्दी, बायविडंग, आमरे, खस, छारछबीला, सुपारी, लोध, तेजपात, बर्कतिव्वत, चन्दन सफेद, तगर, बालछड़, देवदार, दारचीनी, गोंदी, नागकेशर, ये प्रत्येक औषधियां आठ २ माशे ले और धायकेफूल ४० तोला मुनक्का ८० तोला गुड़पुराना १५ सेर जल २६ सेर डार चिकने बासन में भर मुख बन्दकर एक मास रक्खा रहने दे पश्चात् छान साफ कर बोतलों में भर रक्खे। यह चित्त चन्द्रासव सिद्धभैषज्यमणिमाला में मुद्रित है और कफ काश क्षय नाशक और बलवर्धक है।

बांसारिष्ट—भैषज्यरत्नावली में लिखा है। किन्तु उस में मृतसंजीवनी सुरा और बांसेकास्व रस आदि २—१- औषधियां हैं पर हमारे औषधालय में उपरोक्त विशेष औषधियों द्वारा बनाया जाता है वही सर्व साधारण के लाभ के लिये प्रकाशित कर दिया है वैद्य महानुभावों से प्रार्थना है कि वह बांसारिष्ट बना अपने रोगियों को दे इस के लाभ को देखें। मृतसंजीवनी सुरा प्रसिद्ध है और भैषज्यरत्नावली आदि ग्रन्थों में मुद्रित है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगांकपोटलीरस—पारा १ भाग स्वर्ण के वर्क १ भाग मोती २ भाग गंधिक शुद्ध २ भाग, सुहागा चौथाई भाग। प्रथम पारा और स्वर्ण के वर्क घोटे जब स्वर्ण के कण न चमकें तब मोती डाल कर घोटे जब खूब बारीक हो जावे तब गंधिक सुहागा डाल कर घोटे और जब सब एक हो जावे तब कांजी डाल दो पहर घोट कर टिकिया बना सुखावे। पश्चात् शराव सम्पुट कर लवण से पूर्ण किये हुये वर्तन के बीच में रख ८ पहर की अग्नि दे स्वांग शीतल होने पर निकाले। यह मृगांक पोटलीरस उस अवस्था में देना चाहिये जब कि क्षय, ज्वर, कास मन्दाग्नि, ग्रहणी, के साथ में निर्वलता अधिक हो। उस समय देने से बड़ा लाभ देता है।

स्वर्णमालतीबसंत—स्वर्ण के वर्क, १ माशा मोती २ माशा काली मिर्च धुली भई ३ माशा शुद्ध सिङ्गरफ ४ माशा खर्पर शुद्ध ८ माशा (अभाव में यशद भस्म) गाय की लोनी ६ माशा सब को खरल कर बारीक करले पश्चात नीबू का रस डाल खरल करे। जब तक गाय की लोनी की चिकनाई नष्ट न हो जावे तब तक नीबू का अर्क डाल घोटता रहे। जब चिकनाई न रहे तब टिकिया बना सुखाले। यह सर्व प्रकार के ज्वर को क्षय को श्वास कफ को नष्ट कर बल बढ़ाती है।

बसंत कुसुमाकर—प्रवालभस्म, रससिन्दूर, मोती, अभ्रक भस्म चार चार माशे, रौप्यभस्म, स्वर्णभस्म, दोदो माशे, लोह-भस्म, नागभस्म, वंगभस्म तीन तीन माशे ले। सब को मिला खरलकर अडूसे के पतोंका स्वरस, हल्दी का क्काथ, ईख का स्वरस

स्वर्णमालती बसंत में आज कल अनेक वैद्य अच्छा व असली खर्पर न मिलने से शुद्ध यशद भस्म डालते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल के फूलों का स्वरस, मालती के फूलों का स्वरस, केला की जड़ का स्वरस, अगर का क्वाथ, चन्दन सफेद का क्वाथ इन औषधियों की अलग २ सात २ भावना देवे। यह बसंत कुसुमाकर रस उस अवस्था में अति लाभ देता है जब कि क्षय के साथ वीर्य्य विकार हो, कास के साथ कफ की अधिकता हो, बलहीन हो।

राजमृगाङ्करस—पारे की भस्म (रससिन्दूर) ३ भाग स्वर्ण भस्म १ भाग ताम्रभस्म १ भाग मनसिल २ भाग शुद्धगंधिक २ भाग हरताल २ भाग सब को बारीक चूर्ण कर पीली बड़ी कौड़ियों में भर, बकरीका दूध और सुहागा पीस कौड़ियों का मुख बन्दकर सुखावे। सुखाने के पश्चात् मट्टी के वर्तन में रख उस का मुख बन्द कर गजपुट में फूंकदे स्वांग शीतल होने पर मट्टी के वर्तन को अलग कर कौड़ियों सहित रस को पीसले यही राजमृगांक रस है। अनुपान कालीमिर्च पीपल, घी, शहद, यह रस कफप्रधान क्षय के लिये अति लाभदायक है।

अमृतेश्वर रस—पारे की भस्म (रस सिन्दूर) गिलोह का सत्व, लोहभस्म, इन तीन औषधियों को समान भाग मिलाने सेही अमृतेश्वर रस बनता है यह रस उस अवस्था में जब कि क्षय के साथ यकृत विकार हो लाभ देता है।

हेमगर्भ पोटली रस—शुद्ध पारा एक तोला स्वर्ण के वर्क ३ माशा गंधिक शुद्ध २॥ तोला ले। कचनार के रस में खरल कर गोला बनाय सराव सम्पुट में बन्दकर कपड़ मिट्टी कर सुखाकर भूधर यन्त्र में पचावे स्वांग शीतल होने पर निकाल उसके समान शु० गंधिक मिला अदरक के स्वरस और चित्रक की जड़

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के क्वाथ में भ बना देकर सुखाकर पीसले फिर पीली बड़ी कौड़ियों में भर सब औषधियोंसे आधा भाग सुहागा और चौथाई भाग सींगिया ले दोनों को थूहर के दूध में पीस कौड़ियों के मुखों को बन्द कर दे। और एक हांडी ले उस में आधा चूना (कलई) भर कौडियों को रख फिर चूना भर हांडी को भर दे और हांडी का मुख बन्दकर गजपुट की अग्नि दे जब शीतल हो जावे तब सावधानी से हांडी में से कौड़ियों को निकाल खरल कर शीशी में भर रखे। यह हेम गर्भ पोटली रस कफ प्रधान ज्वर में दे। हेम गर्भ पोटली रस की सेवन विधि व पथ्य बृ० लोकनाथ रस के समान है।

तथा इस में भी विशेषता यह है कि ३ दिन अधिक निमक न खाय जब इस औषधि से उलटी (वमन) होने लगे तब गिलोइ का क्वाथ शहद डाल के देवे इस से उलटी आना बन्द हो जाती है। कफ का अधिक प्रकोप हो तो शहद और अद्रक का रस मिला कर दे दस्त होने लगें तो भांग को घी में भून दही मिलाकर देवे, तो दस्त बन्द हों। यह रस कफ प्रधान तथा वायु प्रधान ज्वर को नष्टकर अग्नि को प्रदीप्त करता है।

बृ० लोकनाथरस—बुभुक्षित पारा २ भाग शुद्धगंधिक २ भाग ले कज्जली कर पारे से चौगुनी पीली कौड़ियों को ले उस में कज्जली भर दे। और सुहागा १ भागले गौकेदूध में पीस कौड़ियों के मुख को बन्द करदे फिर शंख के टुकड़े ८ भागले और मिट्टी के दो सरवा ले एक में चूना भर के उस के ऊपर शंख के टुकड़ा रख कौड़ी रख ऊपर से फिर शंख के टूक रख फिर चूना दाब २ के भर सरवा ढक कपड़ मिट्टीकर एक हाथ के गड्ढे में आरने कण्डा भर बीच में सम्पुट को रख अग्नि दे। स्वांग शीतल होने पर चूना से कौड़ियों को व शंख को निकाल खरल में घोटकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीशी में भरले । इस शु० लोक नाथरस की मात्रा १ एक रत्ती से ६ रत्ती तक है। १९ कालीमिर्च के चूर्ण में मिला वात प्रधान क्षय में घी के साथ पित्त प्रधान क्षय में मक्खन के साथ और कफ प्रधान क्षय में शहत के साथ, दे। तथा अतिसार, क्षय, अरुचि, संग्रहणी मन्दाग्नि खांसी, श्वास, गोला, इतने रोगों में भी इस रस को दे। इस को सेवन कर घी भात के ३ ग्रास खाय, फिर शय्या पर बिना बिछैया के एकक्षण मात्र चित्त लेट जावे। खट्टे पदार्थ त्याग कर घृत का भोजन करे। तथा उत्तम मीठा दही भोजन में खाय। सायंकाल में जब भूख लगे तब दूध भात खाय। तिल आमले इनका कल्क करके शरीर में मालिश कर के स्नान करे। स्नान को जल सुहाता २ गरम लेवे। तेल का स्पर्श भी न करे। पथ्य से रहे। शुभ दिन शुभ वार पूर्ण तिथि शुक्ल पक्ष और जिस दिन रोगी को अच्छा चन्द्रमा हो उस दिन लोक नाथ रसकी पूजा करे। कन्या को भोजन करा, स्वर्ण आदि का दान दे, लोक नाथ रस का सेवन करे। और विशेष विवरण बृहद्निघंटुरत्नाकर, शारंगधर आदि ग्रन्थों में देखिये।

❀ समाप्त ❀

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
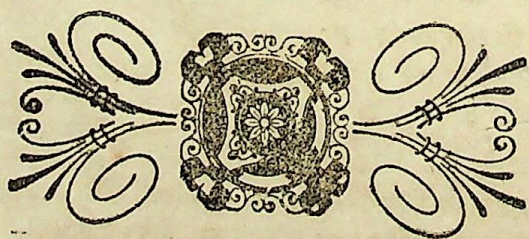
श्रीमान् लाल नारायणदास राधावल्लभ जी वैद्यराज के श्रीधन्वन्तरि औषधालय की
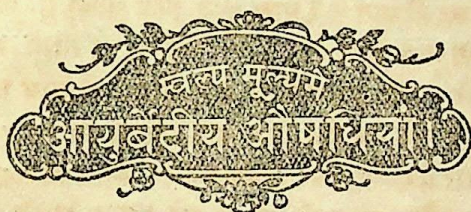
नाम औषधि	तोल		मूल्य
मकरध्वज-स्वर्णघटित षड्गुण बलजारित	१ तोला	...	१५)
स्वर्ण सिन्दूर ...	१ तोला	...	६)
रससिन्दूर ...	२॥ तोला	...	५)
मल्लसिन्दूर ...	१ तोला	...	४)
मृगांकभस्म-(स्वर्ण मोती की मिश्रित भस्म)	६ माशे	...	२५)
स्वर्णभस्म-(पारदयोग से निरूथ)	३ माशे	...	१५)
रौप्य भस्म-पारद योग से ...	१ तोला	...	४)
,, हरिताल योग से कृष्ण वर्ण	२ तोला	...	४)
ताम्रभस्म-पारद योग से	२ तोला	...	२)
,, गंधिक योग से कृष्ण वर्ण	५ तोला	...	१)
गोदन्ती हरिताल भस्म ...	५ तोला	...	१)
लौह भस्म (द्रवयोगेन) ...	५ तोला	...	२)
,, साधारण ...	१० तोला	...	२)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्रक भस्म (शतपुटी)	...	५ तोला	...	५)
,, (२५ पुटी)	...	१० तोला	...	४)
वंगेश्वर-(हरिताल योग से कृष्णवर्ण)		५ तोला	...	३)
वंगभस्म श्वेत	...	१० तोला	...	३)
नागेश्वर-(मनशिल योग से कृष्णवर्ण)-		५ तोला	...	३)
नागभस्म-पीतवर्ण	...	१० तोला	...	२॥)
त्रिवंगभस्म-(नाग, यशद, वंग की मिश्रित भस्म)	...	५ तोला	...	२॥)
स्वर्ण वंगभस्म	...	१ तोला	...	२)
यशदभस्म	...	१ तोला	...	२)
प्रवालभस्म (मूंगाकी भस्म)		५ तोला	...	२)
मांडूर (कीट) भस्म (रक्तवर्ण)		५ तोला	...	१।)
,, कृष्णवर्ण		१० तोला	...	२)
मालतीवसंत-यशदभस्ममिश्रित		१ तोला	...	६)
वसंत कुसुमाकर	...	३ माशे	...	५)
चन्द्रप्रभावटी-(लोहभस्मशिलाजीत मिश्रित)		२०तोला	...	५)
वृ० योगराजगुग्गुल (सतधातुमिश्रित)		२० तोला	...	५)
योगराजगुग्गुल	...	५०० गोली	...	१।)
प्रवाल पंचामृतरस	...	५ तोला	...	१।)

उपरोक्त औषधियों के अतिरिक्त और भी धातु उपधातुओं की भस्म, रस, गुटिका उपरत्न आदि भी तैयार हैं।

अवलेह

चयवनप्राश्य (कास, क्षय, रक्त पित्त,नाशक) १ सेर ... ३)

कुशावलेह, बांसावलेह कूष्मांडावलेह कंटकार्यावलेह आद्र-कावलेह, प्रत्येक तीन २ रुपये सेर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ अरिष्ट और आसव ❀

मृगमदासव (सन्निपात-विशूचिका रोग नाशक)	पावसेर	५)
लोहासव (पांडु-शोथ-गुल्म-आदि नाशक)	दससेर	३)
कर्पूरासव (विशूचिका शूल-आदि नाशक)	१ सेर	५)
अहिफेनासव (प्रवाहिका-अतीसार-विशूचिका आदि नाशक)	पावसेर	३)
कुमारी आसव (गुल्म, स्त्रीयों के ऋतुदोषादि ना०)	पांचसेर	२॥)
कनकासव (कास, श्वास, कफ आदि नाशक)	५ सेर	२)
उशीरासव (रक्त पित्त-क्षय-आदि नाशक)	५ सेर	२)
दशमूलासव (प्रसूतदोष नाशक-बलवर्धक)	२ सेर	३)
चन्दनासव (मूत्रविकार, मूत्रकृच्छ्र-नाशक)	५ सेर	२॥)
वांसारिष्ट-(कास, श्वास, क्षय नाशक)	१ सेर	५)
अशोकारिष्ट(प्रदर-स्त्री रोग नाशक)	५ सेर	३)
सारस्वतारिष्ट-(स्वर्णघटित) मस्तिष्कशक्ति स्मृतिशक्ति वर्धक और वीर्य्य दोष नाशक	आधसेर	५)
द्राक्षारिष्ट (क्षय-कास-रक्तपित्त ज्वर नाशक)	२ सेर	२॥)

उपरोक्त आसव अरिष्टों के अतिरिक्त और भी आसव-अरिष्ट तैयार रहते हैं जैसे अमृतारिष्ट, कुटजारिष्ट, अभयारिष्ट आदि अरिष्ट आसवों के साथ जो बोतलें वा टीन के डिब्बेआदि लगेंगे उन का मूल्य ग्राहकों को प्रथक् देना होगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ तैल और घृत ❀

नारायण तैल-(सर्व प्रकार के वात रोग नाशक) १ सेर ३)
विषगर्भ तैल (वायु विकार नाशक) २ सेर ४)
चन्दनादि तैल (क्षय-कास-ज्वर नाशक १ सेर ३)
मोम का तैल (केवल मोम का प्रसिद्ध तैल) पावसेर २॥)
लाक्षादितैल (जीर्णज्वर, विषम ज्वर नाशक २ सेर ४)
त्रिफलादिघृत (नेत्ररोग नाशक) आधसेर ३)
सारस्वतघृत (बुद्धिवर्धक) आधसेर ४)

उपरोक्त तैलं घृतों के अतिरिक्त और भी तैल तैयार हैं जैसे कुमारी तैल, षड्बिन्दु तैल, किरातादि तैल, मिर्चादितैल, ब्राह्मीघृत, अग्निघृत, धात्रीघृत आदि।

❀ चूर्ण ❀

सुदर्शन चूर्ण (ज्वर नाशक) १ सेर ३)
निम्बादि चूर्ण (ज्वर नाशक) १ सेर ३)
वृ० गंगाधर चूर्ण-(अतीसार-ग्रहणी नाशक) १ सेर २)
जातीफलादि-चूर्ण(क्षय-ग्रहणी आदि नाशक) पावसेर १)
लवण भास्कर चूर्ण(मन्दाग्नि-अजीर्ण आदि ना०) आधसेर २)

उपरोक्त चूर्णों के अतिरिक्त और भी चूर्ण तैयार हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❁ सत्व-क्षार-द्राव ❁
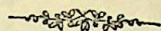
गिलोइ का सत्त	...	५ तोला	...	१)
अपामार्ग क्षार	...	२० तोला	...	१॥)
यवक्षार	...	२० तोला	...	२)
इमली का क्षार	...	२० तोला	...	२)
वज्रक्षार	...	५ तोला	...	१)
संखद्रावः	...	२ तोला	...	२॥)

इन के अतिरिक्त कटेरी, ढाक, आक, तमाखू, तिल, कदली, चित्रक आदि के क्षार तैयार रहते हैं।

☞ बनौषधियां ☜

दशमूल	...	५ सेर	...	७)
माषपर्णी	...	आधसेर	...	१)
ब्रह्मी	...	एक सेर	...	४)
अनन्तमूल (शारिवा)	...	२॥ सेर	...	२॥)

इन के अतिरिक्त और भी बनौषधियां मिलती हैं।

नोट—जिस तौल का मूल्य लिखा है उस से कम थोक भाव में नहीं भेजी जाती हैं।

पता—मैनेजर श्रीधन्वन्तरि औषधालय नं० १५

पो० बिजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमान् ला० नारायणदास राधावल्लभ जी वैद्यराज
सम्पादक आरोग्य सिन्धु की

क्षयगज केशरी–यह क्षय रोग की प्रधान औषधि है। यह अनुपान भेद से क्षयरोग की प्रत्येक अवस्था के लिये अतिलाभदायक है। कफ, खांसी, ज्वर, रक्तस्राव फ़ेफ़ड़े की निर्बलता नाशक और बलवर्धक है।

हम इस की विशेष प्रशंसा न कर क्षय रोगियों से तथा वैद्यों से अनुरोध करते हैं कि इसे व्यवहार में ला इस के चमत्कारिक गुणों की परीक्षा करें।

१५ रोज के सेवन योग्य औषधि का मूल्य ५)

नोट:—औषधि मंगाते समय रोगी के सम्पूर्ण लक्षण (हाल) व्योरेवार लिखिये।

सब प्रकार की औषधियों के मिलने का पता—

बांकेलाल गुप्त।

मैनेजर श्रीधन्वन्तरि औषधालय नं० १५
पोस्ट बिजयगढ़ ज़ि० अलीगढ़।

R55,SHA-C
14117

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
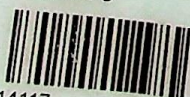
आयुर्वेदीय नवीन पुस्तकें

वेदों में वैद्यक ज्ञान

इसमें ऋक्-यजु और अथर्व वेद से अनेक आयुर्वेदीय मन्त्रों को उद्धृत कर उनका शब्दार्थ और विस्तृत भावार्थ दिया गया है। इसकी प्रशंसा सरस्वती, वैद्यकल्पतरु, सुधानिधि, आर्य्य-मित्र, बंगवासी, आदि पत्रोंने मुक्तकण्ठ से की है मूल्य ॥)

शरीर रचना (अस्थियां)

इसमें अस्थियोंका प्राचीन और नवीन मत से सविस्तार वर्णन है। अस्थियोंका भेद, प्रत्येक अङ्गको प्रथक् प्रथक् और सम्पूर्ण शरीर की अस्थि गणना और नाम वर्णित है। आयुर्वेदीय मत से क्यों अधिक अस्थियाँ मानी जाती हैं ? डाक्टरों के मत से वास्तव में कितनी अस्थियाँ हैं इत्यादि प्रश्नोंका विवेचन किया गया है। अस्थि सम्बन्धी चित्र दे और भी उपयोगी बना दिया है। वैद्यों को अवश्य देखना चाहिये मूल्य ॥) प्रति

तिल्ली (प्लीहा)

इसमें तिल्ली सम्बन्धी सबही विषयों का समावेश है। जैसे तिल्ली क्या है ? शरीर के कौन से अङ्गमें है ? तिल्ली का क्या कार्य्य है ? इसकी कौन कौन शक्तियां हैं ? तिल्ली के विगड़ने से कौन कौन रोग उत्पन्न होते हैं ? तिल्ली की चिकित्सा क्या है ? मूल्य ॥) प्रति

पता—मैनेजर श्रीधन्वन्तरि पुस्तकालय

विजयगढ़ जिला अलीगढ़।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar